ॐ

परमात्माने नमः

गुरु गुण-संभारणा (संस्मरण)

(प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चंपाबहन के श्रीमुख से प्रवाहित गुरु-भक्ति)

संकलन कर्ता :
स्व. प्राणलाल पुरुषोत्तमदास कामदार, दादर, मुंबई
श्री नेमचंद हरीलाल शाह, घाटकोपर, मुंबई

हिन्दी अनुवाद :
एक मुमुक्षु, भावनगर

प्रकाशक
वीतराग सत् साहित्य प्रसारक ट्रस्ट
भावनगर

 प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान :

वीतराग सत् साहित्य प्रसारक ट्रस्ट / श्री सत्सुख प्रभावक ट्रस्ट
५८०, जूनी माणेकवाड़ी,
भावनगर-३६४००१
फोन : (०२७८) ४२३२०७ / २१५१००५

 गुरु गौरव

श्री कुन्दकुन्दकहान जैन साहित्य केन्द्र,
पूज्य सोगानीजी मार्ग, सोनगढ़

 श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान जैन ट्रस्ट

विमलांचल, हरिनगर, अलीगढ़
फोन : (०५७१) ४१००१०/११/१२

 श्री खीमजीभाई गंगर (मुंबई) : (०२२) २६१६१५९१
श्री डोलरभाई हेमाणी (कोलकाटा) : (०३३) २४७५२६९७
अमी अग्रवाल (अहमदाबाद) : (०७९) R-२५४५०४९२, ९३७७१४८९६३

प्रथम आवृत्ति : प्रत : १०००, द्वितीयावृत्ति : प्रत : १०००, ८-१२-०५
तृतीयावृत्ति : प्रत : ५००, (कुंदकुंदाचार्य आचार्य पदवी दिन, ३१-१२-०७
पृष्ठ संख्या : ८ + १३२ = १४०
लागत मूल्य : २५/-
बिक्री मूल्य : २०/-

टाईप सेटिंग :
पूजा इम्प्रेशन्स
प्लोट नं. १९२४-बी,
६, शान्तिनाथ बंगलोझ
शशीप्रभु मार्ग, रुपाणी सर्कल के पास
भावनगर-३६४००१
फोन : (०२७८) २५६१७४९

मुद्रक :
भगवती ऑफसेट
१५/सी, बंसीधर मिल कंपाउन्ड
बारडोलपूरा,
अहमदाबाद
फोन : ९८२५३२६२०२

प्रकाशकीय

यह **'गुरु-गुण-संभारणां'** का तृतीयावृत्ति हिन्दी संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है।

पाठक वर्ग को इस प्रस्तुत अनूठे ग्रंथ में संकलित विषय का परिचय संपादकीय निवेदनमें से सविगत मिल जायेगा इसलिये इस विषय में यहाँ पर कुछ विशेष लिखना आवश्यक नहीं है। तथापि यह उल्लेखनीय है कि, प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चंपाबहन के मुखारविन्द से, हम सब के परम उपकारी अध्यात्ममूर्ति परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति अनन्य भक्ति स्फूरित हुई, वह अनुपम है और उनके हृदय को प्रतिबिंबित करती है।

प्रस्तुत संकलन में पूज्य बहिनश्री के श्रीमुख से मुखरित श्रीगुरु के प्रति अप्रतिम भक्ति में जो आध्यात्मिक गहन तत्त्व सन्निहित है, उसका यदि स्वहितार्थ वारंवार अवगाहन-निदिध्यासन किया जाये तो वह मुमुक्षुजीवों के लिये उपकारभूत होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। अतः ऐसी भक्ति को, इस भक्ति के कर्ता को और जिनके प्रति यह भक्ति स्फूरित हुई है उनको हम कोटि कोटि नमस्कार करते हैं।

यह ग्रंथ एक मूल गुजराती भाषा की अत्यंत भावात्मक कृति होने से इसके हिन्दी अनुवाद में भावों की अभिव्यक्ति में जो भी क्षति रह गई हो तो इसके लिये शुद्ध अंतःकरण से हम वीतराग देव, गुरु, शास्त्र की एवं पाठकवर्ग की क्षमा चाहते हैं।

अंततः यह अनूठा संकलन जिन्होंने किया ऐसे स्व. प्राणलालभाई पी. कामदार और श्री नेमचंदभाई एच. शाह के हम हृदय से आभारी हैं। साथ-साथ ग्रंथ के मुद्रण कार्य के लिये मे. भगवती ओफसेट के एवं टाईप सेटिंग के लिये पूजा इम्प्रेशन्स के हम आभारी हैं।

दि. ३१-१२-२००७
(**कुंदकुंदाचार्य आचार्य पदवी दिन**)

ट्रस्टीगण
वीतराग सत् साहित्य प्रसारक ट्रस्ट
भावनगर

श्री वीतरागाय नमः

संपादकीय निवेदन

परमउपकारी परम पूज्य सद्‌गुरुदेवश्री कानजीस्वामी जैन जगत के अनुपम तेजस्वी सितारे थे। ४५-४५ वर्षों तक सौराष्ट्र की धरती पर स्वर्णपुरी (सोनगढ़) पावन तीर्थधाम में प्रवचन-चर्चादि द्वारा उन्होंने परम तीर्थंकर भगवान महावीर से प्रवर्तमान जैनशासन के महासमर्थ कुंदकुंदाचार्य द्वारा रचित समयसार आदि महान परमागमों में एवं अन्य आचार्यों द्वारा रचित सत् शास्त्रों में निर्दिष्ट वस्तुस्वरूप के गहरे रहस्यों को जगत समक्ष प्रगट किये हैं। उनकी अध्यात्म अनुभवसभर वाणी ने समग्र जैनजगत को सुषुप्त दशामें से जागृत करके, एक नये अध्यात्मयुग का प्रारंभ किया। जैसे कि भावि तीर्थंकर के लक्षण यहीं से झलकने लगे। उनके इस प्रवाह में लाखों की तादाद में जीवों भारत में एवं विदेशमें से आकर्षित हुए। उपरांत अन्यमति भी उनकी न्यायपूर्ण, तर्कबद्ध फिर भी सीधी-सरल वाणी से आकर्षित हुए और जीवन को अध्यात्ममय बनाने में प्रयत्नशील हुए। इस तरह एक नये मुमुक्षुसमाज का सर्जन हुआ। उनका प्रभाव अद्‌भुत विस्तार को प्राप्त हुआ। सारा आध्यात्मिक समाज सदा ही उनका ऋणी है और रहेगा। समाज में उनके प्रति अनेकविध प्रकार से ऋण व्यक्त करने के प्रयास हुए हैं और होते रहेंगे।

उनकी देशना द्वारा स्वानुभूतिप्राप्त प्रशममूर्ति भगवती पूज्य बहिनश्री चंपाबहन, कि जिनको सातिशय जातिस्मरणज्ञान था, जिस कारण से पूज्य गुरुदेवश्री के भावि तीर्थंकरत्व आदि की प्रसिद्धि हुई। १९ वर्ष की लघु वय में स्वानुभूति प्राप्त करके अंतर में साधना के वृद्धिगत परिणाम से जीवन व्यतीत किया। वे अतिशय वैराग्यवान और अदम्य पुरुषार्थी थे। सहजभाव से पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति उन्हें कोई अपूर्व भक्तिभाव था। उनकी भक्ति वह उनका अविभाज्य अंग था। अति नम्रभाव से वे कहते थे कि, आत्मा शब्द यदि बोलना सीखे हो तो

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रताप से, हम तो उनके दासानुदास हैं। भवांत जिनका निश्चित है ऐसे पूज्य बहिनश्री की स्वानुभूति की गहराई के लिये शब्द कम पड़ते हैं, फिर भी वे पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति अत्यंत विनम्र थे। सातिशय जातिस्मरणज्ञान, गहरा आध्यात्मिक एवं बाह्य क्षयोपशम, स्वानुभूति में अधिकता, समाज में लोकप्रियता और पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा बहुत प्रशंसा इतना कुछ होने पर भी, उनमें किसी भी प्रकार का मान या अधिकता दिखे ही नहीं इतने तो वे निर्मानी एवं वैराग्यवंत थे। धीर, गंभीर, प्रशांत मुद्राधारी, अल्प फिर भी वे मृदुभाषी थे। एक आदर्श मुक्तिगामी मोक्षमार्गी थे। उन्हें बाह्यसंग रुचता नहीं था, एकांतप्रिय होने पर भी क्वचित् समीपवासी ब्र. बहनों के साथ अल्प समय चर्चा-वार्ताएं चल जाती थी। तब वे खुल्ले हृदय से अपने भावों को व्यक्त करते थे और उस समय उसमें पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति उनके अंतर में जो भक्ति का समुद्र उछलता था उसकी लहरें बाहर आ जाती थी। टेप और हाथनोंध द्वारा ब्र. बहनें उसे लिख लेती थी। उनमें से पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति उनकी अभिव्यक्तियों का आंशिक संकलन करने का यह एक विनम्र प्रयास किया है। इसमें अनेक प्रकार से पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति उपकारव्यक्तता, गुणानुवाद आदि पूज्य बहिनश्री के हृदयमें से प्रवाहित हुए हैं, जिसका कोई अनोखा प्रभाव है। यथार्थरूप से तो 'ज्ञानी का हृदय ज्ञानी ही जाने' इस न्याय से इसका रसास्वादन कर्तव्य है। हमारे हृदय में वह कोई अलग ही उर्मियाँ खड़ी करता है। हमें जाने-अनजाने में सहजरूप से अध्यात्म की ओर आकर्षित करता हैं। इनमें रही तात्त्विक भावना हमारे परम हित के लिये कोई नई दिशा ही खोलती है। हम उसका रसास्वादन करें, भक्तिरस में समर्पित हो जाये और परम हित कर लें।

अहो ! अहो ! श्री सद्‌गुरु, करुणासिंधु अपार,
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो ! अहो ! उपकार।

शुं प्रभु चरण कने धरुं, आत्माथी सौ हीन,
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तु चरणाधीन।

इस संकलन के लिये हम परम उपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के एवं प्रशममूर्ति पूज्य भगवती बहिनश्री चंपाबहन के अत्यंत-असीम ऋणी हैं। इस भक्तिरस को लिपिबद्ध करने के लिये ब्र. बहिनों को धन्यवाद और हमें संकलन के लिये दिया, इसलिये उनके अत्यंत ऋणी हैं। इस कार्य में प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूप से सहायक सभी मुमुक्षुओं के हम अत्यंत आभारी हैं।

इस संकलन में हमारी अल्पमति या अल्पभक्तिवशात् जो कुछ क्षति रह गयी हो उसके लिये हम क्षमा चाहते हैं। पाठक वर्ग को क्षतिनिवारणार्थ सहयोग देने की प्रार्थना करते हैं।

लि.
स्व. प्राणलाल पुरुषोत्तमदास कामदार
तथा नेमचंद हरिलाल शाह के नम्रभाव
से जय सद्गुरु वंदन।

विषय प्रवेश

'गुरु-गुण-संभारणां' - यह ग्रंथ गुरु-भक्ति का एक अनोखा ग्रंथ है। किसी भी मुमुक्षुजीव को सच्चे आत्मभाव से ज्ञानीपुरुष का प्रत्यक्ष समागम मिले और जिसके फलस्वरूप ज्ञानदशा की प्राप्ति हो, तब अपने सद्‌गुरुदेव के प्रति जो अमाप भक्ति के परिणाम उठते हैं कि, जो वास्तविकरूप से तो उस दशा में ही अनुभवगम्य है और वह अनुभव वचन अगोचर है - तथापि उस भावविभोर दशामें से प्रवाहित हुए वचन भी तात्त्विक दृष्टि से अध्यात्म के रहस्यमय भावों को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार का बहुत-सा रहस्य इस ग्रंथ में प्रकाशित हुआ है।

परम कृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रजी लिखते हैं कि, ज्ञानी का चाहे जैसा आचरण भी वंदनीय ही है - (पत्रांक-२७२)। प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चंपाबहन के श्रीमुख से प्रवाहित हुए अलौकिक भक्तिभाव से भरे वचन भी उक्त वचनामृत को चरितार्थ करते हुए यहाँ मालूम पड़ते हैं। ज्ञानादशा में भी भक्ति सहित निकले उपकारवचनों का मुमुक्षुजीव को आत्म-हितार्थ स्वाध्याय कर्तव्य है। और सद्‌गुरुदेव के प्रति भक्ति एवं आश्रयभावना की प्रेरणा प्राप्त करने योग्य है। यद्यपि ज्ञानी भक्ति नहीं चाहते तथापि आत्म-भाव में परिणमनशील ज्ञानीपुरुष की पहचान होने पर जो सिर्फ ज्ञानीपुरुष को ही भजता है वह अवश्य वैसा बनता है। इस सिद्धांत का रहस्य इस ग्रंथ के वचनों में प्रगटरूप से प्रकाशित हुआ है।

श्रीगुरु की विद्यमानता में छोटे-मोटे सभी प्रसंगो में प्रत्यक्ष विद्यमानता का महत्त्व प्रकाशित हो, यह इस ग्रंथ का विषय है। श्री गुरु माने **'सर्वस्व'**, ऐसा भाव उनके प्रत्येक वचन में उद्‌घोषित हुआ है। ऐसे श्रीगुरु के विरह की वेदना भी अलौकिकरूप से इन वचनामृतों

में प्रकाशित हुई है। और वह भी मुमुक्षुजीव को प्रत्यक्ष ज्ञानीपुरुष के योग के महत्व संबंधित बोध दे जाती है।

यह ग्रंथ गद्यात्मक होने पर भी वास्तव में गुरु-भक्ति का एक अनूठा काव्य है। जिसे मुमुक्षुजीव को हृदयंगम करने योग्य है। ज्ञानी महात्मा की पहचानपूर्वक उत्पन्न हुई भक्ति ज्ञान की पर्याय है, जो मुमुक्षुजीव को भावि उत्पन्न होनेवाले आत्मज्ञान के बीजज्ञानरूप उत्पन्न होती है। इस दृष्टिकोण को साध्य करके निज-हितार्थ इस ग्रंथ का स्वाध्याय कर्तव्य है, जिससे कि दर्शनमोह का अनुभाग कम हो और वह उपशम के योग्य बने। प्रथम उपशम सम्यग्दर्शन होने का यह सुगम व सरल उपाय है। मुमुक्षु-भूमिका में निर्मलता इसके अलावा दूसरे प्रकार से नहीं आ सकती - ऐसा निर्देश इस ग्रंथ के वचनामृतों से प्राप्त होता है।

अंततः इस ग्रंथ के वचनामृत आत्मकल्याण में निमित्तभूत होवे, यही भावना।

- श्री शशीकान्त शेठ

ॐ

परमात्मने नमः

गुरु-गुण-सँभारणा

हे परमकृपालु गुरुदेव ! आप के गुणों की क्या महिमा करूँ ! आप के उपकारों का क्या वर्णन करूँ ! असली स्वरूप के ज्ञान के दातार अपूर्व महिमा के धारक श्री गुरुदेव के चरणकमल की सेवा-भक्ति निरंतर हृदय में बसी रहे, परम-परम-उपकारी श्री गुरुदेव के चरणकमल में इस सेवक के वारंवार भावभीगी भक्ति से कोटि कोटि वंदन हो, नमस्कार हो।

- पूज्य बहिनश्री

गुरुदेव जगत में सर्वोत्कृष्ट थे, उत्तमोत्तम वस्तु आ गई। जगत में सब से सर्वोत्कृष्ट जिनेन्द्र भगवान हैं। जिनकी बात इन्द्रों - गणधरों, देवेन्द्रों, राजेन्द्रों - कोई नहीं कर सकते। देवों स्तुति करते हुए थकते नहीं परंतु भगवान की सब बात नहीं कर सकते, गुणानुवाद करते हुए थकते हैं। गुरुदेव के भवों की तो बात कहाँ से हो ! वर्तमान बात भी करने की शक्ति नहीं है। देव भी जो नहीं कर सकते वह हमारे जैसे कैसे कर सकते हैं ! भरतक्षेत्र में महापुरुष

का उद्योत हुआ, उनकी बातें व गुणानुवाद कौन कर सके ! पूज्य गुरुदेव ने प्रभावना की, वह बात करना भी अशक्य है। ४५ साल, उसके महीने, दिन, क्षण - पल सब उत्तम होते हैं। उसकी बात करने बैठें तो भी पूरी नहीं होती। १.

शुद्धात्मा को पहचानो, अंदर शुद्धात्मा है। विकल्प टूटकर निर्विकल्पता होती है। शुद्धोपयोग होना, वह धर्म है। अन्य में धर्म नहीं है। शुद्धस्वरूप में ठहर जा। आत्मा में ठहरना, वह धर्म है, इसके बिना धर्म नहीं है। शुभ से बंध होता है, वह धर्म नहीं है।

मुनिदशा कोई वेष नहीं। मुनियों क्षण-क्षण में अंतर में झूलते हैं। अंतर में निर्विकल्पदशा होती है। मुनियों प्रमत्त - अप्रमत्त में झूलते हैं।

यह किसने बताया ? यह किसने सिखाया ? यह कौन कहते हैं ? ऐसा कौन निकालते हैं ? ऐसे शास्त्रों के अर्थ कौन कर सकते हैं ? यह गुरुदेव ने ही बताया है। उनके बिना ऐसे अर्थ कौन कह सके ? सब गुरुदेव का प्रताप है। सिर्फ बोलने ख़ातिर नहीं, मेरा तो हृदय ही यह है। २.

पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी तो तीर्थंकर भगवान की दिव्यध्वनि जैसी महामंगलकारी, आनंद उपजानेवाली थी। ऐसी वाणी का श्रवण जिनको हुआ वे सब भाग्यशाली हैं। पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी और पूज्य गुरुदेवश्री तो इस काल के एक अचंभा थे। बाहरी अभ्यास तो जीव को अनादि से है परंतु चैतन्य का अभ्यास तो इस काल में पूज्य गुरुदेवश्री ने बहुत सालों तक करवाया है। उनकी वाणी रसात्मक - कसदार थी। उनके अंतर में श्रुत की धारा और उनकी

वाणीमें भी श्रुत की गंगा बहती थी। उनकी महा आश्चर्यकारी मुखमुद्रा - शांतरस बरसाती, उनके नयन उपशमरस भरपूर। अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री तो भरत(क्षेत्र) के सौभाग्य थे, भरतक्षेत्र भाग्यशाली कि पूज्य गुरुदेव विदेह से सीधे यहाँ पधारे। सौराष्ट्र भाग्यशाली, जैनसमाज महाभाग्यशाली। पूज्य गुरुदेवश्री ने सच्चा जिनशासन स्वयं ने प्रगट किया। प्रसिद्धरूप से समझाया। और ऐसा काल तो कभी ही आता है। अहो ! इस सोनगढ़ में तो ४५-४५ साल तक मूसलधार बारिश की माफ़िक मिथ्यात्व के जमे हुए चिकने सेवार जैसे पापभाव को उखेडने के लिये तेज हवा की माफ़िक पूज्य गुरुदेवश्री ने सम्यक्श्रुत की प्रभावना की थी। उनकी कृपा हमलोगों पर सदैव रहती थी। हम तो उनके दास हैं, अरे ! दास तो क्या ? दासानुदास ही हैं। ३.

अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री ने तो समग्र भरत(क्षेत्र) को जागृत कर दिया है। उनका तो इस क्षेत्र के सर्व जीवों पर अमाप उपकार है। अनंत-अनंत उपकार है, पूज्य गुरुदेवश्री का द्रव्य तो अनादि मंगलरूप तीर्थंकर का द्रव्य था। इतना ही नहीं उन्हें वाणी का अद्भूत - अनुपम और अपूर्व योग था। पूज्य गुरुदेवश्री अनुपम द्रव्य थे। अपूर्वता के दातार - उनकी वाणी सुननेवाले पात्र जीवों को अंतर से अपूर्वता भासित हुए बिना नहीं रहती। उपादान सबका अपना - अपना लेकिन उनका निमित्तत्त्व प्रबल से प्रबल था। उन्हें सुननेवाले को अपूर्वता भासित हुए बिना रहे ही नहीं। उनकी वाणी में ऐसा अतिशय था कि, उन्हें सुननेवाला कोई भी जीव कभी भी नीरस होकर उनका वक्तव्य सुनते हुए छोड़ दे ऐसा नहीं बनता। ऐसा परम कल्याणकारी मूसलधार उपदेश था। ४.

गुरुदेव का जितना करें उतना कम है। चाहे जितना भी करें किन्तु कम है। जो भी करें भाव से करना है, सब भाव से करते हैं।

``शुं प्रभु चरण कने धरुँ, आत्माथी सौ हीन'' प्रभु के चरणकमल में क्या धरुँ ? आत्मा से सब कम है। उनके चरणों के अधीन रहते हैं। मन-वचन-काया से उनके चरणों में अर्पणता करें। तन-मन-धन से जो कुछ भी करें, कम है।

हे प्रभु ! आपके गुणों का गुणगान कौन कर सकता है ! आपकी भक्ति में कैसे करुँ !

इन्द्रों कहते हैं कि प्रभु ! मैं आपके गुण-गान गा नहीं सकता। वैसे पूज्य गुरुदेव ने जो किया है उसे भाषा में या वाणी में कहना मुश्किल है। गुरुदेव ने ज़गह - ज़गह यात्राएँ, प्रतिष्ठाएँ और अपूर्व तत्त्व बरसाया है, जिसके आगे सब कम है। गुरुदेव का द्रव्य मंगल था। उनके चैतन्य की मंगल प्रभा चारों दिशा में फैल रही थी, पूज्य गुरुदेवश्री (चले) गये लेकिन अपनी मंगलता यहाँ छोड़ते गये हैं। वाणी में उनकी मंगल प्रभा रह गई ! उनकी वाणी में देशनालब्धि थी। उनकी मंगल प्रभा जहाँ फैली हुई हो, ऐसा मिलना मुश्किल है। ५.

गुरुदेव यहाँ बिराजमान हैं ऐसा मानना। बहुत सालों तक यहाँ बिराजमान रहे हैं। यहाँ के रजकण पुकार कर रहे हैं। यहाँ उनकी वाणी है। बीच में थोड़ा काल गुरु के वियोग का आ गया। उसकी पूर्ति होकर (यह) पूरा हो जायेगा।

गुरुदेव हाथ में आ गये, अब नहीं छूटेंगे। बाहरी समीपता भीतर की समीपता को पुकार कर रही है। चैतन्य-चैतन्य की पुकार -

गुरुदेव की पुकार चैतन्य के समीप ले जाती है। जिसने चैतन्य के संस्कार अंदर ग्रहण किये हैं, चैतन्य का सिंचन गहराई से करके गये हैं, उस सिंचन की पुकार अंदर से जवाब दिये बिना रहेगी नहीं।

गुरुदेव ने एक-दो दिन नहीं, बरसों तक निरंतर सिंचन किया है कि चैतन्य की बाड़ी सूख नहीं जाये। बाड़ी भीगी - रसयुक्त है वह बाड़ी सूख नहीं जाये बल्कि खिल उठे। जिसने अंदर से ग्रहण किया हो उसे बाहर से पानी नहीं मिलने पर भी वह अंदर से सूखेगी नहीं।

ऐसे गुरु मिले, चैतन्य की अपूर्वता बताई, यह अपूर्वता ग्रहण होवे तो शिष्य होने के पश्चात् भूल कैसे रह जाय ? सच्चा दास हो, (तो) उसे अपूर्वता लगती है। उनके चरण में मन-वचन-काया से जिसने अर्पणता की है वह सच्चा दास है, वह मार्ग पर चले बिना रहेगा नहीं। (रह सकेगा नहीं) ``शुं प्रभु चरण कने धरुँ...'' अर्पणता होने पर तैयारी हुए बिना नहीं रहती। सच्चा दासत्व उसे कहा जाता है कि गुरु मिलने के बाद भव रहे नहीं, (रह सके नहीं)। ६.

✻

अब रोज़ सुबह पूज्य गुरुदेव की टेप बजती है। ``मैं ही परमात्मा हूँ.... मैं ही परमात्मा हूँ...'' यह जब सुनते हैं तो ऐसा ही लगता है कि, गुरुदेव हररोज़ आकर गगन में वाणी बरसाते जाते हैं - ऐसा लगता है। ७.

✻

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन में त्रिकाली ध्रुव की परम पारिणामिक भाव की धुन कोई गज़ब की थी। उसकी महिमा बहुत गाते थे।

पारिणामिकभाव - वह उदयरूप या उपशमरूप या क्षायिक या क्षयोपशमरूप पर्याय से अगोचर, सब से - अगोचर है, सूक्ष्म है, अनादिकाल से जीव परिभ्रमण कर रहा है फिर भी अपने पारिणामिकभावरूप स्वभाव को एक समयमात्र भी नहीं छोड़ा। उसका सहज ज्ञान, सहज दर्शन अनादि - अनंत है, उसमें सब भरा पड़ा है। ऐसी स्पष्टता किससे हो सकती है ? परम पारिणामिकभाव है वह पूजनीय है, वह ऐसा सूचित करता है कि, अहो ! द्रव्य की ऐसी शक्ति सदा है। जीवों की दृष्टि अनादि से उदयभाव पर होने से इसके प्रति लक्ष्य नहीं जाता। ज्ञायकभाव कहो, त्रिकाली ध्रुव कहो, पारिणामिकभाव कहो, कारणशुद्धपर्याय कहो, वह सब एक ही है। उसकी अलग से दृष्टि नहीं करनी पड़ती। कारणशुद्धपर्याय गंभीर है, सूक्ष्म है, तत्त्व के साथ वह गुथी हुई है, पूजनीय है। यह तो पूज्य गुरुदेवश्री ने स्पष्ट किया, वरना हमारी तो उसमें कहाँ चोंच डूबे ऐसा था। वे तो जब भी कुछ कहते, वह जैसे नया-नया ही लगे। अंदर से घोल-घोलकर तत्त्व की स्पष्टता करते ही रहते। कितने प्रमोद से उछल-उछलकर समझाते हैं। उनकी श्रुत की धारा ही कोई अलग प्रकार की है। जैसे कोई बड़े आचार्य उपदेश देते हों वैसे दृष्टि के विषय का अपूर्व खुलासा होता था। ८.

आचार्य के प्रत्येक शब्द में उन्हें अत्यंत गंभीरता व गहनता लगती थी। एक शब्द के पीछे क्या कारण है, वैसे कारण खोजकर उसका अर्थ स्पष्ट करते थे। सभी शास्त्रों के अर्थ को स्पष्ट करने की उनकी सूक्ष्मता, अंतरदृष्टि करके वैसे अर्थ करने की शक्ति ही कहाँ किसी में थी ? अध्यात्म में अर्थ करने की उनकी शैली

ही कोई अलग थी। प्रमाण, नय, स्याद्‌वाद इत्यादिक जो शास्त्र की कठिन कथनशैली, उसे समझना उनके प्रताप से जीवों को सरल हो गया। सब अंतर खोलकर कहते थे। अभी जो शास्त्रों को समझना सरल हो गया है वह सब पूज्य गुरुदेव का प्रताप है। किसी को समयसार के ऐसे अध्यात्म के अर्थ करना कहाँ आता था। सभी दृष्टांत आत्मा पर उतारते थे। अध्यात्म की उनकी शैली ही कोई अलग ! अद्‌भुत शैली। वे उसमें एकदम भावविभोर हो जाते थे। ९.

✻

यह सोनगढ़ सबों का है, सब एक ही गुरु के भक्त हैं। १०

✻

यह तो अभी साक्षात् जीवंत तीर्थ है। गुरुदेव की वाणी टेप में गूँज रही है। तीर्थों में जाते हैं तो वहाँ दूसरा क्या होता है ! यहाँ तो गुरुदेव की वाणी की गुंजार ताज़ा है, वाणी गूँजना रही है। उनके चरणों का स्मरण ताज़ा है। जैसे मानो जीवंत मूर्ति साक्षात् बिराजमान हो ! ऐसा अभी भी हृदय में लगता है। हृदय को यदि पलटा दे तो गुरुदेव विहार में गये हैं ऐसा ही लगे। इस पंचमकाल में यहाँ भरतक्षेत्र में ऐसे महापुरुष कहाँ से ! गुरुदेव चले गये यह तो बड़ी बात बन गई। गुरुदेव जैसा कोई है ही नहीं। ११.

✻

पूज्य गुरुदेव की श्रुत की धारा बरस रही है। लोगों का बड़ा समुदाय इस दिव्य वाणी को सुनने इकट्ठा होता है। घर-घर में लोग आत्मा की चर्चा करते हैं। ये सब चमत्कारिक लगता है ! ऐसा तत्त्व कहनेवाले पुरुष कौन हैं ? एक पुरुष हैं पूज्य गुरुदेवश्री ! १२.

✻

पूज्य गुरुदेवश्री द्रव्य-दृष्टि की बात कितनी निःशंकता से ज़ोरदार करते हैं। इससे उनका तीर्थंकर द्रव्य निश्चित होता है। वर्तमान में कितना प्रभाव दिखता है। द्रव्यदृष्टि का विषय आने पर उछल पड़ते हैं। १३.

✤

पूज्य गुरुदेव के प्रताप से जीवन का पलटा हुआ। चैतन्यमय जीवन की चाहना थी, वह हुआ। पूज्य गुरुदेव के प्रताप से मार्ग मिला। इसीसे धारा चलती है, वरना धारा कैसे चले ! पूज्य गुरुदेव ने चैतन्य का जीवन दिया। अंधेरेमें से प्रकाश में लाये। आत्मा के निष्क्रिय स्वभाव की दृष्टि हुई यह सब गुरुदेव का प्रताप है। १४.

✤

पूज्य गुरुदेव पधारें कि सब का प्रमाद उड़ जाय और भाव में फ़र्क़ आ जाये। पूज्य गुरुदेव मार्ग-प्रकाशक थे। पूज्य गुरुदेव कहते थे कि, जो पढ़ा हो, सुना हो उसे जुगालना चाहिए। गुरुदेव का प्रभावना का योग बहुत और वाणी सातिशय थी, सबको उबरने का उपाय मिला। पूज्य गुरुदेव का उद्योत हुआ बाद में सबका जीवन शुरू हुआ। १५.

✤

गुरुदेव तो कल्पवृक्ष थे। दूसरा कल्पवृक्ष चैतन्यदेव है। गुरुदेव ने उस कल्पवृक्ष का मार्ग बताया - चैतन्यकल्पवृक्ष, जिसमें से सब फलेगा। तेरे पास चैतन्य कल्पवृक्ष है, वहाँ जा। ...उसे ग्रहण करने से मनोवांछित सिद्धि होती है। १६.

✤

सौराष्ट्र का गर्ज़ता हुआ शेर, उनके जैसा कोई न था। व्याख्यान

की धुआँधार वर्षा करते थे। यहाँ सोनगढ़ के एक कोने में हीराभाई के बँगले पर परिवर्तन किया। शुरूआत में थोड़े लोग व्याख्यान में आते थे। फिर तो सबको लगा कि गुरुदेव ने जो किया है वह बिलकुल सही किया है। इसलिये गुरुदेव के पीछे लोग बड़ी तादाद में आने लगे।

इस पंचमकाल में जिसने गुरुदेव की वाणी सुनी वह भाग्यशाली और गुरुदेव ने इस पंचमकाल में पधारकर जीवों को भाग्यशाली बनाया। १७.

पूज्य गुरुदेव का लाभ अलग ही था। बरसों तक सब को लाभ मिला। बैसाख सुदी - २ का मंगल सुप्रभात... हज़ारों की संख्या में लोग जन्म-बधाई लेकर आते। जैसे भगवान माता के गर्भ में पधारते, तो सारी नगरी सोने की हो जाती, वैसे गुरुदेव साक्षात् जहाँ पधारें वह सारी नगरी अलग प्रकार की हो जाती। गुरुदेव जिस नगर में जाते वह नगरी मंगल - मंगल हो जाती। रास्ते में मंगल - मंगल, उस घर में मंगल - मंगल हो जाता है। जहाँ पधारते वहाँ चारों ओर लोगों के समूह दिखाई देते हैं। वह मंडप अलग-सा ही लगे, लेकिन जैसे ही गुरुदेव पाट पर पधारें की मंडप की शोभा ही अलग-सी हो जाती। पुण्य-पवित्रता दोनों साथ में थे। भरतक्षेत्र शोभायमान था, वह पूज्य गुरदेवश्री से ही। १८.

पूज्य गुरुदेवश्री ने तो अमृतवाणी के प्रपात बरसाये हैं। मार्ग तो पूरा-पूरा स्पष्ट कर दिया है। अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी ही अद्‌भुत कि सुनने मात्र से भेदज्ञान की धारा शुरू हो जाये, सुनते ही भेदज्ञान हो जाय ऐसी है। किसीको पूछने जाना ही न

पड़े। यदि वास्तव में खुद की पात्रता और तैयारी हो तो काम कर लेता है। बाकी करना तो खुद को ही है। सब को एक ही काम करना है कि यह आत्मा पर से और विभाव से भिन्न है। अतः परद्रव्य और विभाव का अकर्ता है। अर्थात् अपने ज्ञान और आनंद स्वभाव का ही मात्र कर्ता है क्योंकि स्वयं अनादि से सदा शुद्ध है, सिद्ध स्वभावी स्वयंसिद्ध है, अशुद्धता तो ऊपर-ऊपर है, अशुद्धता का एक अंश भी द्रव्य में प्रविष्ट हुआ ही नहीं, फैला ही नहीं, यदि थोड़ा भाग भी अशुद्ध हुआ होता, तो उतनी अशुद्धता मिट ही नहीं सकती; अतः द्रव्य तो पूरा-पूरा शुद्ध ही है, उसका स्वीकार कर। कहिये ! ऐसी बात, ऐसी स्पष्टता पूज्य गुरुदेव के अलावा किसने की है ? कौन कर सकता था ? सारा उपकार पूज्य गुरुदेवश्री का ही है। १९.

✻

पूज्य गुरुदेव की वाणी की गर्जना से गुंजन कर रहा सोनगढ़ जीवंत तीर्थ है। पूज्य गुरुदेव की प्रभावना का उदय कोई अपूर्व... परमागममंदिर की प्रतिष्ठा... महावीर भगवान पधारें, जैसे मानो उत्सव लेकर आये हो। २५००वाँ निर्वाण महोत्सव... गाँव-गाँव में उत्सव होता था। गाँव-गाँव में धर्मचक्र निकले... धर्मचक्र जैसे भगवान के साथ हो और विहार करता हो ऐसा लगता। प्रभातफेरी निकलती थी। परमागममंदिर में भजन की रेकार्ड चालू ही रहती। भगवान ध्वनि साथ में लेकर आये और श्रुत भी साथ में लेकर आये। भगवान विहार करते हो, दिव्यध्वनि छूटती हो, वैसी वाणी लेकर सोनगढ़ में पधारे और वह वाणी दीवार में टंकोत्कीर्ण हो गई। कर्ता-कर्म, ज्ञेय-ज्ञायक सब ध्वनि के रूप में दीवार में टंकोत्कीर्ण हों गया। भगवान की वाणी यहाँ आकर स्थिर हो गई। परमागम

को इतना स्पष्ट और प्रसिद्ध करनेवाले गुरदेव ही हैं।

अभी गुरुदेव ज्ञाता-ज्ञाता की पुकार करते हैं। सबका फैसला करके सीधा रास्ता, विकल्प रहित ऐसे निर्विकल्प आत्मा को बतलाते हैं। २०.

✤

पूज्य गुरुदेव कहते थे कि सबको आत्मा का ही करना है। गुरुदेव का ही सारा प्रताप है। गुरुदेव के चरणों में जो आये, जिसने तत्त्व समझकर गुरुदेव को अंतर से ग्रहण किया उसकी वृद्धि हुए बिना रहती नहीं। गुरुदेव कोई अपूर्व थे। ऐसे भावि तीर्थंकर का द्रव्य इस पंचमकाल में यहाँ हमें मिला था। उनकी वाणी के पीछे चैतन्य का चमत्कार दिखता था। सबका चैतन्य जागृत हो जाय ऐसी अपूर्व वाणी थी। भीतर में आत्मस्वरूप की समझ की महिमापूर्वक जिसने (गुरुदेव को) ग्रहण किया उसका बेड़ा पार हुए बिना रहेगा नहीं। २१.

✤

गुरुदेव को तो तीर्थंकर की दिव्यध्वनि का नमूना - अंश के रूप में वर्तमान में प्राप्त हुआ है। सभा में दिव्यध्वनि का खुलासा मुखकमल से निकलता है कि सर्वांग से ? तब कहा था कि दिव्यध्वनि का अनुभव भी नमूनारूप हुआ है। तीन दफ़ा ॐ आया था।

जब जयपुर से सीमंधर भगवान सोनगढ़ पधारे तब गुरुदेव सबको भगवान दिखाते - अहोहो... आहाहाहा..... ऐसा होता था। सबको कहते थे कि चलो मेरे भगवान दिखाता हूँ। अभी प्रतिष्ठा नहीं हुई थी परंतु कमरे में भगवान के पास बैठकर गाते थे -

``अमीय भरी मूरति रची रे, उपमा न घटे कोई,
शांत सुधारस झीलती रे, निरखत तृप्ति न होय,

सीमंधर जिन दीठा लोयण आज।"

गुरुदेव को बहुत ही उमंग - उल्लास था।

गुरुदेव की वाणी का प्रपात ऐसा बहता है कि यदि आत्मा का कर ले तो भव का अभाव हो जाये।

गुरुदेव के साथ यात्रा भी कितनी ! यह पूज्य गुरुदेव का तीर्थंकर का पूर्व भव है। पुराण में यह सब सुवर्ण अक्षरों से लिखा जायेगा। भरतक्षेत्र में आकर धर्म का उद्योत किया है।

पूज्य गुरुदेव शाश्वत बिराजें और जगत पर उनकी छाया अमर तपो। तीर्थंकर भगवान विचरते हों और उनकी वाणी का योग हो, और वह वाणी छूटती ही रहे, ऐसा योग हो, ऐसे पूज्य गुरुदेव की वाणी लगातार ४० सालों से इस एक क्षेत्र में बरस रही है। लोगों का भाग्य है इसलिये विहार होता है और अद्‌भुत वाणी बरसती है। २२.

गुरुदेव बुलायें तो ऐसा लगता कि हम कृत-कृत्य हो गये। ऐसी अपूर्व वाणी मिली, आहारदान आदि का लाभ मिला, गुरुदेव की वाणी ने सबका जीवन अपूर्व बनाया। सब के हृदय में ग्रहण हुआ वह छूटेगा नहीं, हृदय में जो विश्वास पैदा हुआ वह छूटेगा नहीं। संसार का रस उतर गया, अब चढ़ेगा नहीं। अभी अंदर अमृत मिला नहीं (किन्तु) अमृत के छींटे पड़े उसकी महिमा और महिमा में ज़हर उतर गया। साक्षात् प्रगट नहीं हुआ लेकिन किनारा आ गया। गुरुदेव की वाणी ने क्या गज़ब का काम किया है ! कहाँ संसार में अनुरत, क्रियाकांड में धर्म मानते थे, वह सब छूट गया और एकत्वबुद्धि का रस पतला पड़ गया। २३.

मनुष्यभव का काल तो एकदम अल्प है। पुण्य-पाप का चक्र चलता रहता है। पूज्य गुरुदेव यहाँ जब बिराजते थे तब यहाँ चतुर्थ काल था। अभी इस काल में आत्मा का आराधन करे और शुद्धात्मा का शरण ले तो गुरुदेव का साथ मिल जाये। शुद्धात्मा का शरण ले तो गुरुदेव का साथ मिल जाये। शुद्धात्मा को ग्रहण करे तो गुरुदेव साथ में है ही। २४.

स्वभाव की वार्ता दुर्लभ हो पड़ी थी। गुरुदेव के प्रताप से सुलभ हो गई। ऐसी अनुभूति करना यह खुद के बस की, स्वयं के पुरुषार्थ की बात है। गुरुदेव ने अमृत के प्रपात बरसाये, अमृतधारा बरसाई, चारों ओर अमृतधारा बरसाई है। धीमी धार नहीं बरसाई, यह तो मुसलधार अमृत बरसाया है। एकदम ही पनप जाये - खिल उठे ऐसी मुसलधारा बरसाई है। अब खुद की तैयारी चाहिए। २५.

अरे ! पूज्य गुरुदेव तैरते पुरुष थे। स्वयं तैराक। स्वयं अपने से ही तिरे और अन्य सबको तारने का ज़बर परिश्रम उठाया। आलस का नाम नहीं, बारहों महीने हररोज़ दो वक्त प्रवचन, रात्रि में तत्त्वचर्चा - ४५ साल तक रोज़ का नियमित यही कार्यक्रम। पूज्य गुरुदेवश्री ने जिस मार्ग को प्रकाशित किया उसी मार्ग पर चलना है।

अहो ! पूज्यश्री ने यात्राएँ करवाई, कैसे करनी यह साथ में रहकर बताया - समझाया। पंचकल्याणक उत्सव - प्रतिष्ठाएँ, मुनि भगवंतों का दीक्षा के समय का वैराग्य - आहारविधि, मुनिवरों की दिनचर्या, मुनिदशा की सही पहचान, श्रावक के योग्य परिणामधारा, जिनेन्द्र प्रतिमा के दर्शन - पूजन - स्तुति - स्तवन कैसे होते हैं,

यह सब बाहर का और साथ ही शुद्धात्मस्वरूप चैतन्य का चिंतवन - मनन कैसा होता है, यह सब भीतर का, चैतन्य तत्त्व - जैसे आईने में मुँह दिखे वैसे हस्तामलकवत् दिखाते थे। पूज्य गुरुदेवश्री ने आत्मा की पहचान करवाई, सम्यक्दर्शन का वास्तविक स्वरूप समझाया। अंशतः परिणमन कर रही स्थिर परिणति दिखाई। जीव चाहे कहीं भी बाहर अटकता हो तो वहाँ से लौटाकर उसे स्पष्ट मार्ग बताया है।

अहो ! द्रव्य-गुण-पर्याय-उपादान-निमित्त का मेल, निमित्त-नैमित्तिक संबंध, देशव्रत-महाव्रत, निश्चय-व्यवहार, सम्यक्-चारित्रस्वरूप लीनता, केवलज्ञान और सिद्धदशा पर्यंत आत्मा की कैसी-कैसी दशा होती है वह सब प्रत्यक्ष दिखाया है। अब जो कुछ शेष रहता है वह अपनी ही क्षति है, अपना ही प्रमाद है। अतः स्वयं यदि पूज्य गुरुदेवश्री के उपदेश से भीगा हो तो अब क्या करना, यह खुद की ही ज़िम्मेदारी है, खुद के हाथ की ही बात है - अतः शीघ्रता से पुरुषार्थ उठाकर काम कर लेने जैसा है।

पूज्य गुरुदेवश्री ने जीवन में सिर्फ एक शुद्धात्मा की पहचान करना और पहचान करके स्वाधीन स्वानुभूति प्रगट करने का कहा है। अरे ! चैतन्य भगवान तो तुम स्वयं ही हो, वह तो तुम्हारे पास ही है, सिर्फ विभाव स्वभाव की रुचि के कारण दृष्टि में तुझे वह दिखता नहीं, तू स्वयं को देखने का प्रयत्न नहीं करता इसलिये महा आश्चर्यकारी महाप्रतापी ऐसे तेरे आत्मा को तू देखता नहीं है। २६.

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रताप से देखो न ! इलैक्ट्रिक साधनों की शोध हो गई कि जिसके कारण घर-घर में गुरुदेवश्री के प्रवचनों

की हज़ारों विडियो कैसिट और लाखों टेप कैसिट का संग्रह हो गया और नियमितरूप से - हररोज़ लोग उत्साहपूर्वक सुनते ही हैं, देखते हैं। टेप रिकार्डिंग में गुरुदेवश्री को बोलते हुए सुने या विडियो कैसिट में उनकी मुखमुद्रा देखें तो जैसे साक्षात् गुरुदेवश्री हमारे समक्ष उपस्थित हों, उसमें भी स्वाध्याय मंदिर में पूज्य गुरुदेवश्री का दीर्घकालीन निवास होनेसे उनकी वाणी का टोन (अंतरध्वनि) जैसे यथातथ्य सुरक्षित रहा है, सुनाई दे रहा है। पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में मनाई गई प्रतिष्ठाएँ, उत्सव, यात्रा-प्रवास, शिक्षण शिबिर, धवल के शास्त्र, अनेक आचार्य भगवंतों के वैराग्यमय सत्यदृष्टिपोषक सिद्धांत, दृष्टांतों की अपूर्वता से प्रसिद्धि हुई, यह सारा प्रताप पूज्य गुरुदेवश्री का ही है। २७.

पहले जब समयसार देखा तब कुछ समझ में नहीं आता था। गंभीर बहुत लगता था जिसे गुरुदेव ने समझाया। दिगंबर धर्म सत्य है ऐसा निश्चितरूप से गुरुदेव ने ही दर्शाया है। गुरु ने मार्ग दिखाया है। बुद्धि से आगे का सोचे, भीतर में ग्रहण करे लेकिन स्पष्ट मार्ग, सत्य मार्ग अत्यंत स्पष्टरूप से बेधड़क गुरुदेव ने ही दर्शाया है। २८.

गुरुदेव की श्रुत की शैली गज़ब है। उसमें निश्चय-व्यवहार, अस्ति-नास्ति, उपादान-निमित्त, सब गुरुदेव ने ही समझाया है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ करता नहीं, दिगंबर धर्म से ही मोक्ष है। सब खुलासा किया। मुक्ति का मार्ग गुरुदेव ने स्पष्ट किया, श्रीमद् राजचंद्रजी के कुछएक अर्थ पूज्य गुरुदेव ने खोलकर समझाये। तीर्थंकर भगवान की तरह मार्ग प्रकाशित किया... श्रुत की धारा

ही अलग...

मुझे (पूज्य बहिनश्री) तत्त्व की उत्कंठा बहुत, अंदर से पुकार उठती लेकिन मार्ग की स्पष्टता तो गुरुदेव ने ही की। जिनसे उपकार हुआ हो उनका नाम कैसे भूलें ! २९.

संसार का रस (तो) उतर गया लेकिन शुभ का रस (रुचि) भी सबको उतर गया। गुरुदेव ने ऐसी दृढ़ श्रद्धा करवाई है और बारंबार एक आत्मा को घुटाया है, ``तू भगवान हो, तू परमात्मा हो' इस बोल ने सबके कलेजे को हिला दिया है। संसार का रस ढ़ीला कराया और भीतरसें मज़बूत बनाया। आत्मा की महिमा करा दी। घुटा-घुटाकर महिमा करवाई। इतनी महिमापूर्वक बोलते थे कि चाहे कितनी ही बार सुनें तो (भी) नया-नया लगता, और उसी बात को फिर से बोले तो भी सुहाता था। ३०.

पूज्य गुरुदेव की वाणी, उनकी मुद्रा, उनकी चाल सब अलग ही... चाल धीमी किन्तु हाथी के जैसी... कदम इतने बड़े-बड़े कि साथ में चलनेवाला पहुँच न सके। उनका शरीर जैसे आत्मा दिखाता हो ! मुद्रा देखकर ये महापुरुष हैं ऐसा लगे। हँसी तो इतनी निर्दोष कि जैसे प्रफुल्लितता छिपी न रहे। - अध्यात्म का तेज शरीरमें से टपकता हो ऐसा लगे ! गुरुदेव जैसे दिव्यपुरुष हो, वैसा तेज था। ३१.

ऐसा मूसलधार उपदेश मिलना वह जीवन का महाभाग्य है। अब बार-बार घुटते-घुटते प्राप्ति हो, वैसा ध्येय होना चाहिए। उपदेश में सब आ जाता था। गुरुदेव में सब समा जाता था। सौराष्ट्र

में सीमंधर भगवान पधारे तब साक्षात् पधारे हों, ऐसा लगता था। गुरुदेव के युग में पूर्व में जानने में न आये हो, ऐसे नवीन-नवीन प्रसंग बन गये। गुरुदेव प्रधान पुरुष का उद्योत हुआ, इनके साथ बहुत लोग होते हैं। चक्रवर्ती के साथ सब कुछ होता है। सब रत्न होते हैं, सेनापति इत्यादि होते हैं, वैसे गुरुदेव जैसे महापुरुष का उदय हुआ, इनके साथ सब होते हैं, रामजीभाई इत्यादि थे। गुरुदेव का प्रताप है। सारा हिन्दुस्तान जागृत हो गया। `आत्मा' शब्द भी कौन जानता था ? ऐसी भाषा भी कहाँ थी ? फिर भाव की तो कहाँ से ख़बर हो ? सबको अंतरदृष्टि दी, हृदय परिवर्तन हुआ। ३२.

✻

दिव्यध्वनि कैसी है ! समुद्र का मेरु पर्वत से मंथन करके जो तत्त्व निकले, आवाज़ आये, ऐसा गंभीर आपकी वाणीका आशय है, अमृत ही है, जगतके जीवोंके विषको-ज़हरको तोड़ देता है। श्रोता को मुग्ध करती दिव्यवाणी है। ऐसी चारों ओर प्रकाश करनेवाली आपकी वाणी है। इस गुरुवाणी को क्या उपमा दी जाये ? ऐसी अनुपम गुरुवाणी है। हे गुरुदेव ! आपके ज्ञान को क्या उपमा दी जाये ! ३३.

✻

गुरुदेव ने इतनी स्पष्ट बात करके निरंतर वाणी की वर्षा की है। जीवों के कलेजे में चोट लग जाये ऐसी वाणी की वर्षा की है। सोते हुए को जागृत किये, सामने से कहते थे जाग रे... जाग.. बार-बार एक ही बात परोसते थे, दूसरे की आलस और निद्रा उड़ जाये। सब टाइम पर प्रवचन में जाते, यह तो समवसरण था। ३४.

✻

समयसार तो समयसार है, उसके जैसा सर्वोत्कृष्ट दूसरा कोई नहीं। गुरुदेव तो गुरुदेव ही थे। उनके जैसा कौन हो सकता है ? समयसार तो समयसार ही है। गुरुदेव की तरह `आहाहा...' करनेवाला भी दूसरा कोई नहीं है। एक जगतचक्षु समयसार, वैसे दूसरे जगतचक्षु गुरुदेव। समयसारको दिखानेवाले वे एक, उनके जैसा दूसरा कोई नहीं। ३५.

अंदरसे गर्व होना चाहिये कि हमारे गुरुदेव कैसे थे ! उनसे कैसा मिला है ! किसीको न मिले वैसा हमें मिला है। इस गर्व के साथ श्रुत का वांचन-विचार करे तो (दूसरा कुछ याद भी न आये।) गुरुदेव क्या देकर गये हैं, उसे लक्ष्यमें नहीं लेता है और इधर-उधर का विकल्प करता है। इस तत्त्व पर नाज़ होना चाहिये। गुरुदेव हमें द्रव्यदृष्टि सिखाकर गये हैं। आत्माको ऊर्ध्व रखना सिखाया है। ३६.

ऐसे पंचमकाल में इस प्रकार का योग होना असंभवित ही गिनना चाहिये। ऐसे काल में पूज्य गुरुदेवश्री का विहार गाँव-गाँव में, प्रमुख शहरों में व तीर्थस्थानों में हुआ। उस वक्त जैन-जैनेतर हरएक मानव समुदाय का गुरुदेवश्री के दर्शन हेतु, स्वागत हेतु, उनकी वाणी सुनने के लिए उत्साह कोई अनूठा ही था। जहाँ-जहाँ गुरुदेवश्री पधारते वहाँ समूहमें स्वामीवात्सल्य, पुस्तकों की प्रभावना, बरतनों की प्रभावना, रंगोली करते, रोशनी करते। दक्षिण में तो पूज्यश्री की आरती उतारते थे। पंडितगण, त्यागीवर्ग, दिगम्बर मुनियों, सुशिक्षित जज, डाक्टर, वकील, प्रतिष्ठित शहरी आगेवान, राजा-महाराजाओं अरे ! गवर्नर भी, (ऐसी) प्रमुख व्यक्तियाँ बिना बुलाये उनका प्रवचन

सुनने अवश्य आते। संवत-२०१३ और संवत - २०१५ की साल में तो स्वागत और अभिनंदनोंकी वर्षा सहित ज़बरदस्त प्रभावना का काल फैला था। जिन्होंने पूज्य गुरुदेवश्री के प्रथम बार ही दर्शन किये, उन्हें देखने के साथ ही ऐसा लगता कि अहो ! कोई महापुरुष लगते हैं। इस तरह गुरुदेवश्री जहाँ पधारते वहाँ लोग तो, जैसे महासागर उछल पड़े वैसे लोगों का बड़ा समूह उन्हें सुनने उमड़ पड़ता। अभी जिन्होंने भले गुरुदेवश्री को प्रत्यक्ष देखा न हो, फिर भी यहाँ सोनगढ़ में आते ही शांति-शांति की ही भावना जागृत हो जाती है। यहाँ के कण-कण में शांति ही छा गई है। ३७.

चाहे कितने भी कठिन पुण्य-पाप के उदयरूप संयोगों में या शुभाशुभ परिणाम के वक्त समता-शांति कैसे रखी जाये, यह सब गुरुदेव ने ही बताया है। गुरुदेवश्री ही अपना सर्वस्व है। अभी कोई कहे कि इसने ऐसा किया, उसने वैसा किया तब मुझे तो ऐसा ही लगता है कि, किसीने कुछ किया ही नहीं। यह सब जो कुछ चारों तरफ हुआ या हो रहा दिखता है, वह सब सिर्फ पूज्य गुरुदेवश्री का ही प्रताप है, प्रभाव है।

पूज्य गुरुदेवश्री प्रतिदिन फरमाते थे कि अरे भाई ! तू तो ज्ञातास्वरूप हो, ज्ञायकदेव हो, जाननेवाला तत्त्व हो, ज्ञायक कोई रूखा या खाली नहीं है, वह तो अनन्त अपूर्वता से भरा है। गुरुदेवश्री की वाणी ऐसी अपूर्व थी। जगत से न्यारा चैतन्य शिरोमणी चैतन्यदेव कोई अनुपम ही है, जिसे इस जगतकी कोई उपमा नहीं दी जा सकती।

यह सुनकर जिसको कुछ जिज्ञासा हो कि, अहो ! ऐसा चैतन्यस्वभाव मुझे कब प्राप्त हो, कैसे प्राप्त हो, उसे आगे बढ़नेका

अवसर है।

गुरुदेवश्री ने जब-जब जो कुछ कहा हो उसकी (यथार्थ) महिमा अपूर्वता से बारम्बार आनी चाहिये, आश्चर्य रहना चाहिये। मुझे बराबर समझ में आ गया है, सीख गया हूँ, ऐसी जानकारी पर मदार रखकर बह जाना नहीं चाहिये। ऐसा होने पर तत्त्वका निर्णय रूखा हो जाने का प्रसंग बनता है। प्रत्येक कार्यमें पूज्य गुरुदेवश्री का बेहद उपकार अंतर में छा जाना चाहिये। यह भी मार्गप्राप्ति का क्रम है। ३८.

पूज्य गुरुदेवश्री (स्थानकवासी) संप्रदाय में जब आहार लेने निकलते थे तब घर-घर में लोग दरवाज़े पर खड़े रहते, जैसे मुनिराज के आहारदान की प्रतीक्षा करते हों, वैसा लगे। निस्पृहता से गुरुदेव रास्ते पर जा रहे हो ! वह दृश्य सुंदर लगता था।

यहाँ सोनगढ़ में भी बरसों तक समिति में एवं मंडल में आहार लेने पधारते थे। तत्पश्चात् शिखरजी की यात्रा में जाना नक्की हुआ तब `पातरा' (आहार लेने का पात्र) और आहार लेने जाना, दोनों बंद हुए। दिगम्बर त्यागी या दूसरे किसीके बँगले पर खाना खिलाते थे उस वक्त गुरुदेव को खिलाने का और वे खाना खाते हों उस दृश्य को देखने की बहुत भावना रहती और मन में होता था कि यह कितना सुंदर लगता है ! यह हमेशा बना रहे तो कितना अच्छा ! बाद में तो यह लाभ सबको सहज मिल रहा है। ३९.

चक्रवर्ती देश-देश में विजय प्राप्त करने जाते हैं। राज्य के लिये जाते हैं और चक्रवर्ती बनते हैं। वे तो हुए राजचक्री, पूज्य गुरुदेव तो धर्मचक्री हैं। धर्मध्वज को देश-देश में लहराते हैं। जहाँ-जहाँ

पधारें वहाँ-वहाँ मुमुक्षुओंके समूह... पूज्य गुरुदेव धर्मकी प्रभावना करने जाते हैं। चतुर्थकाल में तो पंचकल्याणक प्रत्यक्ष देखने को मिलते परन्तु वर्तमान में पूज्य गुरुदेव के प्रताप से स्थापनारूप बहुत से पंचकल्याणक देखने मिलते हैं। ऐसा भाग्य भी कहाँ से ! ४०.

पूज्य गुरुदेव कहते थे कि ज्ञान और श्रद्धा का समय एक ही है और शास्त्र में भी ऐसा आता है।

अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री के प्रताप से वारंवार एक शुद्धात्मा की गूँज ही गुंजती थी। समय कहाँ बीत गया इसकी खबर ही नहीं रहती।

अहो ! ये तो अदभुत महापुरुष का उदय हुआ जो सबको कहाँ से कहाँ लाये और सही रास्ते पर चढ़ायें। कितना सुंदर स्पष्टीकरण दिन में दो-दो बार होता है ! प्रत्येक सिद्धांत कितनी सूक्ष्मता से समझाते हैं ! ४१.

अहो ! ऐसे दुष्कर पंचमकाल में वाणी द्वारा सत्स्वरूप का धोध बरसानेवाले तो पूज्य गुरुदेवश्री एक ही थे। वे तो अब चल बसे, हम सब निराधार हो गये।

उनकी वाणी-श्रवण के काल ऐसा विकल्प रहता था कि :- शरीर स्वस्थ रहे तो अच्छा, तब जैसे-कैसे भी ज़ोर करके व्याख्यानश्रवण में पहुँचना होता था। उस वक्त इस शरीर की खातिर दूसरा कोई उपचार करने का विकल्प नहीं आता था। वह योग माने वाणीश्रवण का योग अब तो है नहीं, फिर अब किसके लिये विकल्प करना ?

पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी अद्‌भुत व अलौकिक थी। उपदेश

का कार्य मेरा नहीं। प्रभावना करनेवाले तो पूज्य गुरुदेवश्री ही थे, इतना ही नहीं प्रभावना के अनेक कार्य भी उनके अतिशय पुण्योदयसे ही हुए हैं, हम कौन होते हैं ?

सब पंडितों - त्यागियों, जिज्ञासुओं को पूज्य गुरुदेवश्री ऐसे ज़वाब देते थे कि उनके हृदय से आरपार कलेजे में घा पड़ जाता (असरकर जाता था)। उनकी छत्रछाया में हम सब कितने सलामत व निर्भय थे ! पूज्य गुरुदेवश्री ज़वाब देते हो तब तो बीच में कोई बोल नहीं सकता, किसीको मालूम भी न हो, वैसे स्पष्ट खुलासा करते थे। पूज्य गुरुदेवश्री का हम सबको बहुत बड़ा आधार व आश्रय था। वे हमारे नाथ थे। पूज्य गुरुदेवश्री की प्रभावना तो कुछ और ही थी, बिलकुल अलग ही थी। वे अजोड़ थे। पूज्य गुरुदेवश्री तो तीर्थंकर का द्रव्य थे। उनकी प्रतिभा तीर्थंकर के पुण्य जैसी ही थी।

पूज्य गुरुदेवश्री यहाँ सोनगढ़ में बिराजते थे तब कितना सुलभ काल था ! उनकी वाणीश्रवण से सभी जीव आत्मा को समझ लें ऐसा काल था। अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री ने अंदर और बाहर सब दिखा दिया है। अब तो कोई भी स्थान देखने-जानने की इच्छा ही नहीं रही। सिर्फ अंदर में जम जाने की ही भावना है। ४२.

वैशाख वद - ८ के दिन पूज्य गुरुदेव को कंठ से ॐध्वनि आया था इसलिये इस मंगल दिन पर स्वाध्यायमंदिर की स्थापना हुई। गुरुदेव यहाँ पधारें, सबको बहुत आनंद-आनंद होता था, उत्सव मनाया गया था।

पूज्य गुरुदेव का (तब) स्वास्थ्य ठीक नहीं होने से पूछा था कि साहब ! आप कैसे हैं ? तब कहा था कि, शरीर में फेरफार

लगता है, वह तो पुद्गल है। अंदर में तो जागृति-जागृति, पूर्ण जागृति है।

पूज्य गुरुदेव का व्याख्यान यानी पूछो मत, उसमें आनंदघनजी आदि के पद मधुर राग से गाते और पूरी सभा झूम उठती। पूज्य गुरुदेव ने दृष्टि दी, उस दृष्टि से पलटा हुआ। भरतक्षेत्र के भाग्य ! इस काल में गुरुदेव मिले, उनके प्रताप से चारों तरफ धर्म का वातावरण देखने को मिलता है। देशनालब्धि मिली यह गुरुदेव का ही उपकार है।

पूज्य गुरुदेव के निरंतर ज्ञान-ध्यान के विषय समयसार गाथा १ से १५, ४७ शक्ति, ४७ नय, अव्यक्त के बोल, ३२०वीं गाथा, षट्कारक इत्यादि हैं।

पूज्य गुरुदेव का तो अनंत-अनंत उपकार है। उनका उपकार तो यहाँ हृदय में उत्कीर्ण हो गया है, धारा टिकी रही वह उनका प्रताप है। ४३.

गुरुदेव ने सब विभ्रम के बादल तोड़ दिये और स्वभाव की दिशा कैसी होती है, यह बताया। तू अंतर में प्रगट कर, तेरे सामर्थ्य की बात है। चैतन्य का चित्र बनाकर दर्शाया है। जैसे नक्शे में बताते हैं कि यह दिशा यहाँ है, यह यहाँ है वैसे, यह मार्ग है, यह ज्ञान- दर्शन-चारित्र है, द्रव्यदृष्टि कर, सारा चित्रित कर दिखाया है। उपादान-निमित्त, द्रव्य-गुण-पर्याय, साध्य-साधकदशा, मध्यस्थ मार्ग, मुनिदशा, केवलज्ञान, सम्यक्दर्शन से लेकर पूरा मार्ग स्पष्ट कर दिया है। विभाव के कौन-कौन से प्रकार बीच में - बीच में आते हैं, स्वभाव के लक्षण कैसे होते हैं, ये सब बताया है। ४४.

सौराष्ट्र में सबके हृदय में गुरुदेव बिराजमान हो चुके हैं, अंतर में बस गये हैं। दिगंबर मार्ग का जो प्रचार किया है उसे सब ने स्वीकार किया है। उनके द्वारा कथित तत्त्व का प्रचार सब कर रहे हैं। सब उन्होंने सिखाया है। गुरुदेव कुंदकुंद भगवान की कितनी महिमा करते हैं ! उनके हृदय में आचार्यदेव की और जिनवाणी की अपार महिमा थी। उनका हृदय कोमल था। उन्हें कोई तत्त्व का, सत्य का विरोध करे, इसका बहुत दुःख लगता। ४५.

✻

गुरुदेव की वाणी में इतना ज़ोर था, इतनी प्रबलता थी कि लाखों-करोड़ों जीव उनकी वाणी से द्रव्यदृष्टि की ओर जाये, उस तरफ झुकाव करे, उसकी भावना करे, वैसी परिणति उत्पन्न करने की दिशा में झुकाव करें, वस्तुस्थिति तो यह है ऐसा निर्णय होता है।वाणी का ऐसा योग बैठ गया। देश-परदेश विहार किया, सबको दृष्टि बताई कि इस रास्ते पर जा... इस रास्ते पर जा। कितने ही जीवों के उत्पाद-व्यय, स्वसन्मुख करने की तैयारी कर सके ऐसी दृष्टि गुरुदेव ने बताई। ४६.

✻

गुरुदेव द्रव्यदृष्टि को बहुत प्रधानता देते थे। द्रव्यदृष्टि को ओप दिये बिना जीवों के क्रियाकांड नहीं छूटते। इसके बिना भ्रम नहीं टूटता। तू शुद्ध है, राग तेरे में नहीं, ऐसा ज़ोरपूर्वक कहे बिना दो भाग नहीं हो सकते। भेदज्ञान नहीं होता। उन्हें जो भीतरमें से आता था वह कहते थे। इसके बिना जीव को भेदज्ञान नहीं हो सकता। ४७.

✻

यात्रा के प्रसंग में तो कुछ अलग ही लगता था। इसमें भी गुरुदेव के संग यात्रा, इसका तो क्या कहना ! पहली यात्रा पर निकले और हिन्दुस्तान में विचरे वह प्रसंग कोई अलग ही था। यात्रा में गाने के लिये भक्ति तैयार करने का काम रहता। ऐसे महापुरुष का संग हो तो यह प्रसंग ही कुछ और.... गुरुदेव का साथ मिलना दुर्लभ है। ऐसे प्रसंग मिले वे दुर्लभ हैं। देव-गुरु का साथ मिलना दुर्लभ है। ऐसे दुर्लभ प्रसंग हमलोगों को सुलभ हो गये। भीतर में आत्मा का संग और बाहर में देव-गुरु का संग दुर्लभ है। किसी महान पुण्य के फल में यह मिलता है। ४८.

✤

गुरुदेव ही याद आते रहते हैं। इसलिये इन दिनों दूसरी चर्चा नहीं चलती। गुरुदेव की ही महिमा आती है।

``एकबार बोलो गुरुदेव, अबोलडां शाने लीधां छे,
बोलो बोलोने गुरुदेव, अबोलडां शाने लीधां छे।''

ज्यादा गाती हूँ तो हृदय भर जाता है ! ४९.

✤

आज गुरुदेवने प्रवचन में दीक्षा लेने के पश्चात् आये हुए। सप्ने की बात कही थी। पूरे आकाश में शास्त्र से लिखे पटिये छा गये थे। उसका नाप संगमरमर के पटिये जितना था। इसका अर्थ कि ऐसे शास्त्र आपके हृदय में उछलनेवाले हैं। यह स्वप्न, अभी शास्त्रों की संगमरमर में उत्कीर्ण हुऐ और परमागममंदिर में लगाये गये, इससे साकार हुआ।

पूर्व के संस्कार थे, इसलिये दूसरा स्वप्न (ऐसा आया था कि) पूरे आकाश में छठी के चंद्र छाये थे, उन चंद्रों की संख्या एक-दो नहीं बल्कि लाखों-करोड़ों। उसका अर्थ करते थे कि साधकपना

छठी के चंद्रमा की माफ़िक प्रगट होगा वह पूर्णता को प्राप्त (यहाँ) नहीं होगा। पूनम का चंद्र यहाँ नहीं होगा। ५०.

गुरुदेव की वाणी से संसार के रस छूट गये। जिस संसार में रत रहते थे उसके रस छूट गये और आत्मा की ओर लग गये। आत्मा कैसा है ? कैसे प्राप्त हो, इसका रस लग गया। जैसे मुरली बजने पर सर्प का पूरा शरीर ढीला पड़ जाता है वैसे। गुरुदेव की वाणीरूप मुरली से मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी की पकड़ ढीली पड़ गई। संसार का ज़हर उतार दिया। सेठ - श्रीमंतों का, करोड़पतियों का, रंग-राग में रहनेवालों का रस तोड़ दिया। बालक से लेकर वृद्ध, सबको ऐसा लगने लगा कि ये वाणी कुछ अलग ही प्रकार की है। सबको यह अपूर्व वाणी सुनकर भेदज्ञान करने की प्रेरणा हुई। आत्मा अपूर्व है, गुणों का सागर है, ऐसा सबको लगा। ५१.

गुरुदेव का प्रभाव हिन्दुस्तान में चारों तरफ फैला हुआ है। गुरुदेव पहले संप्रदाय में त्यागी हुए, तप करते, क्रियाओं का पालन शुद्ध व दृढ़तापूर्वक करते, (फिर भी) संयममार्ग भीतर में है, वेश तो ले लिया, परंतु इसका स्वरूप कुछ और है, (ऐसा लगता था।)

(गुरु ने जब पातरा को रंग करने को कहा तब उन्हों ने कहा कि) ये पातरा को रंग करने का काम मैं नहीं करूँगा, तब गुरु ने कहा, फिर तो पातरा नहीं रखते हो ऐसे गुरु ढूँढ़ लेना, तो (उन्हों ने) कुंदकुंदाचार्य को ढूँढ़ लिया। पूरा मार्ग ढूँढ़ लिया। सारी दुनिया को दिखाया कि, इस मार्ग पर चलो... इस मार्ग पर चलो...

बाह्य क्रियाकांड में क्यों अटक गये हो ? इस मार्ग पर चलो, ऐसा बताया। ५२.

✻

गुरुदेव की वाणी की बुलंद आवाज़ ही कोई अलग... अभी उनके आश्रित प्रवचन देते हैं परंतु गुरुदेव की वाणी तो कोई अलग ही प्रकार की... सिंह गर्जना जैसी बुलंद वाणी, वह वाणी अलग ही थी। अभी टेप में गुरुदेव की वाणी... दूर से तो जैसे गुरुदेव ही बोल रहे हैं ऐसा लगे। थोड़ी देर तो भूल ही जाते हैं, लगता है जैसे कि व्याख्यान शुरू हो गया। बरसों के संस्कार होने से ऐसा लगता है। गुरुदेव जैसे मौजूद ही हैं ऐसा लगे। उनकी वाणी ने सबको जीवंत रखा है। गुरुदेव की प्रबल वाणी के निमित्त से क्रांति हो गई। गुरुदेव स्वयं जागृत हुए और सारे भारत को जागृत किया। कोने-कोने में सबको जागृत किया। ५३.

✻

मोरबी में पूज्य गुरुदेव को स्वप्न आया था कि खुद पहले मंजिले पर बैठे हैं, नीचे नाटक चल रहा है, सब लोग आते हैं। नाटक में ऐसा आया कि `मुझे तैर जाना है संसार(से)।' पूज्य गुरुदेव को ऐसा लगा कि स्वप्न के नाटक में भी ऐसा आया। अतः जिसका घोलन चलता हो, उसीके स्वप्न आते हैं। उनके भव का अभाव हो गया इसलिये स्वप्न भी भव के अभाव सूचक ही आते हैं। ५४.

✻

चैतन्य पूरा ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, शुद्धता से भरा है। ऐसी इसकी पहचान करानेवाले गुरुदेव थे। गुरुदेव चैतन्य की वार्ता, शुद्धात्मा की वार्ता करते थे। ऐसी चैतन्य की वार्ता जगत में और कहीं नहीं है। इसकी स्वानुभूति कर, अंतर में भेदज्ञान

कर ! तू अंतर में जा। इस तरह चैतन्य की बात सुननेवाले के बाहर के रस रूखे हो जाते थे। ५५.

✻

(गुरुदेव ने) १२।। करोड़ बाज़ा का नाद सुना, जिसमें आधा स्वप्न में और आधे में भास हुआ था। दोपहर को डेढ़ बजे आया था। `ॐ' आया, उस पर से ऐसा लगा कि ॐ भगवान की ध्वनि है, भविष्य में ॐ ध्वनि छूटेगी। वर्तमान में ॐ लेकर आये हैं। इसलिये यहाँ ध्वनि की झंकार सुनाई देती है। ५६.

✻

गुरुदेव ने चैतन्य का प्रकाश बाहर लाकर सबको दिखाया। तुम हो, तुम जैसे हो वैसा तू स्वयं को देख। गुणों का वैभव देख ! गुणों का वैभव फैला-फैलाकर बताया। यह तेरा वैभव ! तू देख ! ऐसी वाणी ! लोग सुनकर दंग रह जाते। गुरुदेव क्या कहना चाहते हैं ! ऐसा तो कभी सुना ही नहीं। कहीं मिला नहीं।

षट् आवश्यक - पद्मनंदि के प्रवचन में कितने ज़ोर से आह्वान किया है ! उनकी वाणी पुरुषार्थप्रेरक थी। एक छलाँग पर सम्यक्दर्शन, दूसरी छलाँग पर मुनिपना, और तीसरी छलाँग पर केवलज्ञान, ऐसा कहते थे। उनकी ऐसी ज़ोरदार वाणी सुनकर जीव को पुरुषार्थ का बल मिल जाता है। ५७.

✻

अभी जो `अमृत वरस्यां रे पंचमकालमां' (ऐसा गाते हैं) इसके बजाय तब ऐसा गाते थे कि ``अमृत वरस्यां रे रविना प्रभातमां'' रविवार की रात को अमरेली के उपाश्रय में ॐ नाद आया था, दिव्यध्वनि सुनाई दे रही है, वादित्र बज रहे हैं, इत्यादि आया था। ५८.

✻

पूज्य गुरुदेव ने ऐसा मार्ग बताया कि मत-मतांतर अवरोधरूप न हो। सब स्पष्ट करके गये हैं। जगत का आश्चर्य आत्मा है। जिनेन्द्र भगवान आश्चर्यकारी हैं और गुरुदेव भी आश्चर्यकारी थे।

उनका अतिशय इतना था कि जहाँ उनके चरणस्पर्श होते वहाँ सब सुलझ जाता। भगवान विहार करते हों तब काँटें झुक जाते हैं। कई योजन तक रोग नहीं होता, सब बैर-विरोध भूल जाते, वैसे पंचमकाल में गुरुदेव का तीर्थंकर द्रव्य आश्चर्यकारी था। उनकी मौजूदगी में जो हुआ वह आश्चर्यकारी हुआ है। ५९.

पूज्य गुरुदेव ने तो एक ही मंत्र दिया है कि शुद्धात्मा को ग्रहण करना। यह एक ही लगाम हाथ में आ गयी तो (शुद्ध) परिणाम स्वतः होंगे, परिणाम को देखने नहीं पड़ेंगे। एक शुद्धात्मा की लगाम हाथ में रखना। शुद्धात्मा को पहचानो - यह मंत्र पूज्य गुरुदेव ने दिया है। ६०.

उपशम, क्षयोपशम, क्षायिकभाव भी आत्मा में नहीं है। एक पारिणामिक भावस्वरूप आत्मा है। यह पूरा स्वरूप गुरुदेव ने बताया है। ६१.

आचार्यदेव ने अपने शब्दों से निज वैभव दिखाया। गुरुदेव ने अपने वैभव से समयसार दिखाया। गुरुदेव के प्रत्येक शब्द में अनंतता भरी है। आत्मा में अनंतता भरी है। आत्मा के एक अंश में अनंतता भरी है। भगवान की दिव्यध्वनि का मर्म जानना मुश्किल है। भगवान की दिव्यध्वनि के शब्दों में अनंत रहस्य भरे हैं। गुरुदेव ने जो समयसार का भाव स्पष्ट किया है उस भाव के सामर्थ्य को समझ

पाना मुश्किल है, अनंत रहस्य है। ६२.

✤

गुरुदेव विहार करते तब सब गाते थे कि, आप विहार न करें। यहाँ सारे धाम सूने-सूने पड़ जाते हैं। गुरुदेव ! आपके बिना कैसे सुहाये ! अभी तो हमेशा के लिये सूना करके चले गये।

गुरुदेव डोली में विहार करते तब गाते थे...

``वन वन विजंता वायरा, मारा गुरुने साथे राखजो।
कांटा-टेकरा तमे समावी देजो, मारा गुरुनुं शरीर कोमळ छे।
साथे रहेनारा भक्तो तमे, गुरुदेवनी साथे ज रहेजो,
आजे गुरुजी अहींया, काले गुरुजी बीजा देशमां,
काले सूनी सूनी भूमिमां, अमे बावरा फरतां।''

अब ऐसे दिन हमेश के लिये आ गये। ऐसी गुरुदेव के लिये भावना रहती थी। आज यह सब याद आ गया... गुरुदेवश्री भगवान पधारो...पधारो करते-करते स्वयं ही भगवान के पास पहुँच गये। ६३.

✤

गुरुदेव की वाणी की कितनी तो टेप हैं ! वाणी हूबहू रह गई। ``निधि पाकर' अब पूरी निधि मिली। तू एकांत स्थान में रहकर तेरी साधना कर, गुरुदेव से जो मिला है उसकी प्राप्ति का पुरुषार्थ कर ! गुरु जैसे शिष्य को निधि देते हैं वैसे गुरुदेव ने दी है। अब प्राप्त करना यह तेरे हाथ की बात है। टेप सुनते हुए गुरुदेव हैं ही, ऐसा लगता है, शब्दों की गूँज चल रही है। अब क्या लेना बाकी है ? एक आत्मा लेना बाकी है। (सोनगढ़) पावन हुई यह पावन भूमि है। ६४.

✤

ऐसे विषमकाल में ऐसे महापुरुष का योग मिलना अति-अति दुर्लभ है। उनके दर्शन व वाणी कितने दुर्लभ हैं यह अभी सब भक्तों को वेदनपूर्वक स्पष्ट समझ में आ रहा है। पुण्य के ढेर उछले बिना ऐसे महापुरुष का योग इस काल में कहाँ से मिले ? भारत के महाभाग्य थे कि गुरुदेव का यहाँ जन्म हुआ, इतने सालों तक सब को अपूर्व लाभ मिला।

उनका आगमन होते ही मंगल-मंगल हो जाये ! पूरी नगरी बदल जाये ! मुंबई नगरी में पंद्रह-पंद्रह, बीस-बीस हज़ार लोगों के बीच व्याख्यान देते हों तब एकाग्रता से सब टकटकी लगाकर देखते रहते, अद्भुत शांति से प्रेमपूर्वक ज्ञान-वैराग्य से सराबोर गुरुदेव की अमृतवाणी श्रवण करके, सब अपनी-अपनी शक्ति अनुसार कम-बेशी समझते, लेकिन सब ऐसी छाप लेकर जाते कि वास्तव में कोई महापुरुष हैं, धर्मपुरुष हैं। गुरुदेव ने भारत को बहुत दिया है। ४५-४५ साल तक श्रुत के धोध (प्रपात) बरसाएँ हैं। भारत पर उनका अपार उपकार है। ६५.

✻

गुरुदेव अद्भुत प्रतापी पुरुष थे। भारत के जगमगाते सूर्य थे। हमारे तारणहार थे। तारणहार चले गये, भक्तों को आज तारणहार का असह्य विरह पडा। भक्तों को तो ऐसा ही भाव रहता है कि हमारे तारणहार गुरुदेव शाश्वत बिराजमान रहें ! परंतु कुदरत के क्रम अनुसार गुरुदेव ने द्रव्य-अपेक्षा शाश्वत रहकर, पर्याय अपेक्षा से देव-पर्याय धारण कर ली, हमलोगों से बहुत दूर क्षेत्र में बिराजमान हो गये। हमें तो तारणहार के पावन दर्शन सत्संगादि अप्राप्य हो गये, क्या करें ?

उपकारमूर्ति गुरुदेव को परम भक्तिपूर्वक हृदय में बिराजमान

करके, उनकी आज्ञा को हमेशा ऊर्ध्व ही रखकर, उनकी आज्ञानुसार जीवन जीना यही सच्चा कर्त्तव्य है। वह कार्य करने से शीघ्र ही इस भयंकर दुःखों से प्रज्वलित संसार से छूटकर, शाश्वत अविचल धाममें पहुँच जायेंगे। ६६.

गुरुदेव की बीज (वैशाख सुदी दूज, जन्मजयंति) गई न ! अतः बीज की ही भनक सुनाई देती है। गुरुदेव का जन्म बीज के दिन हुआ, बीज के बाद पूनम होती है है, वैसे गुरुदेव ने भीतर में सम्यक्त्व की बीज उगायी (प्रगटाई), तो अब आत्मा पूर्ण स्वरूप होगा ही। गुरुदेव ने मार्ग बताया है। आत्मा का हित करने के लिये उस मार्ग पर चलना है। ६७.

शास्त्रों में भरे गहन भावों को खोलने की पूज्य गुरुदेव की शक्ति कोई गज़ब की थी। उन्हें श्रुत की लब्धि थी। व्याख्यान में निकलते गंभीर भाव सुनते हुए कईबार ऐसा लगता कि यह तो क्या श्रुतसागर उछला है ! ऐसे गंभीर भाव कहाँ से निकलते हैं ? गुरुदेव की जैसी वाणी कहीं नहीं सुनी। उनकी अमृतवाणी की झंकार कितनी मीठी थी ! ऐसा लगता सुनते ही रहें। अनुभवरस से सराबोर गुरुदेव की ज़ोरदार वाणी की ललकार कोई अलग ही थी। पात्र जीव का पुरुषार्थ जगाये और मिथ्यात्व को चूर-चूर कर दे ऐसी दैवी उनकी वाणी थी। हमारा सौभाग्य है कि गुरुदेव की यह मंगलमय कल्याणकारी वाणी टेप में उतर गई और जीवंत रह गई, गुरुदेव ने बहुत स्पष्ट करके बताया है। गुरुदेव का परम उपकार है, मैं तो उनका दास हूँ। गुरुदेव ने इस मुमुक्षु समाज पर अपार उपकार किया है। ६८.

गुरुदेव का तो परम उपकार है। देव-शास्त्र-गुरु की महिमापूर्वक चैतन्य की परिणति अंदर से प्रगट करनी चाहिये। ज्ञायक, ज्ञायक ज्ञायक का पुरुषार्थ और इसकी स्वानुभूति ही प्रगट करने जैसी है। उसका निरंतर अभ्यास, उसकी लगन और उसका वारंवार प्रयत्न करना चाहिये। गुरुदेव ने तो चारों पहलुओं से मार्ग दर्शाया है। इतना स्पष्ट करके बताया है कि, कहीं भूल न रह जाये। परंतु पुरुषार्थ तो खुदको ही करना है। ६९.

गुरुदेव तो सहज प्रतापी पुरुष थे, उनके प्रताप से चारों तरफ स्वानुभूति के मीठे सूर बजते रहते हैं। यहाँ चारों तरफ गुरुदेव की शीतल छाया छा गई है। यहाँ तो भगवान की, जिनेन्द्रमंदिरों की और गुरुदेव की मंगल छाया में जीवन बीत रहा है। जगत में ऐसे गुरुदेव का सान्निध्य मिलना मुश्किल है। गुरुदेव जहाँ विचरे हो वह भूमि का मिलना मुश्किल है। गुरुदेव का सान्निध्य और उनकी मंगल प्रभा जहाँ फैली हो, यह सब मिलना मुश्किल है। सम्यक्मार्गप्रकाशक कृपालु गुरुदेव का अपार उपकार है। ७०.

गुरुदेव ने फरमाया है कि एक ज्ञायक को पहचानो। गुरुदेव ने बहुत सुनाया है, मैं क्या बोलूँ ? गुरुदेव का परम उपकार है, इस भरतक्षेत्र में चैतन्य का पूरा स्वरूप गुरुदेव ने समझाया है। इस पंचमकाल में, इस विषमकाल में गुरुदेव का जो जन्म हुआ, यह महाभाग्य की बात है। गुरुदेव यहाँ पधारें और 'चैतन्य कोई अपूर्व है' ऐसी इसकी अपूर्वता बताई, उसकी ओर अंतरदृष्टि करने की (बात) समझाई, यह गुरुदेव का परम उपकार है। ७१.

गुरुदेव से जो सुना है उसे जुगालना (परिणमन में लाने का प्रयत्न करना)। ध्येय एक शुद्धात्मा का ही रखना, उसी हेतु से वांचन-विचार कर्त्तव्य है। शुद्धात्मा को पहचानकर, उसका अवलंबन लो ! तद्रूप परिणति करने का गुरुदेव कहते थे। अनादि काल से यह जीव शुभाशुभ भाव करता आया है। अब तो शुद्धात्मा को ग्रहण कर। अनंत जीवों ने शुद्धात्मा के मार्ग पर चलकर, शुद्धात्मा को साधकर अंतर समाधि को साध्य किया है। तू भी उसी मार्ग पर चल। ये गुरुदेव की सीख थी। गुरुदेव के सान्निध्य में निवृत्ति लेकर यहाँ रहें, तो अब निवृत्तिस्वरूप इस आत्मा के निवृत्तिस्वभाव में दृष्टि देकर निवृत्तिपंथ को उजागर करने योग्य है। इसी में मनुष्य भव की सफलता है। ७२.

✻

पूज्य गुरुदेवश्री कहते थे और आचार्य भगवान भी कहते हैं कि, अहो ! जिनमार्ग के प्रणेता हम मौजूद हैं, वैसे सचमुच गुरुदेव जैसे प्रणेता हमें मिले (यह सबका अहोभाग्य है।) ७३.

✻

गुरुदेव के बरसों के स्मरण यहाँ मौजूद हैं। बहुत सालों के संस्कार होने से सब स्मरण में आ जाता है। व्याख्यान का टाइम हो गया, देर हो रही है। पूज्य गुरुदेव का आहार का टाइम हो गया... दूध ले जाने का टाइम हो गया, इत्यादि सब याद आता है। महापुरुष के संस्मरणों का विस्मरण करने योग्य नहीं है, ये तो हृदय में रहा ही करते हैं। फिर भी गुरुदेव तो गये... सो गये... ७४.

✻

अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री के कैसे अद्‌भुत पुरुषार्थ प्रेरक वचन

! उनका आत्मा ही कोई अलग था। उनके भीतर में तो चैतन्य का सागर उछला है; मन-वचन-काया से अगोचर ऐसा पुरुषार्थ जगाया है। ७५.

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन और तर्कसंगत न्याय इतने रसकस से भरपूर कि इसके अलावा दूसरा सब बिलकुल फीका-फीका ही लगे, इसलिये मुझे अंदर से कहीं रस आता ही नहीं। इसीमें जीवन एकमेक हो जाये। पूज्य गुरुदेवश्री के अंतर को स्पर्श करती हुई वाणी और कहाँ से मिले - ? उनकी भाषा भी जैसे अलग ही लगे। एक ही एक गाथा भी जब सुने तब नये - नये भाव, नई-नई स्पष्टता ही निकलती रहती। ७६.

पूज्य गुरुदेव की गरज़ती वाणी; ऐसी दिव्यध्वनि कई बरसों तक बरसाई इसके जैसा और क्या सौभाग्य ! जीवों को द्रव्यदृष्टि मिली। सब जीव क्रिया में पड़े थे, वहाँ से यहाँ लाये। तेरे नेत्र खोलकर इस तरफ देख ! इस तरफ झुक जा। यह एक ही करना है। वहीं पहुँचना है। तेरे पास ही है। कहीं ढूँढ़ने जाना पड़े ऐसा नहीं है। तुम ही हो... वह कैसा रत्नाकर है, यह सब बतलाया। सब को द्रव्य पर पहुँचा दिया..... सब अपनी शक्ति अनुसार करते हैं। ७७.

अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री व्याख्यान में कितना कहते हैं ! उनकी वाणी का ऐसा प्रपात ! सूक्ष्म से सूक्ष्म बात भी कितने रसपूर्वक कही है ! प्रसन्नतापूर्वक कहते हैं। शास्त्र के कितने सूक्ष्म न्याय खोलते हैं और फिर ऐसा भी कहते हैं कि इसका अर्थ गणधरदेव

करते हो और श्रुतकेवली उसका श्रवण करते हो वह धन्य है ! दिव्य-ध्वनि छूटती हो ऐसे व्याख्यान आते हैं। गुरुदेव की वाणी सुनकर (दूसरों की) परीक्षा हो जाती है। जो श्रवण करें उसका विचार करें तो मार्ग की स्पष्टता हो जाती है। ७८.

❋

पूज्य गुरुदेवश्री पुरुषार्थ की प्रेरणा देते हुए कितना कुछ कहते हैं ! कोई कमी नहीं रखते। सबको पूज्य गुरुदेवश्री सब तैयार करके परोसते हैं। दूसरे-दूसरे अन्यमत में क्या आता है, यह भी देखने नहीं जाना पड़ता। सारे अन्यमतों का अति स्पष्टतापूर्वक निराकरण हो जाता है। कहीं भी देखने या ढूँढ़ने जाना नहीं पड़ता। अभी तो सब कुछ तैयार करके ही कहते हैं। कर्ता, ज्ञाता, द्रव्य-गुण-पर्याय; दृष्टि का विषय, सब एकदम स्पष्ट कर-करके देते हैं। व्याख्यान कितने स्पष्ट आते हैं ! जीव की कोई भूल ही न रहे, निरंतर दो-दो घंटे वाणी का प्रवाह बरसता है। आपको तो सिर्फ संस्कार ही दृढ़ करने हैं। गले से उतारने का काम तो खुदको ही करना है। ७९.

❋

उनका दिखाव ऐसा (सर्वांग सुंदर), उनकी वाणी इतनी (रसमय), उनके कार्य, उनके उपदेश के कार्य, वरना तो भरतक्षेत्र में कोई माने ही नहीं। उनके सभी कार्यों से जैसे भगवान ही लगे ऐसा था। उनकी वाणी में अतिशयता, वाणी का ज़ोरदार प्रवाह बरसता था, उनका दिदार ऐसा कि लोग उन्हें देखकर थम जाते, ये कौन संत हैं ? देखनेवाले को ऐसा लग जाये - वैसा दिदार (ऐसी उनकी प्रभावशाली प्रतिभा) ! उनकी मुद्रा अलग, उनकी वाणी अलग, सिंह जैसी पराक्रमयुक्त उनकी वाणी... भगवान ही थे ! भगवान

मानते थे वह ये सब गुणों की वज़हसे, मार्ग का प्रकाश किया, साक्षात् भगवान जैसे ही कार्य, ऋषभदेव भगवान की वाणी छूटी, उन्होंने कहा कि मरीचिकुमार का जीव तीर्थंकर होगा, पूज्य गुरुदेव को तो तीर्थंकर होने में अभी देर है, लेकिन उनके कार्य सब तीर्थंकर जैसे, दिखाव ही ऐसा कि ये भगवान हैं। वे भगवान ही होनेवाले हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री विहार में जाते तब स्वागत में सब पंडित ऐसा कहते थे कि पूज्य गुरुदेवश्री तीर्थंकर होंगे। उनकी वाणी तीर्थंकर जैसी। एक शब्द में पूरा ब्रह्मांड खड़ा कर देते। जैसे भगवान की वाणी में अनंत रहस्य आता है वैसे पूज्य गुरुदेव की वाणी में एक शब्द में कितना रहस्य आ जाता था ! ८०.

✱

पूज्य गुरुदेव का पंचमकाल में तीर्थंकरवत् उपदेश है। उनके समीप अंतेवासियों का दुःख खड़ा नहीं रहता। जिनकी योग्यता नहीं है वे दूर रहते हैं। गुरुदेव को सच्चे अंतःकरणपूर्वक जो स्वीकार करता है वह भले ही क्षेत्र से दूर रहे, परंतु भाव से समीप है। भव्य जीवों का ही यहाँ प्रवेश होता है। योग्यतावान जीव यहाँ आते हैं। ८१.

✱

``गुरुदेव थे वह सोनगढ़ की रोनक ही कुछ और थी।''

प्रभु ! एकबार आप पधारो... पधारो... गुरुदेव !

तो पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि बहुत सालों तक वाणी बरसाकर आया हूँ। मैं तो सबको वाणी देकर आया हूँ। शास्त्र के अर्थ भी सारे स्पष्ट किये हैं। अब होंगे सब अपने आप तैयार... ८२.

✱

विहार का विकल्प... लोग तत्त्व कैसे समझें इसका विकल्प रहता था। विहार का मार्ग लंबा हो तो भी थकते नहीं। लोगों के प्रति अतिशय करुणा... उनका स्वाध्याय निरंतर चलता। शास्त्र हाथ में हो और आँखें बंद करके विचारमग्न होकर बैठे हों ! यह सब प्रत्यक्ष देखते थे, वह सब अभी तो सिर्फ स्मरण करने का वक्त आ गया ! ८३.

✳

यहाँ गुरुदेवश्री हाज़िर थे... वह काल स्वप्न हो गया। प्रत्यक्ष दर्शन होते थे इसके बजाय अब स्वप्न में दर्शन होने पर संतोष मानने का वक्त आ गया। पूज्य गुरुदेवश्री चले गये... वह स्वप्न जैसा लगता है। पूज्य गुरुदेव की मौजूदगी का समय लंबा था इसलिये उसीकी याद आती है। पूज्य गुरुदेव यहाँ से चले गये, यह सत्य लगता ही नहीं। पूज्य गुरुदेव गये वही स्वप्न है। दिव्यध्वनि के सुनानेवाले थे, वे स्वयं दिव्यध्वनि सुनने के लिये पहुँच गये ! ८४.

✳

जगत में सर्वोत्कृष्ट भगवान - गुरुदेव तीर्थंकर का द्रव्य, सबको जागृत करनेवाला द्रव्य था। दिव्यध्वनि के मीठे मधुरे नाद से अनेकानेक आत्माओं को जगाया। दूसरे आत्मा को नया जन्म, नई पर्याय प्रगट होती है। शुभाशुभसे छूटकर शुद्धात्मा में उसका जन्म हो जाये। चैतन्यमय पर्याय का नया ही जन्म करानेवाले, खुद को तो प्रगट हुआ किन्तु दूसरे को शुद्धपर्याय प्रगट करा दे ऐसा सर्वोत्कृष्ट द्रव्य था, निमित्त थे, महा निमित्त थे। ऐसे महान आत्मा गुरुदेव ने सब कुछ बताया है। ``शुद्ध पर्याय प्रगट कर... शुद्ध पर्याय प्रगट कर'' ऐसा डंका बजानेवाले थे। ८५.

✳

पूज्य गुरुदेवश्री इस कर्ता-कर्म अधिकार के विषय में कई बार फरमाते हैं कि जो भी यह अधिकार पढ़कर अंतर से उसका रहस्य समझेगा उसकी अनादि से जो कर्तृत्व की बुद्धि है उसका नाश हो जायेगा, समयसार का यह सर्वोत्कृष्ट अधिकार है। ८६.

अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री का उपदेश - वाणी में इनकी अतिशयता, इनकी श्रुत की धारा अलग ही थी। लोगों को वह असर कर जाती है। पंडितों को, विद्वानों को, सबको ऐसा ही ले कि सुनते ही रहें। धीरे-धीरे प्रचार तो पूरे भारत में सर्वत्र फैल गया। लायक जीवों को तत्त्व की बात - यथार्थ वस्तु मिल गई। वरना तो द्रव्य-गुण-पर्याय का नाम भी कौन जानता था ? अहो ! किसीकी कोई भूल न रह जाये उतना स्पष्ट किया है। ८७.

चैतन्य प्रगट होने का धन्य दिन गुरुदेव के प्रताप से प्राप्त हुआ। यदि गुरुदेव न मिले होते तो इस पामर को मुक्ति का मार्ग कहाँ से मिलता ! यह सब गुरुदेव का परम - परम प्रताप है। ८८.

गुरुदेव कहते थे, ज्ञानस्वभावी आत्मा का निश्चय करके अंदर में जा। यह समयसार की गाथाओं के अर्थ कौन समझता था ! सभी अर्थ पूज्य गुरुदेव ने ही स्पष्ट किये हैं। उन्हें श्रुत की इतनी महिमा थी कि प्रत्येक शब्द के अर्थ करते थे। `ज्ञानस्वभाव का निर्णय करके' ऐसे शब्द आये तो आचार्यदेव क्या कहना चाहते हैं, और फिर सब प्रकार से उपादान-निमित्त निश्चय-व्यवहार सब किस तरह होते हैं, यह अत्यंत स्पष्ट करते थे। टीका के एक-

एक शब्द की स्पष्टता करते थे। यह सारा उपकार उन्हीं का है। इससे सब विस्तारपूर्वक जीवों की समझ में आ सका है। ८९.

जिनेन्द्रदेव प्रगट करके वाणी बरसाते हैं, वाणी अलग, मुद्रा अलग, जगत से निराले.. दैवी हैं। आश्चर्यकारी आत्मा को बताते हैं। वैसे गुरुदेव उतने ही वीतरागभाव से व गहराई से कहते कि जिससे चैतन्य चमत्कार की मुहर लग जाती है। जैसे स्यादवाद जिनवाणी की मुहर है वैसे चैतन्य-अंकित मुद्रा, यह गुरु की मुहर है। चैतन्यमुद्रा से अंकित ऐसे आत्मा को आमंत्रण देते हैं। गुरु के शब्द सुनकर आश्चर्य हो जाता है। जैसे कोई कहे राजमहल देखा तब गुरुदेव कहे आत्मा देखा ! ९०.

पंडित लोग आत्मा की बात छोड़ देते थे, आत्मा की महिमा व रहस्य समझ नहीं सकते थे, यह तो निश्चय की बात है, ऐसा कहकर छोड़ देते थे। पूज्य गुरुदेव ने धर्म के मूल संबंधित बात कही। आत्मा समझना यह मूल बात और तत्त्वज्ञान की, स्वानुभूति की सारी बातें समझाई। पूज्य गुरुदेव के प्रताप से मुमुक्षु, आत्मा कैसे प्राप्त हो, स्वानुभूति कैसे प्रगट हो ! ध्रुव कैसे समझ में आये, बाह्यक्रिया में धर्म नहीं है, ज्ञायक में है, ऐसा कहते हैं; कारण परमात्मा, कार्य परमात्मा, स्व-पर प्रकाशक की चर्चा करते हैं।

आत्मार्थी को मैंने बहुत वांचन किया, ज्यादा बोलना आता है, मैं बहुत समझ गया, ऐसा नहीं होता।

आत्मा ज्ञानस्वभाव है, परभाव से भिन्न है। बहुत कुछ दिया है उसे जीवन में उतारने जैसा है। गुरुदेव से विशेष कोई दे नहीं सकेगा। मुझे तो ऐसा होता है कि ``देव-शास्त्र-गुरु विना रमत रमवी

नथी'' गाते-गाते हृदय भर जाता है; परंतु पंचमकाल में गुरुदेव का सान्निध्य मिला, इसलिये संतोष रहता है, जिसको गुरुदेव मिले, उसका आत्मा जागृत हुए बिना रहे नहीं (रह सके ही नहीं)। ९१.

यहाँ स्वाध्यायमंदिर के पास नीम के पेड़ के नीचे बैठकर पूज्य गुरुदेवश्री स्वाध्याय करते थे, वह दृश्य बहुत सुंदर दिखता था। पहले सभी शास्त्र हिन्दी में थे उसे पढ़ते थे। पूज्य गुरुदेवश्री को तो श्रुत की लब्धि प्रगट हुई है। हज़ारों शास्त्रोंका अभ्यास है।

गुरुदेव का दिखाव तो इतना सुंदर कि हजारों लोगों के समूह में भी गुरुदेव अलग दिखायी देते। पहले छोटे थे तब लंबा शरीर, सुदृढ़ देह, अपने हाथों से लोच करते, चलते हुए विहार करते - शास्त्र के अनुसार सभी आहारादि की क्रियाओं का एकदम कड़ा पालन करते। ९२.

उन्होंने दुनिया की कोई दरकार नहीं की। संप्रदाय में उनकी कितनी प्रतिष्ठा थी ! व्याख्यान में लोगों का समूह उमड़ पड़ता, परंतु वह सब छोड़ दिया। प्रवचन में आलपीन गिरे तो भी आवाज़ सुनाई दे इतनी शांति रहती, ज़गह पाने के लिये लोग (सुबह) पाँच बजे दरी बिछा देते थे। (संप्रदाय में विरोध था परंतु मर्यादित और सज्जनतावाले लोग थे।) पूज्य गुरुदेव तो प्रत्येक प्रसंग में सिंह की माफिक निडरतापूर्वक विचरते थे। ९३.

पंचमकाल में वाणी बरसाई, कोई मार्ग जानते नहीं थे। जीवों का मार्ग पलट दिया। यह स्वाध्यायमंदिर, साधना की भूमि है। गुरुदेव (जैसे कि) बुला रहे हैं कि, ``यहाँ आओ यहाँ आओ।'' गुरुदेव

का उदय स्वयं तीर्थंकर का द्रव्य, इसलिये सभी जीवों को बुलाते हैं कि यहाँ आओ... आओ। आपका हित यहाँ है। तीन लोक के जीव यहाँ आओ। तीनों लोक के जीवों को बुलाते हैं। अतः जो सर्वोत्कृष्ट जीव है उसे ऐसा विचार आता है, भावना स्फुरायमान होती है, स्वयं तीन लोक में सर्वोत्कृष्ट द्रव्य हैं, वे तीन लोक के जीवों को बुलाते हैं, टंकार करतें हैं। यहाँ आओ रे यहाँ आओ। यहाँ आपका स्थान है। यहाँ आओ। ९४.

गुरुदेव की मुद्रा पराक्रमी शूरवीर सिंह जैसी, कायरता का नाम नहीं। जैसा बोलते वैसा होता ऐसा अटल व्यक्तित्व था। उनके प्रवचन तो कैसे गरज़ते थे ! ९५.

गुरुदेव तत्त्व की बात कहते थे। वे कहते : आचार्यदेव ऐसा कहते हैं, भगवान ऐसा कहते हैं। गुरुदेवश्री कुंदकुंदाचार्य को हमेशा ऊर्ध्व रखते थे। भगवान ऐसा कहते हैं, ऐसा तो एक घंटे में कितनी दफा कहते थे। ९६.

(गुरु भक्ति के गीत बनाते वक्त इसकी इतनी धुन रहती कि शरीर की क्रिया में क्या होता है इसकी ख़बर नहीं रहती।) अपने लिये तो एक सद्‌गुरु और एक आत्मा। और क्या चाहिये ? - बस इतना ही चाहिये। हम तो क्या भक्ति करेंगे ? हम कहाँ उनकी भक्ति करने में समर्थ हैं ? आचार्यदेव कहते हैं कि बालक को पूछा जाये कि समुद्र कितना बड़ा ? तो वह अपने दोनों हाथ पसारकर बतायेगा। आचार्यदेव की भक्ति... उनकी शक्ति... इनके आगे हम तो क्या कर (सकते हैं)। ९७.

गुरुदेव (समयसार की) छठी गाथा का अर्थ कैसा (सुंदर) करते थे ! आचार्यदेव ने प्रमत्त-अप्रमत्त की अपनी दशा से बात उठाई है। मैं संयोगी या अयोगी नहीं हूँ - ऐसे नहीं, परंतु मैं प्रमत्त या अप्रमत्त नहीं हूँ, वहाँ से बात उठाई है। स्वयं प्रमत्त-अप्रमत्त में झूलते थे। परंतु कहते हैं कि प्रमत्त-अप्रमत्त कुछ नहीं है, मैं तो एक द्रव्य हूँ। गुरुदेव जो अर्थ करते हैं वह कोई अलग (अलौकिक) ही करते हैं। ९८.

पूज्य गुरुदेव के उपकार की क्या बात करें ? उन्होंने तो एक-एक शब्द का अर्थ किया है। एक-एक शब्द की गहराई को नापी है। सबका गहराईपूर्वक अर्थ किया है। गुरुदेव ने यदि ऐसे अर्थ नहीं किये होते तो समयसार का एक शब्द भी कौन समझ सकता ? कर्ता-कर्म अधिकार को समझने की शक्ति किसमें थी ? ९९.

यह (सोनगढ़) गुरुदेव की पावन भूमि है। सब मंदिरों की अपनी विशेषता है। मंदिरों की वज़ह से तीर्थ सा लगता है। मंदिर में पूजा-भक्ति-स्वाध्याय होता है। बहनें एकांत में जंगल में नहीं जा सकती इसलिये ये जो अलग-अलग मंदिर हैं वहाँ खुद एकांत में स्वाध्याय कर सकती है। सौराष्ट्र में भी पूज्य गुरुदेव के प्रताप से अनेक ज़गह मंदिर हुए।

बहुत से शास्त्र भी प्रसिद्धि में आये। कुदरत के योग में जो बनना होता है वह बनता है। किसको किससे लाभ होना ? यह सबका अलग-अलग प्रकार होता है। प्रवचन में छोटे-बड़े, सब शास्त्र लेकर बैठते। सब ने घर में भी काफी शास्त्र बसायें हैं। गुरुदेव साक्षात् बिराजमान थे इसलिये सबको काफी लाभ मिला। प्रवचन

का - आहारदान इत्यादि लाभ मिले। गुरुदेव के चरण में अभी भी जो आता है वह गुरुदेव के चरण में ही है। गुरुदेव का प्रताप वर्त रहा है। १००.

✣

रामजीभाई, नानालालभाई सब गुरुदेव के प्रति भक्तिवंत थे। `हम आपको छोड़ेंगे नहीं, चाहे जो हो, सर काटके क्यों न देना पड़े' ऐसा हमने गुरुदेव को कहा था। कुछएक बहनें अपनी जीवनपूँजी कहीं गुरुदेव के निमित्त से ज़रुरत पड़े तो देने के लिये तैयार थी। जंगल में कोई संत रहते हों ऐसी वह टेकरी लगती थी। हीराभाई के बँगले में एकदम एकांत व शांति थी। १०१.

✣

भगवान के समवसरण में सभी देव जाते हैं। गुरुदेव वहाँ जाते होंगे, वहाँ सब इकट्ठे होते हैं। पुरुषार्थ करे तो पहुँच जाये। (जो) बड़े देव हों, उनकी वाणी अलग होती है ! उनका स्थान अलग रहता है ! गुरुदेव को यहाँ श्रुत का रंग बहुत था और वहाँ भी श्रुतज्ञान की चर्चा करते होंगे, तो वैसे दर्शन-वाणी का योग वहाँ बैठ जाता है। भावना उग्र हो तो गुरुदेव जहाँ है उस देवलोक में जा सकते हैं। १०२.

✣

गुरुदेव ने ४५-४५ सालों तक हृदय में जो सिंचन किया है वह सब के हृदय में गहराई तक बस गया है। हृदय में जो सिंचन हुआ है वह कहीं नहीं जायेगा।

केवलज्ञान की पर्याय भी हेय है यह कौन कह सकता है! उपादेय त्रिकाली द्रव्य है। केवलज्ञान एक समय की पर्याय है; वह शाश्वत् द्रव्य नहीं है। गुरुदेव के अलावा और कौन इतनी ज़ोरदार

बात कह सकता है ! १०३.

गुरुदेव ने ऐसी प्रभावना की है कि एक देखो और एक भूलो। गुरुदेव थे उस वक्त भी विभिन्न प्रकार की प्रभावना हुई है। धवल शास्त्र बरसों से प्रसिद्धि में नहीं आये थे, वे सारे गुरुदेव की मौजूदगी में प्रसिद्ध हुए। पोन्नूर और कुंदाद्रि तीर्थ भी गुरुदेव की मौजूदगी में प्रसिद्धि में आये। कोई इन तीर्थों को नहीं जानता था। पूरे हिन्दी प्रदेश में बदलाव लाया है तो वह गुरुदेव ने ! १०४.

(पूज्य गुरुदेव) कहीं भी नहीं उलझते, सब देखते रहते। वे तो कहते कि मैं छोटे से काम का बोझा भी सिर पर नहीं रखता। प्रवचनसार में आता है न कि मुनि कोई भी काम का बोझा अपने सिर पर नहीं लेते। स्वाध्यायमंदिर बनाया तब गुरुदेव ने कहा था कि आप ऐसा मत मानना कि ये बनाया इसलिये हमें यहाँ रहना ही होगा, नहीं रहना होगा तो मैं चला जाऊँगा। १०५.

जीव चाहे कितने भी उपवास करके, बाहर की कितनी भी क्रियाएँ करके भी जिस ध्येय तक नहीं पहुँच पाता, वह प्रत्यक्ष गुरु की महिमा से, गुरु के एक शब्द से क्षण में होता है। १०६.

भगवान विहार करते हैं तब देव चरणचिह्न की रचना करते हैं, (मुंबई) दादर में चरणचिह्न रखे थे। (जैसे भगवान) जहाँ पैर रखें वह सोने का हो जाये वैसे पूज्य गुरुदेव जन्मजयंति के दिन उस चरणचिह्न पर पैर रखें कि वह पावन हो जाये। मलाड़ में (भी जन्मजयंति के वक्त) कमलाकार सिंहासन बनाया था। उसमें

जब गुरुदेव बिराजते थे तब कैसे अलग ही लगते थे, जैसे कि साक्षात् समवसरण !

बाहरगाँव जाते वहाँ स्वागत में गुरुदेव जब पधारते तब हाथी फूल की माला से स्वागत करते थे।

जैसे इन्द्र कहते हैं कि ऋषभदेव भगवान जिस नगरी में बिराजते थे उस नगरी की शोभा ही कुछ और थी। वैसे यहाँ भरतक्षेत्र में गुरुदेव बिराजते थे, यह गुरुदेव से ही शोभायमान था। १०७.

गुरुदेव के कितने प्रवचन हुए हैं ! जैसे ज्ञान पूरा लिखा नहीं जा सकता, वैसे ही गुरुदेव के प्रवचन लिखने जाये तो पूरे न हों, कितने भी लिखने पर पूरे न हों, इतने प्रवचन और अर्थ किये हैं। १०८.

इन्द्र भगवान की १००८ गुणों से स्तुति करते हैं। हे भगवान ! आप ऐसे हैं, ऐसे हैं। वैसे गुरुदेव की स्तुति भी जितने शब्दों से करें, कम है। १०९.

आचार्यदेव तो जंगल से आकर कभी-कभार उपदेश देते हैं; गुरुदेव तो भेदज्ञान की बातें हमेशा करते थे। 'द्रव्यदृष्टि कर, तुम ज्ञायक हो, अंतर में आनंद है।' गुरुदेव तो निरंतर वाणी बरसाते थे। मुनि तो विकल्प आये तो उपदेश देते हैं, यहाँ तो हमेशा वाणी बरसती थी। अमृत का मुसलाधार प्रवाह बरसता था। ११०.

गुरुदेव के लिये जितना करें उतना कम है। गुरुदेव साक्षात् बिराजते थे वह बात ही कुछ और थी। महावीर भगवान का जन्मदिन

मनाया जाता है तब ऐसा लगता है कि महावीर भगवान का जन्म आज ही हुआ। वैसे गुरुदेव के जन्मदिन पर ऐसा लगता है कि जैसे गुरुदेव का जन्म आज ही हुआ।

ॐ गुरुदेव के हृदय में आया यह आश्चर्य ! उन्हें अंदर से ही आया था। वह किस जाति का ॐ आया होगा कि जिसकी उन्हें इतनी मस्ती थी ! ॐ सुनकर आये इतना ही नहीं परंतु ॐ उन्हें अंदर से आता था। १११.

मैंने गुरुदेवश्री को निवृत्ति के हेतु कहा था कि मुझे दीक्षा लेनी है। पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा कि, क्या दीक्षा - ? अरे ! मुझे तो दीक्षा छोड़ने के भाव हैं।

प्रथम तो गुरुदेवश्री सिंह जैसे लगते। उनकी रूममें बैठे हों, पढ़ते हों तो लगे जैसे महापराक्रमी सिंह बैठा हों, इतना उनका तेज निखरता था, ताप लगता था। उनके सामने देखने की या समीप जाने की हिम्मत ही नहीं चलती। बहनें तो उनकी रुममें कदम भी नहीं रख सकती। ११२.

पूज्य गुरुदेव ने मार्ग को स्पष्ट करके दिया, किसीको कहीं भी शंका न रहे, इतना स्पष्ट किया है। तैयार करके दिया, निवाला करके दिया, गले तो खुद को ही उतारना है न ! एकदम स्पष्ट व सरल करके समझाया है। प्रयोग तो खुदको करना है। शास्त्र के रहस्य सरल कर दिये, `द्रव्यदृष्टि कर, भेदज्ञान कर,' बाहर में व्यर्थ प्रयत्न मत कर, अब भेदज्ञान का प्रयोग जो भीतर में करना है वह कर। ११३.

गुरु तो उम्र में बड़े व गुण में बड़े होते हैं। मुझे तो ऐसा प्रसंग महाविदेह में बना और यहाँ भी बना। गुरुदेव चले गये। विदेह में राजकुमार पाटलीपुत्र बड़े थे। वहाँ मित्र थे। मित्र होनेसे कभी मिल जाते, इसलिये वहाँ वियोग का इतना दुःख नहीं लगता। यहाँ तो गुरु-शिष्य का संबंध विशेष था, इसलिये गुरु का विरह बहुत ही लगता है। गुरुदेव देवलोकमें से महाविदेह में भगवान की दिव्यध्वनि सुनने गये होंगे तो वहाँ के लोगों को लगा होगा कि हमारे राजकुमार भरतक्षेत्र में धर्म का उद्योत करके वापिस पधारे। ११४.

✻

(अभी) पूज्य गुरुदेव वैमानिक देव में बड़े देव हुए हैं। इन्द्र नहीं परंतु इन्द्र जैसे देव हैं। इन्द्र जैसी ऋद्धि है। इन्द्र देवों को हुक्म करते हैं परंतु गुरुदेव ऐसे देव हैं कि उन्हें हुक्म नहीं करते। वहाँ उत्कृष्ट आयु ७ सागर की है। अतः भावना ऐसी करनी है कि गुरुदेव की समीपता हो जाये, गुरुदेव ने शुद्धात्मा को ग्रहण करने का कहा है। वैसा करने से समीपता मिलती है। केवल (विकल्प से) भावना भाने से समीपता नहीं मिलती। ११५.

✻

पूज्य गुरुदेव की अर्थ का विस्तार करने की शक्ति, (ऐसी !) सहजरूप से धारा बहती ही चली जाये; एक-एक गाथा, कितने दिन तक चलती, थकते ही नहीं, रहस्य निकलते ही रहते... सिद्धांत का आशय व्यक्त करने की शैली, और वाणी इतनी रसीली कि जैसे सुनते ही रहें, सुननेवाला वाणी सुनते हुए मंत्र-मुग्ध हो जाता ! स्थानकवासी में थे तब भी प्रवचन के दौरान श्रोता उनकी वाणीरूपी बंसरी से झूमने लगते। ११६.

✻

(गुरुदेव सबको बुलाते) `यहाँ आओ,' `यहाँ आओ,' - यहाँ परमात्मा बिराजते हैं।

मरीचि के जीव को नैगमनय से तीर्थंकर कहा जाता है वैसे पूज्य गुरुदेव के सब कार्य तो ऐसे कि उन्हें तो नज़दीकी नैगमनय लागू हो जाये। तीर्थंकरत्व यहाँ से ही शुरू हो गया। अब आगे सब तीर्थंकर के नज़दीकी भव हैं ! ११७.

इन्दौर के हुकमचंदजी सेठ को गुरुदेव के प्रति बहुमान था। `सोनगढ़ के कौओं का भी यहाँ स्वागत है - ऐसा वे कहते थे। सर्व प्रथम यहाँ आये तब पूज्य गुरुदेव को मिलते ही इतना आनंद हुआ था कि जैसे गुरुदेव को गले लगाने के लिये आये हों !! यहाँ प्रवचन में गुरुदेव को कहते थे कि, महाराज ! आपकी समकित की बात ये मिथ्यादृष्टि जीव नहीं समझेंगे। गुरुदेव की मुद्रा से ही सब उन्हें पहचान लेते। चलते हों तब अलग ही दिखते। गुरुदेव तो गुरुदेव ही थे। महापुरुष के सभी गुण उनमें थे। दैवीपुरुष थे। बाहर में किसीकी परवाह नहीं करते, चाहे बड़ा सेठ हो या पंडित हो। ११८.

गुरुदेव द्रव्य-गुण-पर्याय की बहुत-सी सूक्ष्म-सूक्ष्म बातें करते थे। चारों पहलुओं से सिद्धांत की बात कहते थे। `द्रव्य है सो द्रव्य है, उसकी दृष्टि करनेवाला सम्यक्‌दृष्टि है। गुण है सो गुण है, पर्याय है सो पर्याय है। इसका यथार्थ ज्ञान होना चाहिये।' ११९.

पूज्य गुरुदेव को कितना ज्ञान था ! फिर भी गुरुदेव आचार्य को ऊर्ध्व रखते थे। आचार्यदेव जिनेन्द्रदेव का आधार देते हैं। गुरुदेव

आचार्यदेव को ऊर्ध्व रखते हैं। शास्त्र के पाठ व पंक्ति निकालकर आधार देते थे। हमलोग तो सब गुरुदेव से सीखे हैं। गुरुदेव ने सबको तैयार कर दिया है। १२०.

पूज्य गुरुदेव हीराभाई के बँगले पर प्रवचनसार पढ़ते थे तब ऐसा लगता था कि अहो ! गुरुदेव को भीतर में श्रुत के सागर उछलते हैं। उत्पाद-व्यय की चर्चा... सब सूक्ष्म लगता था। पहली बार पढ़ा तब भीतर से स्वयं उछल जाते, और आश्चर्यकारी लगता था। फिर बाद में तो केवल तत्त्व - मक्खन ही आता था। घोलन बहुत ही बढ़ गया है। अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग था। १२१.

पूज्य गुरुदेव वारंवार तत्त्व की महिमा दर्शाते हैं उस तरफ कदम बढ़ा ! चैतन्य को ग्रहण कर, ऐसा वारंवार कहते हैं यानी कि इस तरफ आ, वहाँ की ओर कदम भर, तो उस तरफ गति होगी। चैतन्य के नेत्र खुल जाने पर खुले हुए नेत्रों से तुझे यह दुनिया अलग दिखेगी। स्व-पर की एकता में सब स्थूल दिखता है। सूक्ष्मदृष्टि से देखनेवाला द्रव्य को देखता है। द्रव्य शुद्धता से भरा है, वह तेरे प्रयत्न से ही प्रगट होगा। १२२.

पूज्य गुरुदेव नरम करके, निवाला तैयार करके देते हैं। अब गले से नीचे तो तुझे उतारना है। इस कालमें अहो ऐसी बात ! सचमुच जीवों भाग्यशाली हैं।

गुरुदेव के प्रवचन में समयसार की कर्मफल के संन्यास की गाथाएँ, (चलती हो तब) - जैसे अभी ही संन्यास लेना हो ! ऐसा ही लगे। वाणी ऐसी ! मुद्रा ऐसी ! तीर्थंकर द्रव्य है न ! १२३.

पूज्य गुरुदेव अद्भुत प्रभावशाली थे। उनकी उपस्थिति में सब भिन्न-भिन्न प्रकार के साधन निकले। धवल के शास्त्र भी उनकी उपस्थिति में प्रसिद्ध हुए। फिल्म, टेपरेकार्डर, विडियो टेप में जैसे साक्षात् जैसा ही लगता है। प्रत्यक्ष - साक्षात् बिराजते थे, वह तो बात ही अलग थी ! जिन्होंने साक्षात् सीधी वाणी सुनी है उन्हें खयाल आता है कि ऐसी वाणी थी। उन्हें व्याख्यान में इतना आनंद आता था कि सुननेवाले दंग रह जाते। आहाहाहा.... की गंभीरता व प्रमोद तो उनकी मुद्रा में दिखता था। १२४.

भगवान आत्मा... भगवान आत्मा ऐसा कहनेवाले जगत में एक गुरुदेव थे। भगवान आत्मा... बोलने का उनका ढंग ही कोई और था ! १२५.

पंचमकाल में ऐसे गुरु मिलें और वाणी बरसाई इससे (विशेष क्या चाहिये ? गुरुदेव मार्ग बतलाकर सबको चैतन्य के समीप ले गये। `तू अंदर देख... अंदर जा...' भीतर तक ले गये। (खुद को) देखना बाकी है। `क्रिया करनेवाला तू नहीं, शरीर सो तू नहीं, शुभाशुभ विकल्प वह तू नहीं, अधूरी पर्याय जितना तू नहीं' एकदम आत्मा के मूल स्वरूप तक समीप ले गये हैं। अब सिर्फ तुझे अंदर देखना ही बाकी है। और तो सब तैयार माल करके दिया है। १२६.

पूज्य गुरुदेवश्री कईबार पघड़ी को रंग चढ़ाने का दृष्टांत देते कि - बाप अपने बेटे को रंगकाम सिखाता है। बेटा हररोज़ रंग करके पूछे, देखो ! पिताजी, अब ठीक है न ? पिताजी कहते

अभी भी ठीक नहीं है। लड़का तंदेहीपूर्वक विशेष सीखने की इंतज़ारी रखे तो वह लड़का होशियार बन जाये। यदि लड़का ऐसा विचार करे कि पिताजी हररोज़ मुझे नापास करते हैं, मैं इतना अच्छा करता हूँ तो भी हाँ नहीं भरते। ऐसा समझकर हताश व निराश हो जाये तो अधिक अच्छा सीख नहीं पाता। परंतु मुझे तो अभी बराबर ध्यान देकर पूरा-पूरा सीखना ही है, ऐसा नक्की करे तो आगे बढ़कर पूर्णता तक पहुँच सकता है।

वैसे तत्त्व के लिये भी सम्यक्‌दर्शन से लेकर केवलज्ञान हो वहाँ तक अभी बाकी है, अधूरा है, पूर्ण नहीं हुए, ऐसी समझ रखेगा तो उसे कभी सत्य प्रगट होने का - करने का अंदर से प्रयास होगा। सिर्फ शास्त्र पढ़कर सीख लिया, रट लिया, धारणा हो गई और मान ले कि अब मुझे सब कुछ आता है तो उसे आगे बढ़ने का अवकाश नहीं रहता। १२७.

गुरुदेव कहते थे कि ये द्रव्य है... ये द्रव्य है। इस चैतन्य द्रव्य में आ जाओ... आ जाओ... ये पद तुम्हारा है। यहाँ आओ... आओ... ऐसी पुकार करके, प्रेम व करुणा से कहते। एक आत्मा की - शुद्धात्मा की बात करते थे। उनके व्याख्यान में सबको अपूर्वता लगती थी। १२८.

पूज्य गुरुदेव ने श्रुतज्ञान की गंगा बहाई, जिनेन्द्र भगवान बिराजमान किये, बहुत कुछ किया है। आत्मा के मीठे मधुर गीत गाये। टेप में सुनते हैं तब जैसे साक्षात् गुरुदेव ही वाणी बरसाते हैं। इस कालमें साधन भी कैसे निकले कि जिसमें गुरुदेव की वाणी जीवंत रह गई ! धन्य भाग्य के ऐसी वाणी सबको सुनने

मिली। १२९.

✤

पूज्य गुरुदेवश्री जब चैतन्यस्वरूप की महिमा का वर्णन करते और चैतन्य चमत्कार की बातें करते तब लोगों को जैसे सचमुच में चैतन्य चमत्कार का साक्षात् प्रतिभास करते हों ऐसा ही लगता। १३०.

✤

पूज्य गुरदेव वाणी बरसाते थे तब सब टकटकी लगाकर देखते रहते ! जैसे क्या कह रहे हैं ! ऐसी अपूर्वता का सिंचन करनेवाले एक मात्र गुरुदेव ही थे !! उनकी वाणी अपूर्व थी। यह वाणी आत्मदर्शक थी। अनुभूति का मार्ग उन्होंने बताया है। १३१.

✤

दुनिया में सब कहाँ-कहाँ लीन थे ! घूमने - फिरने में मौज-शोख में आनंद मानते थे, ऐसे सबके स्थूल जीवन... गुरुदेव ने सबके जीवन चैतन्य के आश्रय से भर दिये। जीवन में देव-गुरु-शास्त्र की समीपता हो, वे हृदय में हों, वह लाभरूप है, उसमें आत्मा का आश्रय समाया है। १३२.

✤

गुरुदेव ने जो वाणी बरसाई उसका आश्रय सबको है। बरसों तक वाणी बरसाई है। सब ने बरसों तक निरंतर सुनी है। इससे बढ़कर जगत में और क्या है ? क्या अधिक है ? १३३.

✤

उनकी निडरता, निश्चय, सब शास्त्र अनुसार क्रियाएँ थी। सिंह जैसी उत्कृष्ट अडिगता, निडरता, सभी कार्य महापुरुष जैसे। प्रतिकूलता का बवंडर आये तो इसका सामना अकेले कर सके

ऐसा सामर्थ्य। सौराष्ट्र में परिवर्तन किया तब काफी बवंडर चला था, परंतु फिर भी डिगे नहीं, दिगंबर समाज में भी उनके सामने बवंडर खड़ा हुआ था। बहुत प्रभावशाली, प्रतापी महापुरुष। पुण्य का योग भी वैसा ही। सिंह जैसे निडर। उनका प्रभाव भी ऐसा, इसलिये साथ देनेवाले भी बहुत से जीव मिल गये। १३४.

जिनेश्वर के वचन परम उपकारी हैं, श्रीगुरु के वचन परम उपकारी हैं। जिन्होंने मार्ग बतलाया, ``द्रव्यदृष्टि किसे कहना, वीतरागता किसे कहना, द्रव्य किसे कहना, साधकदशा किसे कहना'' ये सब परम उपकारी गुरु ने बतलाया है। उनके वचन परम उपकारी हैं। जीवों को मुक्ति का मार्ग समझना मुश्किल है; वस्तु की स्वानुभूति, इसकी साधकदशा यह सब समझना मुश्किल है।

चैतन्यदेव को पहचानना मुश्किल है। चैतन्यलोक आश्चर्यकारी है - वह स्वयं आश्चर्यकारी है। गुरु की वाणी में उसका स्वरूप आता है। अतः वाणी के माध्यम से उसे समझा जा सकता है। गुरुदेव प्रगट हुए वरना इस मार्ग को कौन जानता - ? लोग क्रियाकांड में लगे हुए थे ऐसे काल में मार्गप्रकाशक श्रीगुरु प्रगट हुए। १३५.

सबको इस कालमें मार्ग स्पष्टरूप से मिल गया है। यह महाभाग्य की बात है, यही मार्ग है ऐसा स्पष्ट कर-करके समझाया है। बहुत सुंदर, बहुत अपूर्व दिया है, किसीको मिलना मुश्किल ऐसा तत्त्व दिया है। जीवन में अपने आत्मा का (हित) कर लेना। ज़ोरदार कर लेना। बरसों बीत गये; अब आत्मा का कर ले, ऐसा कहते हैं। गुरुदेव ने कहा है इसलिये हो गया, ऐसा नहीं है। करना

तो खुद को ही है। `सभी कक्षाओं को पार करके पूर्णता तक पहुँच जा।' १३६.

✲

उनकी वाणी अपूर्व थी। उनका ज्ञान अपूर्व था। उनका अंतर व बाह्य अपूर्व था। पुण्य व पवित्रता अलग ही थे।

वस्तु का स्वरूप प्रसिद्ध किया है। ज्ञान स्पष्ट था। समयसार में क्या आता है, वह सारा छानबीन करके प्रसिद्ध किया है। यह तो आचार्यदेव कहते हैं, ऐसा कहकर आचार्यदेव की महिमा करते थे। सारा तत्त्व गुरुदेव ने प्रसिद्ध किया है। शास्त्रों के अर्थ करते हुए उसीके रंग में रंग जाते थे। वस्तु को एकदम सूक्ष्मरूप से खोला है। ऐसे पंचमकाल में तत्त्व को इस तरह स्पष्ट करनेवाले का मिलना, यह सब दुर्लभ है। यह पंचमकाल में मिल गया। स्पष्ट करके दिखानेवाले का मिलना, यह बहुत मुश्किल है। १३७.

✲

मेरी नींद एकदम जल्दी खुल जाती, नींद ही उड़ जाती। पूरी नींद नहीं आती थी। मन में ऐसा होता था कि गुरुदेव नहीं हैं... गुरुदेव नहीं हैं। छः महीनों तक ऐसा ही होता रहा। बस ऐसा ही हो जाता था। अमुक प्रकार के स्वप्न आते थे... रात को ऐसा ही होता था। बरसों से यहाँ पर ही रहे थे... यहाँ... उनकी मौजूदगी में ही जीवन बीताया था। इसलिये छः महीनों तक... जैसे ही अचानक नींद खुल जाती तो ऐसा लगता कि... गुरुदेव नहीं हैं... रात को तो होता ही था। कभी-कभी सबेरे-सबेरे भी ऐसा लग जाता कि गुरुदेव नहीं हैं... अमुक टाइम तक ऐसा ही चलता रहा। १३८.

✲

शास्त्र के अर्थ करनेवाले तो कई लोग होते हैं, परंतु अनुभूति

को खोजनेवाले तो एकमात्र... गुरुदेव ही निकले, उन्होंने अनुभूति दर्शाई। शास्त्र के अर्थ करना और विस्तार करना तो गुरुदेव के लिये बहुत सुगम था। एक वाक्य पर विस्तार धारावाहीरूप से चलता... गुरुदेव का विस्तार, इसमें फिर क्या कहना...! गुरुदेव ने मार्ग बतलाने में कोई कमी नहीं रखी। सभी पहलुओं की तहमें जाकर मार्ग बतलाया है। तू अंतर में जा। १३९.

अंतरमां नीरखी नीरखीने चाल तो मारगडो देखाय
अंतरमां नीरखी नीरखीने जो तो मारगडो देखाय...

``मारा ह्रदये हजो, मारा ध्याने हजो गुरुदेव रे।
गुरुदेवना दर्शनना वायरा वाजो मने दिनरात रे...''

गुरुदेव द्वारा प्रभात हुआ था। सूर्य उदय हुआ था। आकाश में जो सूर्योदय होता है वह जड़ है, भरतक्षेत्र के सच्चे सूर्य तो गुरुदेव थे। उन्होंने चैतन्य की दिव्यता बताई, गुरुदेव थे तो जैसे शासन में सूर्य था। १४०.

पूज्य गुरुदेव पधारे, इस पंचमकाल में दुर्लभ को सुलभ बनाया। जीवों इतने पुण्य लेकर आये कि गुरु मिले। यह गुरुदेव का उपकार है। अभी इनके बिना सब निस्तेज हो गये। १४१.

यह तो गुरुदेव की पावनभूमि - साधनाभूमि है। यहाँ बरसों तक सब ने हमेशा लाभ लिया है। अंतर में वाणी के गहरे संस्कार पड़े है। सबको मार्ग बतलाया, यह संतोष का कारण बना है। यह मार्ग है। ऐसी दृष्टि प्रगट करने से मुक्ति के मार्ग पर जा सकते

हैं। न जा सके तब तक पुरुषार्थ की भावना होती है। ऐसी दृष्टि प्रगट होने पर ही मार्ग मिलता है।

जगत के जीव कहाँ-कहाँ भटकते हैं ! पहले कैसी स्थिति में थे इसका विचार करें। गुरदेव ने कहा कि इस मार्ग पर जाना है इसलिये व्यवहार से संतोष आता है; लेकिन वास्तविक संतोष तो अंतर में जाये तब अंशतः आता है। १४२.

गुरुदेव गये... गुरुदेव गये... ऐसा वारंवार होता है। आत्मा और देव-गुरु-शास्त्र मुझसे दूर कभी न हो ! जिनेन्द्रदेव मेरे आँगन में आप पधारिये, गुरु मेरी साधकता में पधारिये, मेरे द्वार पर पधारिये। गुरुदेव इस क्षेत्र से आप दूर चले गये... परंतु साधकता वृद्धिगत् होनेपर सब समीप हो जायेंगे। यहाँ साधकता थी तब गुरुदेव समीप थे, आगे भी रहेंगे। गुरुदेव ! आप समीप ही हैं। थोड़े बीच के समय को गौण करके समीप ही हो जानेवाले हैं। आत्मा की उग्र साधना के काल में सब समीप हो जायेंगे। १४३.

देहे मढ़ेला देव छो, धर्मे धुरंधर संत छो,
शौर्ये सिंहण पीध दूध छो...

पूज्य गुरुदेव का प्रताप है, गुरुदेव सब सिखाकर गये हैं। पूज्य गुरुदेव ने मार्ग दर्शाया है। गुरुदेव के कारण सब आगे आये हैं; गुरु के कारण सब जीवंत हुए हैं। सबको जागृत किया है। द्रव्यदृष्टि उन्होंने ही दी है। पूर्ण द्रव्य और पूर्ण दृष्टि तक ले गये हैं। १४४.

उनके बहुत भव्य स्वागत होते थे। जैसे कि नेमीचंद सिद्धांत

चक्रवर्ती दक्षिण देशमें से आये। त्याग लेकर साधु हो गये। किसी ने त्यागी होकर इतना प्रचार किया हो, ऐसा तो इतने बरसों में शायद ही कोई होगा। उनके आगे, समीप में तो कोई कुछ बोल ही नहीं सकता।

श्रुत की आराधना का नमूना तो एक पूज्य गुरुदेव ही थे। श्रुत की आराधना, उनका प्रभावशाली प्रताप, उनका हृदय आराधक, अंतर की परिणति निर्मल - इस पंचमकाल के जीवों के लिये गुरु व शास्त्र सब उनमें ही था। साधना के दर्शन भी उनमें ही होते थे। श्रुत की आराधना भी उनमें देखने मिलती थी। देव का स्वरूप गुरुदेव बताते थे। इसीलिये तो गुरु को भगवान कहते हैं। वे अकेले भी स्वयं भी सुहावने लगते और सब के बीचमें भी सुहावने लगते, ऐसा उनका व्यक्तित्व था। उनका चेतनत्व इतना सुहावना लगता था। १४५.

गुरुदेव भगवान थे। उन्होंने यहाँ अवतार लिया, सबको जगाने के लिये। शंख बजाकर सबको जगाया। जागो रे जागो... कहकर सबको जगाया। एक महापुरुष जगतमें शाश्वत रहते हों तो इनकी छाया में सब मंगल-मंगल लगे, उनकी वाणी कायम रह गई। १४६.

पूज्य गुरुदेव यहाँ पधारे यह अपूर्व, उनका साथ अपूर्व, वाणी अपूर्व, उनके साथ यात्रा अपूर्व, उनके विहार अपूर्व, सब अपूर्व। गाँव-गाँव में चैतन्यरस झरती वाणी बरसाते - वह अपूर्व। सबको ऐसा लाभ बरसों तक मिला। उनकी वाणी की आवाज़ कितनी धीर, गंभीर गर्जना करती वाणी अंदर में चैतन्य से रंजित वाणी अपूर्व थी। १४७.

अहो ! पूज्य गुरुदेव यहाँ पधारे, वह पुण्य था। पंचमकाल का भाग्य था। शांति का स्थान था। आग बढ़ने का स्थान था। सत्य का उपदेश देनेवाले, मुमुक्षु को मार्ग बतलानेवाले थे। अंधे को आँख देनेवाले थे। बाहर की क्रिया में रहनेवाले को आत्मा की ओर झुकानेवाले थे, चैतन्य की क्रिया के प्रति झुकानेवाले थे। पंचमकाल में एक स्तंभ थे, धर्म-धुरंधर संत थे। भूले हुए को पंथ दिखाते थे। तू भूल कर रहा है... भाई वापिस मुड़ जा। मीठा ठपका... मीठी सीख देकर बचा लेते थे, ऐसी सिखावन देनेवाले दुनिया में कौन हैं - ? चैतन्य के चमत्कार से भरी हुई वाणी बतलानेवाले थे। स्व संवेदन बतलानेवाले थे। ऐसे कोई एक तो... बताईये - ? १४८.

अहो ! पूज्य गुरुदेवश्री स्वयं चैतन्य के रस से रंगे हुए थे तो श्रोताओं को भी उस रंग के रस में सराबोर करके रंग देते थे। सब इतने तल्लीन और एकाकर हो जाते कि एक घंटा तो जैसे कहाँ निकल जाता - जैसे कोई अगम्य देश में ले जाते हो। पूज्य गुरुदेवश्री ने तो सम्यक्श्रुत के प्रपात बहाये और अनेक शास्त्रों का सुमेल करके काफी हल करके निहाल कर दिया। सूक्ष्मातिसूक्ष्म, न्याय को एकदम सरल स्पष्ट भाषा में कहने की उनकी शैली, वाणी की अचिंत्य शक्ति, जैसे सुनते ही रहें ! वरना हमारी कहाँ इतनी शक्ति थी कि इसे समझ सके - ? १४९.

पूज्य गुरुदेवश्री तो तीर्थंकर द्रव्य हैं। ऐसी वाणी का ज़ोरदार प्रवाह मिले तो भी पात्रता तैयार न हो ऐसा बन ही नहीं सकता। ऐसे पंचमकाल में तो दो घंटा पूज्य गुरुदेवश्री का उपदेश बहुत

कल्याणकारी है। उनका निकट सान्निध्य आत्मार्थी को तैयार होनेके लिये अपूर्व कारणभूत होता है। पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी तीर्थंकर की वाणी है। उन्हें अभी तीर्थंकर परमात्मा जैसा उदय वर्तता है। वाणी का योग भी ऐसा ही है। मुनिराज के योग जैसा योग है। पंचमकाल में ऐसा योग !!! ऐसी वाणी और उदय भी प्रबल है। कितनी ज़ोरदार... तीक्ष्ण वाणी ! तत्त्व का सूक्ष्म उपदेश। वे एक ही शब्द वारंवार बोले तो भी श्रोताओं का रस वृद्धिगत् होता जाये, अरुचिकर नहीं होता था। वाणी में रस की कमी नहीं आती। अतः सुनते हुए तृप्ति नहीं होती है। उनकी वाणी सुनने मिली वह भी महान पुण्य का उदय है।

वस्तुस्वभाव ऐसा है कि वाणी कुछ करती नहीं, फिर भी बाह्य निमित्त-नैमित्तिक संबंध ऐसा ही होता है कि भगवान की वाणी निष्फल नहीं जाती। वैसे पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी से भी पात्र जीवों मार्ग को प्राप्त हुए हैं। स्वानुभूति प्रगट की है। १५०.

तीर्थस्वरूप आत्मा को बतलानेवाले गुरुदेव... उनके साथ तीर्थयात्रा - यह तो यात्रा ही कोई अलग प्रकार की थी। आत्मारूपी तीर्थ, यथार्थ तीर्थ को बतानेवाले गुरुदेव... (उनके साथ) तीर्थयात्रा करते जाय... गाँव-गाँव में आत्मा की बातें करते जाय... चैतन्य का आश्चर्य दिखाते जाये। द्रव्यदृष्टि प्रगट कर... प्रगट कर ऐसा कहते जाये। साथ-साथ ऐसा भी कहते जाये कि ऐसी यात्रा तो तूने बहुत बार की परंतु सच्ची अंदर की यात्रा कर।

आत्मा शाश्वत है वैसे ही यह शिखरजी तीर्थ भी शाश्वत है। अनंत तीर्थंकर यहाँ से मोक्ष गये हैं। कण-कण पवित्र है। यहाँ ऊपर अनंत सिद्ध भगवान बिराजते हैं, ऐसा बतलाते थे।

गुरुदेव ने कहा मैं तो यहाँ चारों ओर मुनियों को देखता हूँ। पहाड़ों में, पर्वतों में मुनिराज ध्यान करते हों, ऐसा देखता हूँ। ऐसे प्रसंगों में उल्लास - उमंग आता है।

गुरुदेव की भक्ति वह श्रुतभक्ति की यादें हैं। १५१.

✤

गुरुदेव के साथ यात्रा को कह सकते हैं यात्रा... गुरुदेव के विहार को विहार... जीवन में ऐसा प्रसंग आना मुश्किल है। महापुरुष के साथ ऐसा प्रसंग कब बने ! गुरुदेव चैतन्य विहारी, उनका विहार ही कोई अलग... अंदर का विहार तो अलौकिक लेकिन बाहर का विहार भी ऐसा ही... दूसरे को चैतन्यविहारी बनानेवाले थे। ऐसे युग में जन्म होना और ऐसे गुरुदेव का योग होना, महाभाग्य हो तब ही मिलता है। १५२.

✤

शास्त्र के एक-एक शब्द का अर्थ करनेवाले, शास्त्र के एक वाक्य द्वारा पूरे चौदह ब्रह्मांड को खड़ा कर देते। 'पर का स्वयं कुछ नहीं कर सकता। तुम स्वयं स्वतंत्र हो।' ऐसी स्वतंत्रता की बात करनेवाले कौन हैं ? मूल वस्तु के असली स्वरूप को बतानेवाले जगत में एकमात्र गुरुदेव थे। उन्होंने सबकुछ बतलाकर मार्ग स्पष्ट कर दिया। वस्तु-स्वरूप सूक्ष्मतापूर्वक बतानेवाले, आत्मा के हार्द तक पहुँचनेवाले, चौदह ब्रह्मांड का स्वरूप बतानेवाले गुरुदेव ही थे। अनंतधाम स्वरूप आत्मा को बतानेवाले गुरुदेव थे। गुरुदेव का एक शब्द खयाल में ले तो पूरा चैतन्य उछल जाये ऐसा है। १५३.

✤

पूज्य गुरुदेव इस पंचमकाल में परम पुरुष थे। मार्ग प्रकाशक, चारों पहलुओं से मार्ग प्रकाशक, जैसे वारंवार हाथ पकड़कर मार्ग

दिखाते हों, ऐसा कहनेवाले थे। गुरु के वचन जीवों को वारंवार जागृत करते हैं। श्रुत की आराधना का उत्कृष्ट नमूना पंचमकाल में कोई है तो वह गुरुदेव में दिखता था।

श्रुत की महिमा बतानेवाले, श्रुत की उत्कृष्ट आराधना, इस पंचमकाल में अगर कहीं दिखती, तो वह गुरुदेव में दिखती थी। श्रुत की ओर जो जीव झुके हैं वे गुरुदेव के प्रताप से झुके हैं। सब लोग जो शास्त्र के प्रति झुके हैं, उस श्रुतज्ञान का अभीक्ष्ण उपयोग, गुरुदेव उनका आदर्श दृष्टांत थे। उन्हें श्रुत की अपार महिमा थी। उछल पड़ते थे। श्रुत में परिणत उनका अंतरंग उपयोग, अंतर में श्रुत और बाहर में वाणी भी ऐसी ही थी। तीर्थंकर का द्रव्य कोई अलग ही प्रकार का ! श्रुत का उपयोग भी अलग ही प्रकार का और अलग ही श्रुत की आराधना। अभी से जैसे तीर्थंकर गोत्र बंध जाये ऐसी तो श्रुतभक्ति। बचपन से त्यागी होकर सबको उपदेश दिया। मंथन करके, स्वयं ने अकेले ही पूरा तत्त्व खोज लिया। १५४.

माँ-बाप सब सिखाते हैं लेकिन कुछ कर नहीं देते। करना तो खुद को ही पड़ता है वैसे पूज्य गुरुदेवश्री ने सरलरूप से सीधा-सीधा ही सबकुछ समझाया है, सिखा दिया है, परंतु अनादि से जो अभ्यास है उस तरफ ही ढल जाता है इसलिये अंदर नहीं जा पाता। और यदि मन में ऐसा हो गया कि अब मुझे सबकुछ आ गया है, मुझे बराबर पता है - खयाल में है ही तो उसे आगे बढ़ने का अवकाश नहीं है। १५५.

पूज्य गुरुदेवश्री के उपदेश का गहराई से हृदय में घुटन, घोलन,

मनन करना; उसीका अभ्यास करना, यह मूल उपाय है। जितना भी विभाव दिखता है वह मैं नहीं, वह मेरा है ही नहीं। यही निरंतर करना है। मार्ग न मिले तो निराश होकर छोड़ नहीं देना। उत्साह भंग बिलकुल नहीं होने देना। १५६.

वस्तु के मार्ग की यथार्थता - अपूर्वता गुरुदेव ने ही बतायी है। तभी तो सब लोग अपूर्वता के मार्ग पर आये; वरना सब लोग कहाँ के कहाँ पड़े थे। सब सत्य मार्ग पर आ गये, यह पूज्य गुरुदेव के प्रताप से। ऐसा अंतर का मार्ग गुरुदेव ने नहीं दिखाया होता तो सब अनजान पथ पर कहीं न कहीं भटकते होते। अपूर्वता का भास पूज्य गुरुदेव ने कराया। द्रव्य अपूर्व है, मार्ग अपूर्व है, सब अपूर्व है। अपूर्वता के मार्ग पर चलेंगे तो भगवान मिलेंगे। १५७.

गुरुदेव सर्वश्रेष्ठ थे। हम तो शिष्य की तरह घूमते थे। गुरुदेव के बिना सब सूना सूना है।

``सूनां ते मंदिर, सूनां ते माळियां
मारा सूनां स्वाध्यायमंदिर, सूनां जिनेन्द्रं दरबार...
वांचन सूनां, पूजन सूनां,
सूनुं देखाय मने सोनगढ़ गाम रे...
सूनां स्वाध्यायमंदिर, सूनां अभ्यासधाम,
मारी भक्ति सूनी, भजन सूनां
सूनां मारा हृदयना धाम रे...
गुरुदेव विना सोनगढ़ गाम सूना, देश-परदेश सूना।
शिबिरनां धाम सूनां, अभ्यासधाम सूनां।
बधुं सूनुं सूनुं... हिन्दुस्ताननां सूनां धाम।''

गुरुदेव के बिना क्या किया पूजन ! क्या की भक्ति ! क्या किया अभ्यास ! क्या किया वांचन ! गुरुदेव के बिना किस काम का ! गुरुदेव के बिना किया, वह कुछ किया ही नहीं। सबकी कीमत शून्य है।

ऐसा कहा जाता है कि चक्रवर्ती के जाने के पश्चात् सब सूना लगता है। वैसे यहाँ गुरुदेव के बिना मुझे सब सूना-सूना लगता है, खाली-खाली लगता है। वहाँ (पूज्य गुरुदेव के रूम में) दर्शन करते वक्त हृदय पर काबू नहीं रह पाता।

'गुरुदेव विना सूनां मंदिर ने सूनां माळियां' १५८.

✻

यहाँ (सुवर्णपूरी में) गुरुदेव बिराजते थे, निरंतर उनकी चैतन्यरस झरती मीठी अमृतवाणी बरसती थी। धन्य ऐसी यह नगरी ! धन्य - वह काल ! गुरुदेवश्री परम पुरुष थे, महा शक्तिशाली थे। भरतक्षेत्र में इस काल में गुरुदेव की वाणी सर्वोत्कृष्ट अतिशयतापूर्ण थी, पंचमकाल में भरत के जीवों के चैतन्य को जागृत करनेवाली थी। गुरुदेव जगत से अलग ही पड़ जाते हैं। उनकी मुद्रा भी अलग ही दिखे और वाणी भी अलग ही लगे। उनकी मुद्रा देखते ही लोग ये तो '-धर्मपुरुष-' हैं, ऐसे दंग रह जाते। अहो ! यह तो चैतन्य की अतिशयता दिखाती हुई मुद्र ! वे तो चैतन्यरत्न की पहचान करानेवाले परमपुरुष थे। १५९.

✻

उनके पुनित चरणों से भरतक्षेत्र की शोभा थी। वे चैतन्य का मार्ग दिखाते थे। ''चैतन्य को पहचानो...पहचानो !'' ऐसी गर्जना करते थे। व्याख्यान देते वक्त अलग ही लगते। 'भगवान आत्मा... ज्ञायकदेव...' सबको भगवान कहकर बुलाते थे। खुद तो भगवान

स्वरूप थे। अल्पकाल में भगवान हो जायेंगे। गुरुदेव के चैतन्य की शोभा की तो क्या बात करें ! उनके पुण्य की शोभा भी कोई अलग ही थी ! ऐसे बाह्य-अंतर पुण्य व पवित्रता की मूर्ति थे। भरतक्षेत्र के भाग्य कि गुरुदेव का यहाँ जन्म हुआ। १६०.

जगत में तीर्थंकर भगवान सर्वोत्तम विभूति हैं। हमें तो ये भविष्य के भगवान मिल गये। वर्तमान भगवान की तरह ही उनकी वाणी के श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुदेव ने बरसों तक वाणी बरसायी। इस भरतक्षेत्र में दिव्यध्वनि के जैसे ही गुरुदेव की ध्वनि गरजती थी, इसके श्रवण जैसा दूसरा कौन सा सौभाग्य ? गुरुदेव ने सबको द्रव्यदृष्टि का अर्थात् शुद्धात्मद्रव्य के प्रति झुकने का उपदेश दिया। १६१.

जगत में सर्वोत्कृष्ट जिनेन्द्रदेव हैं। अपने यहाँ मंगल मुहूर्त पर सीमंधर भगवान पधारें। जैसे कि साक्षात् भगवान हमारे आंगन में पधारें। सीमंधर भगवान मंदिर के प्रवेशद्वार में पधारें, तब गुरुदेव ने अतिशय भक्तिपूर्वक `पधारो भगवान ! पधारो' - ऐसे स्वागत करते हुए अर्थात् साष्टांग नमस्कार किया था। पूज्य गुरुदेव ने आश्चर्यमुग्ध होकर भगवान के दर्शन किये, तब उनकी आँखों से आनंद के अश्रु बहने लगे थे। १६२.

यहाँ के (सुवर्णपुरी के) स्थान-स्थान में, वस्तु-वस्तु में; कण-कण में गुरुदेव के स्मरण बसे हैं। जिस पर नजर जाती है, उसके आश्रय से गुरुदेव स्मरण में आते हैं।

`अभी यहाँ गुरुदेव सीमंधरनाथ के दर्शन हेतु पधारेंगे, अभी

व्याख्यान के लिये गद्दी पर बिराजमान होंगे और अमृतवाणी छूटेगी, अभी गुरुदेव आहार लेने के लिये पधारेंगे, अभी यहाँ गुरुदेव एकांत में बैठकर निज स्वाध्याय-मनन में लीन होंगे।' इसतरह सर्वत्र गुरुदेव जैसे मौजूद हों ऐसा लगता है, गुरुदेव भुलाये नहीं जाते। वह पावनमूर्ति नजरों के सामने रहा करती है। गुरुदेव के इन स्मरणों द्वारा गुरुदेव के पवित्र जीवन व उपदेश को दृष्टि समक्ष रखकर हम उनके दिखाये हुए मार्ग पर चलें, यही कर्तव्य है। १६३.

चैतन्य की कोई अद्भुतता और अनुपमता बतलानेवाले एक गुरुदेव ही थे। गुरुदेव स्वर्गपुरी में बिराजते हैं। इस भरतक्षेत्र में गुरुदेव भगवान ! भगवान ! करते थे। उन्हें तो वहाँ भगवान और सबकुछ मिल गया। गुरुदेव की वाणी ही ऐसी थी कि पुरुषार्थ जगे और आत्मा की प्राप्ति हो। गुरुदेव की अपार कृपा थी। उन्होंने भव का अभाव करवाया है। गुरुदेव ने जो कहा है, वही करना है। हम तो उनसे सब सिखे हैं। सारा मार्ग उन्होंने स्पष्ट किया है। अपूर्व मार्ग उन्होंने प्रगट करके बतला दिया है। उनकी गैरमोजूदगी में भी पुरुषार्थ बढ़ाते जायें, यही कर्तव्य है। १६४.

गुरुदेव ने चैतन्य का डंका बजाकर पूरे भारत को हिला दिया। मुमुक्षुओं के कलेजे हिला दिये। गुरुदेव जैसे `गुरु' मिले और भगवान ज्ञायकदेव आंगन पधारें, फिर तो शुद्ध पर्याय प्रगट करनी ही चाहिये न ? दूसरा तो सबकुछ अनन्तकाल में जीव को मिल चुका है। चैतन्य के एकत्व की बात सुलभ नहीं है। गुरुदेव के प्रताप से स्वभाव की वार्ता और स्वभाव की अनुभूति सुलभ हुई है। स्वभाव की अनुभूति करना खुद के बस की बात है। गुरुदेव के प्रताप

से चारों तरफ `अनुभूति करो', `अनुभूति करो' ऐसा हो गया है। स्वानुभूति का युग आ गया। १६५.

❋

गुरुदेव का द्रव्य ही अलौकिक था। उनकी वाणी भी अलौकिक थी कि जो भीतर में आत्मा की रुचि जगाये। उनकी वाणी की गहराई व अंतरध्वनि कोई और ही थी। वाणी सुनते हुए अपूर्वता लगे और `जड़-चैतन्य भिन्न है।' ऐसा भास हो जाये ऐसी उनकी वाणी थी। `अरे जीवों ! आप देह में बिराजमान भगवान आत्मा हो, अनन्त गुणों के महासागर हो।' गुरुदेव की अनुभवयुक्त जोरदार वाणी श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर देती। बहुत प्रबल वाणी ! संसार के ज़हर को उतार दे, विषय-कषाय को पतला कर दे, पाप का रस तो उतर ही जाये, परन्तु पुण्य का रस भी न रहे, शुद्ध परिणति की और शुद्ध ज्ञायक आत्मा की लगनी लगा दे, वैसी मंगलमय वाणी गुरुदेव की थी। १६६.

❋

हे गुरुदेव ! इस भरतखंड में आप वर्तमानकाल में अजोड़ दिव्य महान विभूति हैं, दिव्य आत्मा हैं, आपने इस भरतखंड में अवतार लेकर अनेक जीवों को बचाया है, सम्यक्पंथ पर लगाया है।

आपका अद्भुत श्रुतज्ञान चैतन्य का चमत्कार दिखाता है, चैतन्य की विभूति दिखाता है। चैतन्यमय जीवन बनाता है। आपके आत्मद्रव्य में श्रुतसागर की लहरें उछल रहीं हैं, आत्मद्रव्य में जगमगाते ज्ञान के दीपक प्रगट हो रहे हैं, जो आत्मद्रव्य को प्रकाशित कर रहें हैं। आपका आत्मद्रव्य आश्चर्य उत्पन्न करता है। १६७.

❋

हे गुरुदेव ! आपके मुखकमल से झरती वाणी की क्या बात

करें ! वह इतनी अनुपम रस से भरी हुई है कि उस दिव्य अमृत का पान करते हुए तृप्ति नहीं होती है। आप की सूक्ष्म वाणी, चमत्कारिक वाणी भवांतकारी है, चैतन्य को चैतन्य की ज्ञानमहिमा में डुबोनेवाली है। सूक्ष्म अर्थों से भरपूर अपूर्व रहस्यपूर्ण, अनेकविध महिमा से भरी हुई गुरुदेव की वाणी है। १६८.

सुवर्ण समान निर्मलता से शोभायमान, सिंहसमान पराक्रमधारी ऐसे गुरुदेव ने अनेक-अनेक शास्त्रों का मंथन करके, एकाकी पुरुषार्थ करके, आत्ममार्ग को खोजकर, आत्मरत्न की आराधना करके, चारों तरफ से मुक्तिमार्ग को स्पष्ट किया। परमागमों के सूक्ष्म हार्द को प्रगट करके, कोने-कोने से मार्ग की स्पष्टता करके, अंतरदृष्टि बतलाकर मुक्ति के मार्ग को प्रकाशित किया है। निस्पृह व निडर ऐसे गुरुदेव ने मुक्तिमार्ग को सर्व प्रकार से स्पष्टतापूर्वक सरल करके अपार उपकार किया है। भेदविज्ञान का, स्वानुभूति का मार्ग दर्शाया है, रत्नत्रय का सच्चा पंथ प्रकाशित किया है, जिनेश्वर भगवान के कहे हुए और आचार्यदेव द्वारा गूँथे हुए अगणित शास्त्रों के रहस्यों को प्रकाशित किया है। १६९.

पूज्य गुरुदेव ने शुभाशुभ परिणाम से भिन्न शुद्ध आत्मा का स्वरूप, निश्चय-व्यवहार का स्वरूप, ज्ञाता का स्वरूप, कर्ता का स्वरूप, निमित्त-नैमित्तिक भावों का स्वरूप, वस्तु के सूक्ष्म भावों का स्वरूप, अनेक - अनेकविध वस्तु के स्वरूप को बतलाकर अपार उपकार किया है, अनेक सूक्ष्म न्यायों को प्रकाशित करके अमाप उपकार किया है।

बारह अंग और चौदह पूर्व के सत्यरूप भाव गुरुदेव के ज्ञान में भरे हैं। बहुश्रुतधारी, सम्यक्ज्ञानी सातिशय वाणी और सातिशय

ज्ञान के धारक परम उपकारी गुरुदेव के चरणकमल में अत्यंत-अत्यंत भक्ति से वंदन-नमस्कार हो ! १७०.

✻

गुरुदेव ने गाँव-नगर में जगह-जगह जिनालय और जिनेन्द्र भगवंतों की प्रतिष्ठा की है, पूरे सौराष्ट्र में दिगम्बर मार्ग की स्थापना की है, वीतराग शासन का उद्योत किया है। ऐसे शासनस्तंभ हे गुरुदेव ! आपके कार्य अजोड़ हैं, इस काल में अद्वितीय हैं। १७१.

✻

पंच परमेष्ठी भगवंतों की पहचान करानेवाले ऐसे हे गुरुदेव ! आप जिनेन्द्रदेव के परम भक्त हो, पंच परमेष्ठी भगवंत के परम भक्त हो, श्रुतदेवीमाता आपके हृदय में टंकोत्कीर्ण हो चुके हैं, जिनेन्द्र भगवंतों के और मुनिभगवंतों के दर्शन व स्मरण से आपका अंतःकरण भक्ति से उभर जाता है।

- ऐसे अनेकविध अद्भुत महिमा से दैदीप्यमान, रत्नत्रय के आराधक हे गुरुदेव ! आप ने उमराला में जन्म लेकर उमराला की भूमि को पावन किया है। आपने बचपन से ही संसार से विरक्त होकर संसार का त्याग किया, जगत में सत्य स्वरूप का दृढ़तापूर्वक प्रकाश किया, वीर के मार्ग का स्वयं अपने से आराधन करके, भारत के जीवों को समझाकर उपकार किया। अतः हे गुरुदेव ! आप भारत के भानु हैं। आप जैसे दिव्य पुरुष का इस भारत में अवतार हुआ उन माता-पिता को धन्य है। आप जहाँ बसे उस भूमि को धन्य है। गुरुदेव जहाँ बसते हैं उस भूमि का कण-कण धन्य है। गुरुदेव जहाँ बसते हैं उस क्षेत्र का वातावरण अनूठा है।

परम प्रतापी गुरुदेव ने इस पामर सेवक पर अनन्त-अनन्त उपकार किया है। गुरुदेव के उपकार का वर्णन कैसे किया जाये - ?

गुरुदेव के गुणों का बहुमान हृदय में हो ! गुरुदेव के चरणकमल की सेवा हृदय में हो ! १७२.

ऐसे काल में परमपूज्य गुरुदेवश्री ने आत्मा प्राप्त किया इसलिये परम पूज्य गुरुदेव एक `अचंभा' हैं। इस काल में दुष्कर से दुष्कर प्राप्त किया; स्वयं ने अंतर से मार्ग प्राप्त किया और दूसरों को मार्ग बतलाया। उनकी महिमा आज तो गायी जाती है परन्तु सालों तक भी गायी जायेगी। १७३.

पंचमकाल में निरंतर अमृतझरती गुरुदेव की वाणी भगवान का विरह भुलाती है ! गुरु का शरण लेने से गुणनिधि चैतन्यदेव की पहचान होगी। गुरु तेरे गुणों को खिलने की कला दिखायेंगे। गुरु आज्ञा में रहना यह तो परम सुख है। १७४.

संसार से भयभीत जीवों को किसी भी प्रकार से आत्मार्थ की पुष्टि हो ऐसा उपदेश गुरु देते हैं। गुरु का आशय समझने का प्रयत्न शिष्य करता है। गुरु की किसी भी बात में शंका नहीं उठती कि गुरु यह क्या कह रहे हैं ! वह ऐसे विचारता है कि गुरु जो कहते हैं वह सत्य ही है, मैं नहीं समझ पाता यह मेरी समझ का दोष है। १७५.

अहो ! अमोघ - रामबाण जैसे गुरुवचन ! अगर जीव तैयार हो तो विभाव टूट जाये, स्वभाव प्रगट हो जाये। अवसर चुकने जैसा नहीं है। १७६.

गुरु के हितकारी उपदेश के तीक्ष्ण प्रहार से सच्चे मुमुक्षु का आत्मा जागृत हो जाता है। ऐसे काल में हमें गुरुदेव उत्तम साथीदार मिले हैं। १७७.

तीर्थंकर भगवंतों द्वारा प्रकाशित दिगंबर जैन धर्म ही सत्य है। ऐसा गुरुदेव ने युक्ति - न्याय से सर्व प्रकार से स्पष्टरूप से समझाया है। मार्ग की चारों पहलू से स्पष्टता की है। १७८.

सुख का धाम पूज्य गुरुदेव ने बता दिया है। जो गुरुदेव का शरण ग्रहण करेगा उसका दुःख टिकेगा नहीं। जैसे राजा के शरण में जाये तो निर्धन नहीं रहता वैसे ये समर्थ गुरु मिले वह दुःखी कैसे रह जाये ! १७९.

पूज्य गुरुदेव को स्वयं तू देवाधिदेव... ऐसा भीतर से आया। दीक्षा के वक्त कपड़ा फटा तो कहते हैं कि इस मार्ग में कपड़े नहीं होते।

(विक्रम संवत) ७८ की साल में समयसार मिल गया था। हाथ में आते ही कहा अहो ! ये तो अशरीरी (होने का) शास्त्र है। १८०.

गुरुदेव मार्ग दिखाते हैं उसे सर्व प्रकार से समझाते हैं। जैसे माँ-बाप बालक को सब समझाते हैं : तू इस रास्ते पर चलना, वहाँ यह वस्तु है, ऐसा गुरुदेव समझाते हैं और मार्ग दिखाते हैं, भेदज्ञान करवाते हैं, अभेद की दृष्टि करने को समझाते हैं। शुभभाव तेरा स्वभाव नहीं है, उस रास्ते पर अटकना नहीं। १८१.

पूज्य गुरुदेव के बिना सब सूना-सूना लगता है। उत्सव के दिनों में तो उनके व्याख्यान और आहारदान के प्रसंग की वज़ह से सब शोभायमान लगता था। अभी सब हो रहा है किन्तु उनकी उपस्थिति नहीं है। परंतु उपस्थिति में जो होता था वह सब याद आता है। १८२.

पूज्य गुरुदेव के विरह का दुःख तो होगा ही। यह प्रसंग ही ऐसा है। मुझे तो भीतर में विरह बहुत ही लगता है, दुःख होता है। परंतु क्या करूँ ! सब लोग समाधान हेतु आते हैं और रोते हैं परंतु समाधान करना पड़ता है। सिर्फ खेद करने से क्या होगा ! १८३.

पूज्य गुरुदेव की बुलंदी आवाज़ की शक्ति ऐसी कि जैसे आत्मा खड़ा (जागृत) हो जाये। तत्त्व का विस्तार करने की शक्ति अद्भुत व अपूर्व थी। हम तो उनके दास हैं। उनकी करुणा ऐसी थी कि चैतन्य ग्रहण हो जाये। मूसलाधार वाणी बरसाई, इससे सब समझ सके। १८४.

गुरुदेव यहाँ प्रत्यक्ष बिराजमान थे, वह बात ही कुछ और थी ! अभी जो दिख रहा है वह अलग। गुरुदेव को ऐसा लगा होगा कि उन्हें (बहिन को) उनके आत्मा से समाधान हो जाएगा। पूज्य गुरुदेव का संबंध दूसरे क्षेत्र से हो गया। भरतक्षेत्र के साथ संबंध पूरा करके देवलोक में चले गये। यहाँ तो कहते थे कि, `- मुझे बहन को छोड़कर कहीं नहीं जाना है' इसके बज़ाय मुझे छोड़कर देवलोक में चले गये। १८५.

गुरुदेव आप जैसा कहेंगे वैसा हम करेंगे। आप आज्ञा कीजिए, ऐसा बहुत-से भाई-बहनों ने कहा था। झालावाड़ में परिवर्तन का विचार किया था परंतु फिर वहाँ स्थानकवासी के कारण बंद रखा, श्रीमद् राजचंद्र के आश्रमवालों ने कहा था कि यहाँ आईये, यहाँ रहीये। ``मैं ऐसे नहीं रह सकता, मैं तो कुंदकुंदाचार्य के मार्ग का प्रवर्तन करूँगा। इस प्रकार नहीं रहूँगा। कुंदकुंदाचार्यदेव के मार्ग का प्रकाश करूँगा।'' १८६.

जब सुरत रहते थे तब ऐसा लगता था कि गुरुदेव को कहीं देखा है। उसवक्त पूज्य गुरुदेव तीर्थंकर होंगे, यह पता नहीं था। महापुरुष हैं ऐसा लगता था। गुरुदेव तीर्थंकर होनेवाले है, ऐसी पुकार उनके हृदय से आती थी। अतः (जातिस्मरण द्वारा) तीर्थंकरत्व संबंधित जब सुना तब प्रमोद हुआ। ``यह तो त्रिलोकीनाथ ने तिलक किया, इससे अधिक क्या हो सकता है !'' ऐसा गुरुदेव व्याख्यान में बोले थे। १८७.

राजकुमार और साथ ही तीर्थंकर का द्रव्य, इसलिये प्रतापशाली व प्रभावशाली थे। गुरुदेव तो बहुत ही निस्पृह, अतः उनको बात करना माने बहुत जिम्मेवारी व ठोसपना हो तो ही कर सकते हैं। एक मात्र आत्मा का प्रयोजन, इसके लिए हम यहाँ आये हैं, फिर ज्यादा तो क्या बोलना, हमें हमारे बारे में क्या कहना ! १८८.

गुरुदेव से कितनी वाणी सुनने को मिली ! देने लायक सब दे दिया। मार्ग बतलाया, शास्त्र समझाये। अब भीतर में आत्मा का (हित) एकांत में रहकर अपना स्वाध्याय करते हुए कर लेना। गुरुदेव

मौजूद ही हैं, वैसा हृदय में रखना। १८९.

कोई कहते हैं गुरुदेव ऐसा कहते हैं, वैसा कहते हैं। परंतु उसकी गहराई में जाये तो पता चले कि क्या कहना चाहते थे। उनके पार को कौन पा सकता है ? आहाहा...! कहकर चैतन्य की महिमा दिखलाते थे। कहते थे कि ``चैतन्य में ऐसी अनंतता है, उसे देख।'' १९०.

गुरुदेव थे तब यहाँ उनकी जीवंत वाणी थी। वे सच्चे जीवंत तीर्थ थे। चैतन्यदेव बिराजमान है। चैतन्य में अनंत गुणों के शिखर हैं। बाहर में जिनेन्द्रदेव और जिनमंदिर के उन्नत शिखरों की स्थापना गुरुदेव ने की है।

गाँव-गाँव में गुरुदेव के प्रताप से कितने सुंदर मंदिर बन चुके हैं। वढ़वाण छोटा-सा गाँव है किन्तु मंदिर तो कितना सुंदर व बड़ा बन चुका है ! १९१.

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों में सेटीकाओं की गाथाएँ चलती हैं। खड़ी है सो खड़ी है। ज्ञान है सो ज्ञान है। ज्ञायक है सो ज्ञायक है। इस स्व-स्वामी संबंध से क्या साध्य है ? कुछ नहीं। इस बात को आचार्यदेव बहुत विस्तारपूर्वक व गुरुदेव स्पष्टीकरण करके कितना समझाते हैं !

द्रव्य स्वयं द्रव्यरूप है। द्रव्य और पर्याय दोनों का स्वभाव भिन्न है, दोनों की स्वतंत्रता दिखाते हैं। १९२.

कौन था ऐसा कहनेवाला कि तू आत्मा में जा, अंतर में जा, सब बाहर में ही धर्म मानते थे। `अहम् एको' एको तो एक आत्मा

ही है। सारी की सारी प्रभावना उन्होंने ही की है। उनका ही पूरा प्रभाव वर्तता है।

चैतन्य की ऐसी बात कहनेवाले कौन हैं - ? एक गुरुदेव ही ऐसे हुए कि पूरे भारत में डंका बजाया। क्रिया में धर्म नहीं है, धर्म तो स्वभाव में है ऐसा गाँव-गाँव में डंका बजाया। भरतक्षेत्र में डंका बजाया। १९३.

✳

अध्यात्म के वक्ता गुरुदेव अलग ही दिखते थे, उसमें रंग जाते थे। लोग झूमने लगते। चारों तरफ सब लोग तैयार हो गये। उनकी वाणी के रंग में रंग गये। (प्रवचन दौरान) शब्द-शब्द पर अहा..हा करते तब ऐसा लगता कि ये क्या कहना चाहते हैं ? उनको खुद को कितना आश्चर्य लगता होगा !? शब्द-शब्द में क्या (जादू) भरा है ! १९४.

✳

गुरुदेव महापुरुष थे, सर्वोत्कृष्ट पुरुष थे। चैतन्य रत्नाकर की पहचान करानेवाले थे। अनंत शक्ति से संपन्न आत्मा, उसे ग्रहण करो - ऐसा गुरुदेव ने कहा है। ऐसे चैतन्य का जो ग्रहण करे, उसकी वृद्धि हुए बिना रहे नहीं।

गुरुदेव थे तब तो काल (समय) दौड़ता था। अभी तो सदा ही काल लंबा लगता है। १९५.

✳

पूज्य गुरुदेव का जन्म स्थानकवासी में - मिथ्यामार्ग में जन्म हुआ; यदि दिगंबर मार्ग में हुआ होता तो इतने लोग इस मार्ग के प्रति कैसे आते ! १९६.

✳

मुनिराज तो जंगल में बसते हैं, कभी गाँव में आते हैं, विकल्प आये तो उपदेश देते हैं। पूज्य गुरुदेव की वाणी निरंतर दो वक्त छूटती ही है... स्वयं इतने भावविभोर होकर पढ़ते हैं कि श्रोताओं का प्रमाद उड़ जाए और सबको श्रुत के रंग में रंग देते हैं। गुरुदेव तो श्रुत में रंग गये हैं, श्रुत में सराबोर है - जैसे मानो श्रुतधर... १९७.

✻

गुरुदेव ने वाणी के प्रपात बरसाये, `देख लो,... आत्मा ऐसा है।' उसका आश्चर्य दिखाया - जैसे कि साक्षात् आत्मा दिखाते हों वैसे उसका आश्चर्य दिखाया... `तेरा चैतन्यदेव तेरे पास है।'

गुरुदेव तो जीवनमूर्ति थे, जीवन युगपुरुष थे। उनका गुंजार अभी भी चालू है। तत्त्व की बंसी बजानेवाले हैं। लगता है जैसे पूज्य गुरुदेव विहार में गये हैं ! अभी लौटेंगे ! हृदय पलट दे तो ऐसा ही लगे कि गुरुदेव विहार में गये हैं और लौटेंगे। ऐसे भगवान ! ऐसे महापुरुष ! अभी भरतक्षेत्र में कहाँ से हो ! गुरुदेव जैसा कोई है ही नहीं। गुरुदेव के बिना हृदय के सिंहासन सूने हो गये हैं। १९८.

✻

हीराजी महाराज को गुरुदेव ने कहा कि पातरा को रंग करना, - ये सब मैं नहीं करनेवाला, तब गुरु ने उनको कहा, पातरा बिना के गुरु को ढूँढ़ लेना। पूज्य गुरुदेव ने पातरा-रहित गुरु कुंदकुंदभगवान को ढूँढ़ लिया। पूरा मार्ग खोज़ लिया। सारी दुनिया को दिखा दिया कि इस मार्ग पर चलिए। चलिए... इस मार्ग पर चलना है। सब क्रियाकांड में कहाँ अटक गये, इस मार्ग पर

चलो। १९९.

पूज्य गुरुदेव तीर्थंकर का द्रव्य, वे महाविदेह से यहाँ पधारे - यह आश्चर्य ! तीर्थंकर का द्रव्य इस काल में यहाँ पधारें - यह आश्चर्य। महाविदेहक्षेत्र के राजकुमार ! कैसा पवित्र जीवन ! कैसी साधना ! वे हम लोगों के बीच आकर रहे यह बने ही कहाँ से ? ये तो आश्चर्य... आश्चर्य...

पूज्य गुरुदेव ने दिव्य वाणी बरसायी यह महाभाग्य। इस आश्चर्यकारी वाणी का लाभ ले लेने जैसा है। बस... इस काल में यह वाणी मिली। अब प्रमाद करने योग्य नहीं है। २००.

गुरुदेव की वाणी ने भरतक्षेत्र के मनुष्यों का मन हर लिया था। जिसको आत्मा की प्राप्ति की जरूरत हो, अंदर से लगी हो, उसे लगे कि हमें यह बात कहाँ मिलेगी ? आत्मा की ऐसा बातें और आत्मा संबंधित कहनेवाले कौन मिलेंगे ? वाणी ऐसी थी कि आत्मा का औजस्य जैसे झलक उठता हो ! वाणी में आत्मा का तेज नहीं दिखे, किन्तु जैसे वाणी द्वारा आत्मा को दिखाते थे, आत्मा की रुचि - महिमा कराते थे। २०१.

पंचमकाल में गुरुदेव का अतिशय ज़बरदस्त था। जैसे तीर्थंकरभगवान का अतिशय इतना होता है कि समवसरण के पास में दुर्भिक्ष नहीं होते, ऋतु-ऋतु के फल खिलते हैं, आधि-व्याधि-उपाधि नहीं रहती, वैसे गुरुदेव को अतिशय था। उनके सान्निध्य में कभी किसी को दिक्कत नहीं आती थी और पार उतर जाते, ऐसा अतिशय था। २०२.

`अंश से पूर्णता तक सब चैतन्य चमत्कार - अंदर से प्रगट होगा' गुरुदेव की वाणी... ऐसी थी तो... भगवान की वाणी कैसी होगी ! गुरुदेव तो भगवान का ही अंश थे। ॐ ध्वनि का गुरुदेव बतलाते थे।

गुरुदेव यहाँ पधारे यह तो दुषमकाल के बज़ाय सुषमकाल ही है। २०३.

✻

गुरुदेव इतने पुण्यशाली व प्रभावशाली थे कि कोई टिक नहीं सकता था। उनके ज्ञान व वाणी के आगे कोई टक्कर नहीं ले सकता।

(भक्तों) बोलना सीखे हैं तो गुरुदेव से। अंधेरे में डूब रहे अखण्ड सत् को उन्होंने प्राणवंत बनाया है। २०४.

✻

गुरुदेव एक आत्मा की बात करते, पक्ष की बात नहीं करते। चैतन्य के पंथ में जो व्यवहार आये वह व्यवहार। गुरुदेव ऐसा विरूद लेकर आये थे, कि सबको शासनरसिक करूँ। कोई आता तो उसे कृपापूर्वक बुलाते थे जिससे सभी को ऐसा लगता कि ऐसे महापुरुष मुझे कैसी कृपापूर्वक बुलाते हैं ! २०५.

✻

गुरुदेव की वाणी सुनकर बहुत से जीवों की रुचि पलट जाती थी। ये जो कह रहे हैं यह कुछ अलग ही कह रहे हैं। क्रियाकाण्ड में रत थे उन्होंने पलटा खाया। छोटे-छोटे बालक, जवानों, अन्यमतियों सब की रुचि पलट जाती। कणबियों ने (निम्न जाति के लोगों) जिनमंदिर बनवाये। व्होरा, हरिजन, दर्जी, ब्राह्मण, लुहार आदि जीवों की रुचि तो पलट गई। २०६.

✻

इस पंचमकाल में गुरुदेव मिले, विषम काल में यह महाभाग्य। उनकी वाणी से रुचि पलट जाये। जीव क्षण में पलटा खा जाये इतनी उनकी वाणी में अतिशयता थी। २०७.

साक्षात् गुरु थे तब तो ऐसा लगता था कि `बड़े के आश्रय में हैं, फिर कैसी चिंता' अब उपादान तैयार करना। गुरुदेव ही कहते थे कि, `तू अशरण नहीं है, तुझे तेरा शरण है। तेरे आधार से तेरी साधना प्रगट हो सकती है।'

ऐसा सिंचन करनेवाले इस काल में मिलना मुश्किल था। महाभाग्य वशात् मिल गये। आत्मा जागृत हो जाये और अपना आधार ले लें ऐसा सिंचन गुरुदेव ने किया है। २०८.

पूज्य गुरुदेवश्री से ही पूरी शोभा थी। उनका तो गुंजार ही कोई अलग प्रकार का था। अभी तो सब सूना लगता है। गुरुदेव तो गुरुदेव ही थे। पूज्य गुरुदेव ने जो कहा है, वही करना है। शुद्धात्मा को ग्रहण करना यह उनकी आज्ञा है। वही करना है। २०९.

देवों को यहाँ आने का प्रयोजन तो मुनियों का और भगवान का होता है। ऐसा योग तो अभी नहीं है। गुरुदेव साक्षात् अपने बीच से चले गये, परंतु देवलोक में उन्हें साक्षात् तो भगवान मिल गये। केवली मिल गये। मुनियों के समूह मिल गये। तीर्थंकरों की वाणी मिल गई। साक्षात् दिव्यध्वनि - श्रवण का सौभाग्य संप्राप्त हो गया। अब, इस क्षेत्र का क्या आकर्षण हो ! २१०.

इस भरतक्षेत्र में अभी पंचमकाल में पूज्य गुरुदेव मिले यह महाभाग्य, पुण्य का उदय था तो पूज्य गुरुदेव मिल गये। निरंतर एक ही स्थान में बरसों तक रहकर उन्होंने वाणी बरसायी। इतने सालों तक धारावाहि उनकी वाणी का लाभ मिला - यह पंचमकाल के महानपुण्य का योग था। भाग्यशाली जीवों ने उसका अपूर्व लाभ लिया। जो भाग्यशाली जीव थे उनका अभी जन्म हुआ। २११.

यह शरीर कहाँ शाश्वत रहनेवाला है ? यह काल तो बहुत अल्प है। खुद तैयारी करे तो आराधना करके उनका साथ पा सकता है। उनका तो देवलोक का आयुष्य बहुत लंबा (सागरोपम का) होता है। २१२.

प्रश्न : यहाँ से जो मुमुक्षु देवलोक में गये हों वे सब इकट्ठे हो सकते है ? पूज्य गुरुदेवश्री को पहचान सकते हैं ?

उत्तर : देवों के क्षेत्र भिन्न-भिन्न होते हैं। उनके विमान बहुत बड़े होते हैं उसमें कई देवों का निवास होता है। उपयोग देने पर पता चलता है कि, हमारे गुरु इस भवन में आये हैं। भगवान की दिव्य ध्वनि सुनने देव जाते हैं, वहाँ सब देव इकट्ठे होते हैं। तीर्थंकर भगवान के पंचकल्याणक हों वहाँ देव जाते हैं, उसवक्त उपयोग देकर देखें तो पता चलता है कि मेरे गुरु यहाँ पधारे हैं। देवों का अमुक मर्यादा तक गमन हो सकता है। अवधिज्ञान के उपयोग द्वारा जान सकते हैं। २१३.

प्रश्न : पूज्य गुरुदेवश्री यहाँ से देवलोक में पधारे, तो क्या वहाँ के देवों को पता चलता है कि यह तीर्थंकर का जीव है ?

उत्तर : हाँ, पूज्य गुरुदेवश्री यहाँ भरत में थे तब यहाँ नित्य मंगल-मंगल कार्य होते थे। वहाँ देवलोक में गये हैं तो वहाँ देवों को खयाल आता है कि अपने देवलोक में तीर्थंकर के द्रव्य का आगमन हुआ है। वहाँ महोत्सव होता है। वहाँ तो मंगल-मंगल हो गया। तीर्थंकर का द्रव्य तो तीनों काल मंगल है। २१४.

गुरुदेव में वीरता बहुत थी। पराक्रमी व शूरवीर थे। २१५.

पूज्य गुरुदेव की शास्त्र के अर्थ करने की शैली अद्‌भुत थी। शब्द के अनुसार ही अर्थ करते, फिर उसके अनुरूप श्रुत का प्रवाह बहा करता, श्रुत के स्तर पर स्तर जैसे भीतरमें से खुलते हों, सुननेवाला तो मंत्रमुग्ध ही हो जाये। एकटक उनकी मुद्रा को देखता ही रहे, नज़र हटाना ही नहीं चाहे। २१६.

हम तो उनके शिष्य थे। उनकी कृपादृष्टि अपार थी। बहुत सालों के उनके जीवन के संस्मरण हैं। अभी के और पूर्व के... उन सब स्मरणों को तो अब याद ही करना है। गुरुदेव गये, अब तो कहीं भी रस नहीं रहा। २१७.

पूज्य गुरुदेवश्री ने मार्ग बहुत स्पष्ट कर दिया है। खोल-खोलकर बतलाया है। बहुत खुलकर प्रसिद्ध हुआ है। कहीं भी अटक जाये या भुलावे में पड़ जाये ऐसा नहीं रहने दिया। २१८.

यहाँ का जीवन ही पूरा अलग है। पूज्य गुरुदेव यहाँ बिराजते थे, तब की तो बात ही कुछ और थी। यहाँ का शांत-शांत वातावरण

आत्मा का हित करने की प्रेरणा दे रहा है। साधना करने के लिये ही यह भूमि है। अध्यात्म को रस पूर्ण बनानेवाले पूज्य गुरुदेव एक ही थे। एक आत्मतत्त्व की ही बात - उससे वाणी को रस से सराबोर करनेवाले महापुरुष अन्यत्र कहाँ मिलेंगे ? २१९.

पूज्य गुरुदेव ने बहुत परोसा है। अब तो इसका अभ्यास ही करना है। पूज्य गुरुदेव सब पूरा-पूरा देकर गये हैं। कुछ बाकी नहीं छोड़ा, कि उसे किसी से लेने जाना पड़े। जैसे पिता-पुत्र को धन दे जाते हैं, इतना दें कि पूरी जिंदगी चले, चाहे कितना भी खर्च करे फिर भी पूरा न हो, वैसे धर्मपिता गुरुदेव पर्याप्त धन देकर गये हैं, और उतना ही वे लेकर गये हैं। पूरा जीवन उपभोग करने पर भी खत्म न हो ऐसा है। अतः इस धन का तू जीवन पर्यंत शांति से उपभोग करना। २२०.

पूज्य गुरुदेवश्री ने शास्त्र के उकेल किये हैं। शास्त्रों में जो सारे सूक्ष्म रहस्य थे उन सबको प्रसिद्ध कर दिये हैं। मुझे इसका अर्थ नहीं आता है तो अब मुझे कौन समझायेगा, ऐसी उलझन को रहने नहीं दिया। स्वयं स्वाध्याय करके रसास्वादन करे और पढ़े तो सब कुछ मिल जाये उतना ढेर सारा धन दिया है। २२१.

गुरुदेव ने मार्ग एकदम स्पष्ट किया है। कोई कहीं भी अटक न जाये, उलझन में न आ जाये इसप्रकार, स्पष्टरूप से दर्शाया है। अब किसी जीव को सत्पुरुष को ढूँढ़ने जाना पड़े, संत को ढूँढ़ ने जाना पड़े, और वे तुझे मार्ग की विधि बतलाये, ऐसा कुछ तुझे करने की आवश्यकता नहीं है। भेदज्ञान का मार्ग स्पष्ट किया

है, तू तत्त्व का आस्वादन किये जा, जीवन पर्यंत खाते रहो तो भी खत्म न हो, इतना दिया है। तुझे बड़ी निधि दी है। कई लोग खुद तिर जाते हैं लेकिन ये तो हमें तारणहार मिले। लाखों जीवों को सत्य के पंथ पर ले आये। २२२.

पूज्य गुरुदेव ने जितना दिया है इतना तो किसी ने नहीं दिया। इतना तो कौन देगा ? २२३.

पूज्य गुरुदेव मंगलस्वरूप है। उनकी वाणी मंगलस्वरूप है। उनकी वाणी आत्मा को जागृत करनेवाली, श्रुत की गंगा बहानेवाली, श्रुत की महिमा करानेवाली थी। आत्मतत्त्व के दातार वे एक मात्र थे। अनादि से सुप्त चेतना को जागृत करनेवाली उनकी वाणी थी। (अहो ! श्री सत्पुरुष के वचनामृत।) २२४.

पूज्य गुरुदेव इस काल में यहाँ थे यह परम सौभाग्य था। पुरुषार्थी, बुद्धिवंत, पुण्य और पवित्रता का प्रताप, दिव्यवाणी, घर पधारें तब जैसे मुनिराज पधारे हों या आँगन में जिनेन्द्र भगवान पधारे हों ऐसा लगे। तीर्थंकर का द्रव्य गुरुदेव। उनका आगमन हमारा सौभाग्य था। आत्मा की साधना करनेवाले तीर्थंकर द्रव्य यहाँ पधारे थें। २२५.

पूज्य गुरुदेवश्री का इतने बरसों तक नित्य पावन सान्निध्य मिला। जीवन में उनके पावन स्मरण हैं यही सब से बड़ा तीर्थ है। किसी भी ज़गह सोनगढ़ जैसा शांत वातावरण नहीं दिखता। शांतिमय और जैसे आत्मा की साधना का स्थान हो, ऐसा क्षेत्र है। पूजा, भक्ति

और स्वाध्याय करनेवाले मुमुक्षुओं की एक साथ इतनी बड़ी संख्या कहीं नहीं देखी जाती। २२६.

जब ब्रह्मचर्याश्रम बनने काम चलता था तब हररोज़ पूज्य गुरुदेवश्री पधारते थे। उनके पावन चरणों से आश्रम पावन होता था। रूम व रसोई देखकर पूज्य गुरुदेवश्री कहते थे कि 'बहनें रसोई में काम करते-करते एक-दूसरे से तत्त्व की चर्चा करेंगे।' २२७.

पूज्य गुरुदेव ही महाप्रभावशाली पुरुष थे। उनके अनुसरण से सब आता है। साधना आये, सातिशयता आये। सब उनका ही प्रताप है। उनके पीछे ही सब आता है। तीर्थंकर का द्रव्य पूज्य गुरुदेव, उन्हें यहाँ आकर सब कुछ मिल गया। २२८.

जब पूज्य गुरुदेवश्री का परिवर्तन निश्चत हुआ तब यहाँ बँगला भी तैयार था। समयसार शास्त्र का जो विशालरूप से पूरे भारत में प्रचार हुआ है यह सब उनका प्रताप है। २२९.

पूज्य गुरुदेव बरसों से यहाँ सोनगढ़ में रहते थे। फिर भी उन्हें किसी का प्रतिबंध या स्पृहा नहीं थी। २३०.

पूज्य गुरुदेवश्री के पुनीत प्रताप से ज़गह-ज़गह जिनमंदिर, प्रतिष्ठाएँ हुई, ये सारी प्रभावना उनकी ही देन है। उनके प्रताप से ज़गह - ज़गह अध्यात्म का वातावरण फैल गया। २३१.

पूज्य गुरुदेवश्री उमरालाधाम में उजमबा माता के गर्भ में जब

आये होंगे, तब उन्हें शुभ स्वप्न आये होंगे। जिनकी कोख में ऐसे रत्न का आगमन हो वे कितने महान भाग्यवान ! गाँव के लोक भोले-भाले होते हैं इसलिए उन्हें स्वप्न का भाव खयालमें नहीं आया होगा। २३२.

आत्मा का साधना-पंथ वैसे सरलरूप से गुरुचरणों में होता है। देव-गुरु का सान्निध्य होना, यह तो बड़ी बात है। ऐसा साक्षात् न हो तो गुरु को हृदय में रखकर तुझे साधना करनी है। २३३.

समयसार कलश - १०४ में ``निषिद्ध सर्वस्मिन्'' आता है कि मुनियों को किसी शुभाशुभ भाव का शरण नहीं है तो वे मुनि कोई निराश्रय नहीं हैं। मुनिओं को आत्मा का आधार है। वे तो निष्कर्म हो गये। उन्हें किसका शरण है ? आत्मा का शरण है।

यहाँ रहनेवाली ब्रह्मचारी बहिनें जब गुरुदेव के शरण में आयीं, तब नक्की किया था कि चाहे जितनी प्रतिकूलता आ जाए तो भी जीवन में टिके रहेंगे। स्वयं ही अपने आप का शरण है। २३४.

गुरुदेव बार-बार कहते थे कि तू स्वयं तैयार हो जा। तेरा उपादान तुझे ही तैयार करना है। किसी को ऐसा लगे कि, अब आप कैसे जीएंगे ? क्या करेंगे ? (उत्तर के रूप में) कैसे जीएंगे क्या ? पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य मिला है। जिसका जीवन निरूपाधिमय है, देव-गुरु-शास्त्र जिसके हृदय में बिराजते हैं, जागृत आत्मा मौजूद है, देव नज़दीक हैं, गुरु नज़दीक हैं ! पंच परमेष्ठी जिसके हृदय में बिराजते हों उसे कहीं भी दिक्कत नहीं है। संसारी जीवों का जीवन तो कितना उपाधिमय है ! २३५.

बड़ों के आश्रय में रहे उसे चिंता कैसी ! कुछ नहीं। बालक जैसे माता की गोद में बैठा हो तो वह कितना निश्चिंत होता है। वैसे ही बड़ों के आश्रय में रहा उसे कोई चिंता नहीं है।

वैसे ही जिसका शुद्धात्मा जागृत हो उसे चिंता कैसी ? आत्मा निरूपाधि है, बाहर से निरूपाधिमय करना है। तो उसका जीवन तो आनंदमय जीवन होता है। आत्मा तो सदा अकेला है। अकेले जीवन जीना है। बस, एक आत्मा की ही साधना करनी है। ऐसा पवित्र और शांत स्थान, ऐसे गुरु मिले, उनका पवित्र सान्निध्य मिला, इसके जैसा सौभाग्य और क्या हो सकता है ? दुनियादारी की लाखों - करोड़ों की संपत्ति मिलना यह कोई भाग्य नहीं है।

ऐसे देव-गुरु का साथ, ब्र. बहिनों का साथ, साधर्मिओं का सहवास - ये सब मिलना मुश्किल है। ऐसी स्थिति में जीवन जीना दुष्कर है ही नहीं। २३६.

पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति थी। वे बिराजते थे - वह तो बड़े का आश्रय था। ``बड़ों की गोद में बैठा उसे चिंता कैसी ?'' अब तो पूज्य गुरुदेव को हृदय में रखकर आगे बढ़ना है। यहाँ तो एकांत मिले, अकेला ही अकेला, जब संग की इच्छा हो तब सत्संग, साधर्मियों का संग मिले, चर्चा-वार्ता करे, स्वयं अकेला निज कार्य कर सकता है। २३७.

जीवन में जो-जो सुंदर व उत्तम प्रसंग का लाभ मिला हो उसे याद करना। उन प्रसंगों की हूँफ में (आश्रय में) भी जीव को आनंद आता है। पूज्य गुरुदेव का साथ मिला, जीवन में उनके साथ तीर्थक्षेत्रों की यात्राएँ की, जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं का लाभ

मिला है। उनका पवित्र आहारदान, उनका मंगलमय प्रवचन-श्रवण, उनकी दिव्य गरज़ती वाणी के प्रसंग याद करना। २३८.

पूज्य गुरुदेव ने तो बहुत वाणी बरसायी है। वाणी का प्रपात बरसाया है। उनकी यह दिव्यवाणी सबके हृदय में बस गई है। सबके हृदयपट में टंकोत्कीर्ण हो चुकी है। २३९.

पूज्य गुरुदेवश्री जीवों को शुभ भाव से छुड़ाकर शुद्धता के मार्ग पर ले आये हैं। जीवो को किसी की आशा न रहे, लेशमात्र किसी की स्पृहा न रहे, सभी द्रव्यों की स्वतंत्र सत्ता को समझाया। `फक्कड़राम' जैसा जीवन बीता (जी) सके ऐसा स्वतंत्र मार्ग दर्शाया है। बस ! एक निज आत्मा को खोज़ना और उसी में रह जाना ऐसी ही भावना रहे, और अन्य कहीं भी भटकना न पड़े ऐसा सूक्ष्म तत्त्व गुरुदेव ने दिया है। २४०.

पूज्य गुरुदेवश्री विरासत में इतना अधिक देकर गये हैं कि, भविष्य में यह वाणी बरसों तक गरज़ती रहेगी। ये टेप रेकार्ड के साधनों से उनकी दिव्य वाणी बरसों तक गूँज़ती रहेगी, आत्मा का बोध देती रहेगी। २४१.

पूज्य गुरुदेवश्री के युग में लोग गुरुदेवश्री के प्रताप से समयसार आदि शास्त्रों को अत्यंत महिमापूर्वक विशेषरूप से समझने लगे। घर - घर में समयसार शास्त्र का स्वाध्याय शुरू हो गया। जैसे मानो `समयसार का युग' शुरू हो गया ! जैसे मानो समयसार और गुरुदेव एकमेक हो गये। २४२.

तीर्थंकर भगवंतों के पूर्वभव, पुराण पुरुषों के पूर्वभव, उसमें प्रत्येक जीवों को भिन्न-भिन्न प्रकार का उदय होता है। तीर्थंकर के भव के पूर्व, पुण्य और पवित्रता का ऐसा सुमेल, उदय आता हो ऐसा पुराण में सबके जीवन देखने पर किसी को ऐसा बना हो ऐसा नहीं लगता। पूज्य गुरुदेव के जीवन में जो बना है वह तो अपूर्व है। सारी दुनिया को उन्होंने यहीं पर प्रसन्न-चित्त कर दिया। जैसे तीर्थंकर भगवान दुनिया को प्रसन्न-चित्त कर देते हैं वैसे उनके तीर्थंकरत्व की शुरूआत तो यहाँ वर्तमान में भरतक्षेत्र से शुरू हो गई। २४३.

✻

इस क्षेत्र में लोग क्रियाकाण्ड में ही धर्म मानते थे। ऐसे क्षेत्र में जन्म लेकर पूज्य गुरुदेव ने अकेले हाथों, एक व्यक्ति होकर धर्म का ध्वज लहराया। जैसे तीर्थंकर भगवान के काल में वे एक मात्र सर्वशक्तिशाली जीव होते हैं, उनके जैसा और कोई होता ही नहीं, वैसे पूज्य गुरुदेव ने स्वयं एक ने ही, अकेले हाथों, इस भारत में धर्म की जमी हुई ज़ोरदार पीढ़ी चलाई।। जैसे तीर्थंकर की जोड़ नहीं मिलती वैसे पूज्य गुरुदेवश्री अजोड़, एक मात्र ऐसी व्यक्ति, जिसकी जोड़ न मिले वैसे, पूज्य गुरुदेव इस काल में एक ही, बेजोड़ पराक्रमी, जिनका जोड़ मिलना मुश्किल ऐसे शूरवीर, आत्मसाधना करते-करते, त्यागीपने में रहकर तीर्थंकर-सा कार्य उन्होंने किया। २४४.

✻

पूरे भारतदेश में लोगों को, जो कि (मोह की) गहरी नींद में थे उन्हें जगाया। लोगों को सत्य तत्त्व का संदेश, देश के कोने-कोने में विहार करके उन्हों ने फैला दिया। तीर्थंकर के लक्षण

जैसे मानो यहीं से शुरू हो गये। २४५.

✻

इस पंचमकाल में उनकी दिव्यवाणी तीर्थंकर की वाणी की तरह, शास्त्रों के द्वारा हज़ारों बरसों तक गूँजती रहेगी। ये तो तीर्थंकर भगवान के चरण मिले थे। उनका सान्निध्य वह साक्षात् तीर्थंकर भगवान का सान्निध्य मिला था ऐसा समझना। २४६.

✻

यह तो गुरुदेव का अलग ही प्रकार का भव। अभी पूज्य गुरुदेव मिले यह तो जैसे साक्षात तीर्थंकर भगवान ही मिले हैं ऐसा जानना। उनकी वाणी तो जैसे तीर्थंकर भगवान की ॐ दिव्यध्वनि ही मिल गई ऐसा समझना। उनके पुनीत चरणों का सान्निध्य मिला यह तो जैसे मानो साक्षात् तीर्थंकर भगवान के चरणों की उपासना की। उनका वर्तमान भव...जैसे मानो तीर्थंकर का नज़दीक का भव। २४७.

पूज्य गुरुदेवश्री के टेप-प्रवचन में पूज्य गुरुदेव की वाणी में कैसी पुरुषार्थसभर सिंहगर्जना थी। मेरे श्रोता सामान्य नहीं। वे तो सिंह और बाघ की माफ़िक विकार को निर्दयरूप से तोड़ देंगे। जिन्होंने अप्रतिहत भाव से प्रारंभ किया है, उनका वीर्य हारनेवाला नहीं। आज टेप में (१५-५-८१) आया थाः

``**जे दिशाए सिंह संचर्या,**
रजु लागी तरणां,
उभा सूकशे तरणां,
पण नहीं चरे तेने हरणां।''

वैसे आत्मा के पराक्रमी, सिंह जैसे शूरवीर जीव हैं, उनके वीर्य की रज से चैतन्य आत्मा भगवान जागृत हो जाता है। जैसे ही आत्मा भगवान जागृत हुआ कि कर्म तो एकदम दूर भाग जाते

हैं। २४८.

✻

पूज्य गुरुदेवश्री की बुलंद आवाज़, शूरवीर सिंह जैसे, उनके सामने तो किसी की हिम्मत नहीं कि, प्रश्नचर्चा या विरोध कर सके। बाहर से कोई बोले लेकिन उनके सामने तो सीधा कोई नहीं आ सकता। पूज्य गुरुदेव को प्रत्यक्ष देखते ही उसे अपने प्रश्नों का उत्तर मिल जाए। २४९.

✻

यह पूज्य गुरुदेव की वाणी तो पुरुषार्थ को जागृत करनेवाली, पराक्रमी केसरी सिंह जैसी शूरवीरतापूर्ण वाणी, जब उस वाणी को साक्षात् सुनते थे, तब उनकी वह दिव्य वाणी के प्रत्यक्ष शब्दों से लोगों के हृदय प्रफुल्लित हो उठते। जीवों का चैतन्य पुरुषार्थ जागृत हो उठता था। २५०.

✻

पूज्य गुरुदेव स्वयं तो अड़िग रहे, दुनिया को अपनी ओर खींचा स्वयं दुनिया की ओर आकर्षित नहीं हुए। आत्मा की मुख्यता रखकर, अनुभूति की महिमापूर्वक धर्म का झंडा लहराया। २५१.

✻

पूज्य गुरुदेव के पास यहाँ सबकुछ था फिर भी निर्लेप रहते थे। देव के संयोगों में ओतप्रोत हो जाए वैसा उनका जीवन नहीं था। यहाँ से ही निर्लेप थे। अंदर से श्रुत की गंगा उछलती थी। भीतरमें से उछले हुए श्रुत से वे ओतप्रोत रहते थे। यहाँ जैसे निर्लेप थे वैसे ही देवभव में हैं। सारी जिंदगी उन्होंने तो त्यागी-सा, पराक्रमी जीवन बिताया था। वहाँ भी गुरुदेव तो अपना (कार्य) ही कर रहे हैं। २५२.

✻

गुरुदेव को जैसी स्वयं की भावना थी वैसा ही मिल गया। उनका आत्मा तो वहाँ बिराजमान है। वहाँ श्रुत की गंगा का बहना चालू ही है। वे (वहाँ) किसी अन्य कार्य में लीन नहीं होते। २५३.

भक्ति करने का प्रसंग आये तब ऐसा लगता कि क्या गाना? मुझे श्रद्धांजली लिखने का कहा गया तब ऐसा लगा कि, अरे! ऐसे दिन आ गये! गाने के बारे में भी ऐसा लगा कि भक्ति तो पूज्य गुरुदेवश्री घर पधारें तब, स्वागत के निमित्त से गीत-भक्ति का प्रसंग बनता था। अब क्या गाना, और क्या लिखना! ऐसे दिन आ गये! २५४.

अभी तो सबके हृदय में गुरुदेव-गुरुदेव हो रहा है। सब के हृदय में एक ही भावना है कि पूज्य गुरुदेव एक बार यहाँ पधारें! इस क्षेत्र से दूर चले गये हो, लेकिन आप हमारे अंतरमें से दूर नहीं जा सकते। हमने हमारे अंतर में तो सदा निरंतर आपको बिराजमान किया है। वहाँ से कैसे जा पाएंगे ? 'अंतर में तो नित्य बिराजो नाथ!' २५५.

पूज्य गुरुदेव तो देवलोक में बिराजते हैं। 'चांदलिया' के साथ संदेशा भेजा है, वह चांदलिया (चंद्रमा) हररोज़ विदेह में जाता है उसके साथ संदेशा भेजा है। विदेह की सभा में दिव्यध्वनि सुनने पूज्य गुरुदेव हररोज़ जाते हैं। इन्द्र समान सुशोभित हैं। अतः तू वहाँ जाना, वहाँ हमारा संदेशा सुनाना। २५६.

पूज्य गुरुदेवश्री हयात नहीं है यही सब से बड़ी क्षति है। वे

एक पुरुष नहीं हैं तो कुछ नहीं है। सबको अमृतपान करानेवाले गुरु थे। उनकी वाणी का असर, परिणति का असर, सब जीवों पर होता था। उनकी वाणी का ज़ोर व हृदय वैराग्य से भीगा हुआ था। `आत्मा...आत्मा' का नाद करनेवाले एक ही थे। `एक गये' तो सब गया। **उनकी प्रत्यक्षता ही** (**बहुत**) **बड़ी बात थी।** २५७.

✻

``हूँ तो हालूँ चालूँ ने गुरु सांभरे रे,
मारी अंतरनी साधनामां गुरु सांभरे रे।'' २५८.

✻

पूज्य गुरुदेवश्री के वियोग में कहीं नहीं सुहाता, तो क्या करना ?

न गमे तो क्या करें ? मन को तो मनाना पड़ेगा ! पूज्य गुरुदेव का अभी सान्निध्य नहीं है। इसलिए मन को शुभ की भूमिका में जोड़ना पड़े। साधना की भूमिका में अंत तक श्रुत का अवलंबन रहता है, मुनियों स्वरूप से बाहर आते हैं तब शुभ के प्रत्येक प्रसंग में जुड़ते हैं। उपदेश देते हैं, शास्त्र लिखते हैं, तो कहीं न कहीं तो खड़ा रहना ही होगा ? यदि कहीं नहीं जुड़ेगा तो बैचेनी और आकुलता उत्पन्न होगी। इससे दुःख होगा। परिणाम तो होते ही रहते हैं। २५९.

✻

यह स्वाध्यायमंदिर - गुरु का पावन धाम। यहाँ आते ही सबकुछ याद आ जाये। जो पहली बार आता है वह तो रो पड़ता है। उनके पवित्र सान्निध्य में जो आनंद व उल्लासपूर्वक रहनेका लाभ मिला था, भक्तिभाव के प्रसंग का जो लाभ मिला था, वह सब याद आने पर अफ़सोस होता है। हृदय रो पड़ता है। पूज्य गुरुदेव की वह पर्याय तो अब वापिस आनेवाली नहीं है। संसार तो ऐसा

ही है। २६०.

✱

मलाड की (९१वीं) जन्मजयंति... पूज्य गुरुदेव जैसे समवसरण में बैठे हैं। दैवी विमान लटकते थे। जैसे मानो दैवी विमान में व समवसरण में जानेवाले हैं ! ऐसे सारे संकेत जैसे पूर्व में ही हो गए हों, ऐसा बन गया ! पूज्य गुरुदेव को याद करते हैं तब सब याद आ जाता है। २६१.

✱

महापुरुष तो जब भी जायें तब आयुष्य कम ही लगे; ऐसा लगे कि जैसे उनका आयुष्य लाखों-करोड़ों वर्ष का हो और कायम लाभ मिलता रहे। परंतु कुदरत की रचना ही ऐसी है कि कोई भी शरीरधारी आत्मा कायम रहे ऐसा नहीं बनता। आत्मा कायम रहता है किन्तु शरीर कायम नहीं रहता। चतुर्थ काल में भी ऐसा ही बनता था। २६२.

✱

गुरुदेव की तबियत ठीक नहीं थी उस दिन दोपहर को थोड़ा अर्ध निद्रामें से अचानक उठ गई। ऐसा लगा कि देवलोक में मंगल-मंगल है। महाविदेह में मंगल-मंगल है। गुरुदेव कल अस्पताल में नहीं होंगे, यहाँ सोनगढ़ में गुरुदेव का स्वागत हो रहा है। उस वक्त तो अर्थ समझ में नहीं आया। ऐसा लगा कि यहाँ स्वागत कैसा ! अस्पताल में नहीं हैं, तबियत ठीक नहीं है, तो फिर गये कहाँ ! ऐसा विचार आया कि यह सब क्या है ! बाद में समाचार आये तब सब समझ में आ गया। २६३.

✱

अंदर में अपना कार्य तो खुद को ही करना होगा। गुरुदेव

की वाणी का अतिशय ऐसा था कि बाहर के सभी कार्य छूट जाए। गुरुदेव ने सोनगढ़ में बरसों तक निवास करके इतनी तत्त्व की घुट्टी पिलाई है कि अन्यत्र कहीं रस पड़े (ही) नहीं। २६४.

✳

गुरुदेव को कैसे भूलें ! ऐसे विशिष्ट पुरुष... उनका द्रव्य मंगल, वाणी मंगल, उन्हें कैसे भूलें ! भूलने जैसा नहीं है। कौन भूलेगा ! वे शाश्वत हैं। यहाँ भक्तों के बीच वाणी के प्रपात बरसाये हैं। वाणी ऐसी थी कि जीव जागृत हो जाए। यहाँ स्वयं दिव्यध्वनि छोड़ते थे। अब स्वयं दिव्यध्वनि सुनने पहुँच गये। २६५.

✳

(पूज्य गुरुदेवश्री के परिवर्तन संबंधित। चैत्र सुदी-१३; २२-४-८६) यह संप्रदाय अलग है, यह सब अलग है, इसलिए उन्होंने मन में नक्की कर लिया था कि मुझे छोड़ देना है। संप्रदाय में क्रियाकाण्ड, आहार की, विहार की सब क्रियाओं का कड़ा पालन करते। कुछ अनिष्ट हो जाता तो बिजली की माफ़िक वापिस मुड़ जाते, आहारदान के लिए आये हों उस घर को छोड़ देते तब लोगों को तो आघात लग जाता।

मुनिपना तो कुंदकुंदभगवान ने जो कहा है वह दिगंबर मुनिपना सत्य है, ऐसा लगता था। परिवर्तन किया तब उन्होंने जो किया वही योग्य होगा, ऐसा समाज के सभी लोगों को लगा था। २६६.

✳

हम तो गुरुदेव के सेवक हैं। दासानुदास हैं। २६७.

✳

गुरुदेव ने पामर को पार उतारा, भटके हुए को मार्ग दिखलाया, दिव्य चक्षु प्रदान करके पंचमकाल में मार्ग प्रकाशित किया। रास्ता

दिखलाया अब खुद को चलना बाकी है। २६८.

✻

`क्रिया में, शुभाशुभ भाव में अटकना नहीं, पर्याय का लक्ष रखकर अटक मत जाना; वरना शाश्वत द्रव्य हाथ नहीं आयेगा। इसलिए (अखण्ड) द्रव्य को ग्रहण कर। खण्ड-खण्ड को जानने से अखण्ड हाथ नहीं लगेगा इसलिए अखण्ड को ग्रहण कर। गुरुदेव ने हमें कहाँ से कहाँ लाकर रख दिया ! २६९.

✻

यहाँ गुरुदेव विराजते थे। धन्य यह नगरी, धन्य यह देश ! - अंतर में गुरुदेव का आकर्षण है इसलिए ऐसा लगता है कि गुरुदेव हैं ही... गुरुदेव थे तब यहाँ की `रोनक' कुछ और ही थी, इसकी तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। जिसने नज़रों से देखा हो उसको ही खयाल आ सकता है। अलग-अलग टाइम पर सब प्रोग्राम चलते थे। खाने-पीने के सभी कार्यों को गौण करके सब पहुँच जाते थे, गुरुदेव का ऐसा प्रभाव था। जिसने नहीं देखा, उससे बात तो करें, लेकिन उसकी कल्पना में नहीं आ सकता। २७०.

✻

पूज्य गुरुदेव के प्रताप से सब (स्वरूप का) अभ्यास करना सीखे हैं। उसका बार-बार अभ्यास करे तो क्षणभर में जीव प्राप्त कर सकता है।

इस काल में (संसार से) उबरने का उपाय एक गुरुदेव हैं। २७१.)

✻

गुरुदेव बिराजते थे वह रमणीयता थी। अनजान आदमी कल्पना

नहीं कर सकता कि वह रमणीयता कैसी थी ! स्वाध्याय मंदिर - गुरुदेव बिराजते थे वह तो कैसा लगता था ! गुरुदेव की वाणीरूपी बंसरी के सूर मिलना मुश्किल है। ऐसा योग मिलना मुश्किल है। गुरुदेव की मौजूदगी में जो कार्य होते थे, उसका प्रकार कोई अलग ही था। २७२.

पूज्य गुरुदेव के अंतेवासी शिष्य... हम तो आपके अंतेवासी शिष्य होकर मोक्ष में भी साथ ही रहनेवाले हैं। २७३.

गुरुदेव के आश्रय में बैठा उसे चिंता नहीं, वैसे ही द्रव्य के आश्रय में बैठा उसे चिंता नहीं है। गुरुदेव बिराजते थे तब कोई चिंता ही नहीं थी। २७४.

भव की कैसी विचित्रता है ! परिणमन कैसा हुआ करता है ! एकबार महाविदेह में, फिर यहाँ, फिर देव में और बाद में महाविदेह में। यह सब वैराग्य में लाने जैसा है। गुरुदेव यहाँ विहार करते थे, अब देवलोक में विहार करने लगे। शरीर का पलटना भी तो देखो ! यहाँ औदारिक शरीर, वहाँ वैक्रियिक दिव्य शरीर... संसार का स्वरूप ऐसा है। २७५.

गुरुदेव के समग्र जीवन दौरान परिवर्तन आते रहें। २४ वें वर्ष में दीक्षा ली - संसार छोड़ा। २१ वर्ष बाद दूसरा परिवर्तन, ४५ वें वर्ष में संप्रदाय छोड़कर परिवर्तन किया, यह ज़बरदस्त पलटा था। बाद में २१ साल बाद फिर से परिवर्तन आया - मोटर में बैठकर यात्रा की शुरूआत हुई। बाद में चौथा पलटा, ८९ की

उम्र में शरीर में फेरफार हुआ। और ९१ वें वर्ष में तो बड़ा पलटा आ गया। ऐसा परिवर्तन आ जाएगा यह तो कभी सोचा भी न था। २७६.

✻

गुरुदेव में ऐसी शक्ति थी कि उनके पास जो जाये उसे मनवांछित सिद्धि प्राप्त हो, ऐसा उनका प्रभाव था ! गुरुदेव ने सबको मार्ग पर चढ़ा दिया। कर्तृत्वबुद्धि छोड़। `ज्ञाता हो जा।' गुरुदेव ने समयसार आदि सभी शास्त्रों का स्पष्टीकरण करके, उसके हार्द को प्रकाशित किया, वरना तो कौन समझ सकता ! २७७.

✻

गुरु के तीक्ष्ण प्रहार जिससे चैतन्य जागृत हो जाता है। गुरु के वचन अमोघ रामबाण हैं। निमित्त से होता नहीं फिर भी संबंध है। भगवान की दिव्यध्वनि में हज़ारों जीव जागृत हो जाते हैं। वैसे गुरुदेव की वाणी चैतन्य को जागृत करती है। २७८.

✻

यहाँ का वातावरण एकांतमय... जंगल जैसा लगे, थोड़ी बस्ती, बड़े-बड़े चौक, चारों तरफ जिनमंदिर, एकदम जंगल भी नहीं और ज्यादा भीड़ भी नहीं। ज्यादा बस्ती भी नहीं और बिलकुल निर्जनता भी नहीं। स्थान सब बड़े-बड़े। सब अलग-अलग आराम से बैठे हों, कोई मंदिरों में, कोई गुरुदेव के स्थान में बैठे हों। सब रमणीय लगे, निर्भयतापूर्ण लगे। २७९.

✻

आत्मा की रसिक बात कहनेवाले गुरुदेव थे। चैतन्य भण्डार भरा था जिसे गुरुदेव ने खोल दिया। गुरुदेव सबको ऊपर लाये, गाँव-गाँव में जाकर दुंदुभिनाद बजाया... `विभाव से उस पार आतमा

बिराजमान है, उसमें ज्ञान है, स्वानुभूति, सुख-आनंद है। उसकी स्वानुभूति प्रगट होती है, वेदन प्रगट होता है, पात्र थे वे जागृत हो गये। २८०.

✻

गुरदेव का यह स्थान... यहाँ के रजकण... रजकण में गुरुदेव की पुकार है। यह क्षेत्र... यह शांति का धाम अलग ही है। किसी को बाहर जाने का विचार नहीं आता। गुरुदेव की भूमि - पावन भूमि है। साधर्मी का संग इच्छने जैसा है। सब **एक ही गुरु के भक्त हैं।** २८१.

✻

पूज्य गुरुदेव का प्रताप तो देखो... अभी जीवों को वेदना के काल में कैसी जागृति व आत्मा का लक्ष्य रहता है - यह गुरुदेव का प्रताप है। २८२.

✻

गुरुदेव की वाणी का पड़कार कोई अलग ही प्रकार का था। व्होरा-कणबी-पटेल-हरिजन-पारसी इत्यादि सब समयसार पढ़ते, प्रवचनसार आदि पढ़ते। अलिंगग्रहण की १७२वीं गाथा १८-१९-२० बोल की सूक्ष्म-सूक्ष्म चर्चा करते। २८३.

✻

गुरुदेव तो दृष्टि का विषय ही स्पष्ट करते हैं। बीचवाली दशा की बात करते ही नहीं। प्रथम क्या ! प्रथम कुछ है ही नहीं। सम्यग्दर्शन ही सर्वप्रथम है। एक घा और दो टूकडे... यही सिद्धांत है।

प्रयास में सही भेदज्ञान नहीं हुआ, वह सब तो बीच की बातें हैं। सही भेदज्ञान तो दो टुकडे होना वही है। अलग होना वह

सही है। मेहनत करनेवाला तो प्रयास में है। छाछ के साथ मक्खन हो तो उसका स्वाद बेस्वाद लगता है। जब तक आखरी विकल्प है, बाद में अभी सम्यग्दर्शन प्रगट होगा, परंतु दृष्टि कहाँ वह देखने रुकती है ? २८४.

इस पंचमकाल में गुरुदेव मिले। ऐसे चैतन्य तत्त्व की बात सुनने मिली, चैतन्यदेव बतलाया। उसे अब कैसे छोड़ें ! चैतन्यदेव की वार्ता सुनकर अपूर्वता लगे, तो इस वार्ता सुनानेवाले कौन हैं ? ऐसे गुरुदेव को हृदयमें से कैसे भूल सकते हैं ! महा पुण्य थे तब तो यह बात मिली। डंके की चोट पर कहा कि चैतन्यदेव तेरे पास है। सब की दृष्टि बदल दी परंतु जिसे अंतर में ग्रहण हो वह महाभाग्यवान है। वाणी के प्रपात बहाये... 'देख लो... आत्मा ऐसा है...' उसका आश्चर्य दिखाया। स्वतंत्रता खयाल में आ जाये तो पर का कर्तृत्व मिट जाये। स्वाधीनता जैसा सुख नहीं। २८५.

``निवृत्ति पंथ दिपावजो'' ऐसा आता है। सब छोड़कर गुरु के सान्निध्य में आये, निवृत्ति ली है तो अब गुरु के पंथ को निवृत्तस्वरूप आत्मा की दृष्टि करके रोशन करना। २८६.

गुरुदेव के प्रताप से छोटे-बड़े बच्चों को सबको धर्म की रुचि हुई है। तू कौन है ? मैं तो आत्मा, मैं जाननेवाला हूँ, ज्ञायक हूँ - ऐसा दृष्टि सबको दिखायी, फिर कम हो, ज्यादा हो, किन्तु अंतरदृष्टि का खयाल आ गया कि मार्ग यह है; मार्ग एकदम स्पष्ट किया है। कितनी भ्रमणाओं से गुरुदेव ने बचा लिया है ! २८७.

यह स्थान कैसा है ! इसका विचार आया था।

``तमारी शिवभूमि ज्यां, अमारो वास त्यां होजो'' भगवान की भूमि, कल्याणरूपी भूमि, गुरु की भूमि कि जहाँ भगवान, गुरुदेव याद आयें। वहीं वास करने जैसा है। गुरु की शिवभूमि में आनंद आये, गुरु के स्मरण याद आये, गुरु याद आये, गुरु की भूमि में विश्राम मिले, शांति मिले। भले गुरु नहीं हैं परंतु गुरु याद आते हैं। ऐसा पवित्र शांत यह गुरु का धाम है। २८८.

पूज्य गुरुदेव की ९३वीं जन्म-जयंती की कुमकुम पत्रिका लिखी गई। गुरुदेव को याद करते हैं तो हृदय काम नहीं करता। गुरुदेव के बिना सब ऐसा... साक्षात् (थे और) बीज (दूज) को मनाया था इसलिए वे सारे संस्मरण याद आते हैं। गुरुदेव बिराजते थे वे दिन कुछ और ही थे। २८९.

स्वाध्यायमंदिर में रात को हम देखने गए तब चरणकमल आदि देखकर ऐसा लगा कि ये सब किया तो है परंतु गुरुदेव पधारें तो अच्छा, ऐसा पूरी रात विचार आते रहे।

ऐसे में सुबह-सुबह स्वप्न आया। गुरुदेव देव के रूप में, पोशाक देव का परंतु पहचाना जा सकता था कि यह गुरुदेव हैं, मैं ने कहा (पूज्य बहिनश्री) `पधारो... गुरुदेव... पधारो...' ``बहिन ! ऐसा मन में मत रखना। मैं यहाँ ही हूँ ऐसा समझना'' ऐसा तीन बार बोले। `मुझे तो आपने आज्ञा की परंतु सब (वियोग से) दुःखी हो रहे हैं।' परंतु बाद में कुछ नहीं कहा। इस बात से सबके हृदय में गुरुदेव बिराजते हों ऐसा वातावरण हो गया। २९०.

पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति में उनका अतिशय ऐसा था कि सब पार उतर जाता। चाहे कैसा भी साहस कर ले, पार उतर जाते।

पूज्य गुरुदेवश्री की मौजूदगी में आखरी दिनों मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती थी परंतु पूज्य गुरुदेव की वाणी बरसती हो फिर भी जा नहीं सकती थी। मुझे खुद को बहुत अखरता था। इसलिए ज़ोर कर-कर के जाती थी। यहाँ वाणी-श्रवण का ऐसा दुर्लभ योग मिलता है ऐसा लगता था। मेरा शरीर ऐसा हो गया।... इस बीच गुरुदेव चले गये। २९१.

✣

गुरुदेव यहाँ वाणी बरसाते थे, श्रुत का कितना प्रेम था ! उनकी वाणी तो वहाँ भी चालू ही है। श्रुत की चर्चा करना, वाणी बरसाना, यह तो उनका विरूद ही है। जहाँ भी जायें वाणी तो उनके साथ ही है। उनकी वाणी-श्रवण का प्रेम तो सबको है, इसलिए वहाँ भी देव कहते होंगे `बोलिये बोलिये, देवराज ! सुनाईये' ऐसा कहते होंगे। २९२.

✣

बरसों से यहाँ प्रत्येक प्रोग्राम नियमित चलते थे, प्रतिष्ठा, यात्रा-विहार सभी प्रसंग - भक्तगण भक्ति से, आनंद से मनाते थे। तब ऐसा लगता था कि यह काल तो ऐसे ही कायम रहेगा। परंतु फेरफार हो गया। ऐसे दिन देखने की घड़ी आ गई। काल काल का काम करता है। २९३.

✣

यह तो गुरुदेव की पवित्र भूमि है। यहाँ आते ही भाव अलग ही प्रकार के हो जाये। किसी को ऐसा लगता हो कि सोनगढ़

में कुछ नहीं है, गुरुदेव नहीं है इसलिए कुछ नहीं है। परंतु यहाँ प्रोग्राम चलते हैं, स्वाध्यायमंदिर और सब देखते हुए गुरुदेव के स्मरण, मुद्रा याद आ जाती है। वाणी टेप में सुनी, उसमें आया था कि ``अम परदेशी पंखी आ रे देशना नाहीं रे'' - कैसे रंग में, धुन में गाते थे ! जैसे मानो प्रत्यक्ष गुरुदेव हों ! भूतार्थ दृष्टि के कितने ज़ोरपूर्वक उनके शब्द होते हैं ! २९४.

मैं चैतन्य हूँ.... चैतन्य हूँ, गुरुदेव के प्रताप से सब जानने मिला। माल तैयार मिला है। तैयार करके मसलकर दिया है। अब खाना है खुद को। भेदज्ञान का मार्ग हथेली में दिखाते हैं। तैयार करके देते हैं कि तू अब खा ले। पहले यह बात कहीं सुनने नहीं मिलती थी। गुरुदेव पहले से भी अब ज्यादा स्पष्ट करके बताते हैं। जब तक न हो, तब तक वाणी सुनना, विचार करना, प्रीतिपूर्वक सुनना। २९५.

पूज्य गुरुदेव की वाणी में जो सारा तत्त्व आता था वह अन्यत्र कहाँ से आये ! उनकी कमी की पूर्ति कहाँ से हो ! उनकी वाणी, उनका श्रुत, उनका ताप, उनकी सिंहवृत्ति, निस्पृहता, पराक्रमी, शूरवीर, न किसी से डरे, न किसी की परवाह करे, ऐसे पुरुष कहाँ से हों ? किसी को लगे कि कृपा है परंतु दूसरी क्षण में ही अनुचित लगे तो स्पष्ट कह दे। निःस्पृही पुरुष और उनकी निःस्पृहीवृत्ति, वाणी में तो जितना शक्य हो उतना कह देते, कितना अधिक दे देते - ऐसे गुरुदेव कहाँ हो सकते हैं ! २९६.

गुरुदेव भरतक्षेत्र में बहुत धर्म प्रभावना करके गये हैं। अध्यात्म

को कौन समझता था ! गुरुदेव के कारण चारों तरफ अध्यात्म का ग्रहण हुआ। अभी तो यहाँ गुरुदेव के चरणकमल... उनके रजकण व प्रभा, (सब) यहाँ है। ४५-४५ साल तक उपदेश देकर बहुत कुछ दे गये हैं। ४५ सालों की बात करने जाए तो पूरी न हो। गुरुदेव ने बहुत-से शास्त्रों का वांचन किया वे सारे प्रसंग, यात्राओं के - प्रभावना के प्रसंग, आहारदान के प्रसंग, इन सब की बातें पूरी नहीं हो सकती। इसके तो पुराण लिखे जायेंगे। गुरुदेव स्वयं पुराणपुरुष थे। ये सारी बातें पूरी कही नहीं जा सकती। यहाँ का काल तो महाविदेह के आगे कितना छोटा है। वहाँ भगवान के पास थे, उन भवों की बातें तो पूरी नहीं हो सकती। उन बातों को करते हुए तो अंतर आत्मा में समा जाने के भाव हो जाते हैं। २९७.

✳

पूज्य गुरुदेव के परिवर्तन के समय ऐसा लगता था कि बहुत विरोध होगा। हम यहाँ थे फिर थोड़ा समय वांकानेर चले गये। यहाँ सोनगढ़ में तो ज्यादा विरोध नहीं था। संप्रदाय में प्रतिष्ठा बहुत थी इसलिए लोगों के मन में ऐसा था कि गुरुदेव ने जो किया वह ठीक ही किया होगा। महापुरुष हैं इसलिए सोच - समझकर ही किया होगा। बिना सोचे नहीं करते, इसलिए पर्युषण में लोग यहाँ आये थे। राजकोट में ८९ के साल में पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास का लाभ मिला। १९९१ के साल से पूज्य गुरुदेवश्री के साथ कायम रहने का लाभ मिला। कुंदकुंदआचार्य देव ने जिस मुक्तिमार्ग को प्रकाशित किया है उस मार्ग की छाया में रहा जा सकता है - ऐसा गुरुदेव कहते थे। २९८.

✳

पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में - वांचन में जिसको अंतर में गुरु-गुरु का स्मरण - रटण चलता हो, गुरुवाणी सुनते वक्त अंतर लक्षपूर्वक जिज्ञासा, परम जिज्ञासापूर्वक श्रवण हो तो गुरुदेवश्री की कृपा अवश्य होवे ही। श्रीगुरु अवश्य कृपा करें, अवश्य कृपा बरसायें।

फिर तो चैतन्यदेव का रटन-मनन करनेवाले पर चैतन्यदेव कृपा क्यों न बरसाये ? जरूर बरसाये, भीतर से चैतन्य की उत्कंठा हो उसे चैतन्य मिले बिना रहे ही नहीं। २९९.

पूज्य गुरुदेव को स्वप्न आया था कि, `एक को जाने वह सर्व को जाने।' उन्हें शास्त्र की धुन बहुत थी इसलिए स्वप्न भी ऐसे ही आते। पूज्य गुरुदेव मार्गदृष्टा हैं। यहाँ गुरुदेव के प्रताप से सिर्फ आत्मा का ही रटन रहता है। मैं पर का कर्ता नहीं यह दृढ़ हो गया है। जिसको यह बात नहीं मिली, उसकी तो उलझन की सीमा नहीं। ३००.

`तूँ ही देव नो देव' ऐसा कहनेवाले - गानेवाले कौन होंगे ? इतनी छोटी-सी उम्र में ऐसा गीत बनानेवाले कौन होंगे। दूसरों को तो ऐसा स्वप्न आना भी मुश्किल है कि मैं तीर्थंकर हूँ. ऐसा भरोसा भी कहाँ से लाये ? सबके हृदय में यह बात बैठना मुश्किल, संसार में, विकल्प में कहाँ से कहाँ गोते खाते हो, राग-द्वेष में फँसे हुए को तू भगवान है, यह बैठना भी मुश्किल लगे, तो तीर्थंकर हूँ, ऐसा तो आये ही कहाँ से ? जो (भीतर) में हो, वही बाहर आयेगा। दूसरों का कलेजा तो काम भी न करे। `तीर्थंकर हूँ' ऐसा स्वीकार करना यह जीवों को मुश्किल पड़ता है। ३०१.

गुरु की वाणी सुननेवाले को ऐसी निश्चिंतता आ गई कि हम संसार के जीवों से सुखी हैं। हमारे जैसा किसी का जीवन नहीं। अंदर में करना बाकी है। ३०२.

गुरुदेव का ज़ोर और पडकार और आवाज़ अलग ही थे, ऐसी श्रुतज्ञान की महिमा दूसरों को आना मुश्किल। एक एक शब्द... एक एक पंक्ति में आचार्य देव ने बहुत-बहुत नया भर दिया है ऐसा कहते और एक-एक पंक्ति में - शब्द में घण्टों निकल जाते। आत्मा की कोई अलग ही बात कर रहे हैं, ऐसा आश्चर्य लगता था। बंबई में हज़ारों की सभा में कहते थे, `आत्मा और परमात्मा की बात है, समझो...' उसे सब टकटकी लगाकर सुनते ते। एक ही शास्त्र चाहे कितनी बार पढ़ें परंतु महिमा उतनी की उतनी रहती थी। ३०३.

`समझिये... समझिये... पदार्थ अनुपम है। समझ में आया ?' ऐसा कहते थे... `ऐसा पदार्थ है उसे समझिये।' आचार्यदेव ने ऐसा कहा है, वारंवार आहा..हा.. आता था। सुननेवाले को ऐसा लगे, आत्मा क्या है ! कैसा है ! ऐसा लगे। वाणी अपूर्व थी। तीर्थंकर का द्रव्य, यह वाणी पर से नक्की कर सकते हैं। सबलोग समझिये। `समझ में आया ?' ऐसा करुणापूर्वक कहते। गुरुदेव का ज़ोर व महिमा का बल वाणी में झलकता था, ऐसा वाणी का बल दूसरों को आना मुश्किल है। वाणी में अपूर्वता थी इसलिए दूसरों को असर पहुँचता था। ३०४.

गुरुदेव ने तो सर्वत्र... देश-देशांतर में आम के पेड़ लगाये हैं।

(तत्त्व के बीज बोये हैं)। सर्वत्र बाग-बगीचे बनाये हैं। सब लोग आते हैं और गुरुदेव... गुरुदेव कहते हैं। ३०५.

हमें तो देव-गुरु-शास्त्र का दासत्व चाहिए, और कुछ नहीं चाहिए।

गुरुदेव इन्द्रसरीखे देव हैं। इन्द्रों को मातातुल्य - पितातुल्य - गुरुतुल्य ऐसे देव होते हैं। गुरुदेव तो यहाँ स्वतंत्र थे और वहाँ किसी की आज्ञा में या किसी के अनुचर होकर नहीं रहते। ऋद्धिधारी देव हैं। ३०६.

गुरुदेव बहुत कुछ देकर गये हैं। तृप्त-तृप्त हो जाए उतना दिया है। सबको तैयार करके गये हैं।

जैसे चक्रवर्ती जब दीक्षा लेते हैं तब नवनिधान चला जाता है। कुछ एक रहता है। राम की विदाय पश्चात् ऐसे राम कहाँ से आये ! तीर्थंकर भगवान की विदाय पश्चात् तीर्थंकर जैसा जगत में कोई नहीं होता। बीच में लंबे अंतराल बाद होते हैं। वैसे गुरुदेव गये... सो गये... उनके जैसा कोई नहीं है। ३०७.

गुरुदेव को आत्मा की, तत्त्व की महिमा आती थी इसलिए भगवान आत्मा कहकर, सब भगवान आत्मा हैं, ऐसा कहकर महिमापूर्वक समझाते थे। वस्तु, तत्त्व और पदार्थ की महिमा आती थी। इसलिए आहाहा... बोलते थे, जब बोलते थे तो देखनेवाले को ऐसा लगता कि ये क्या बोल रहे हैं...! `आहाहा' सुनकर सबको महिमा आती थी। ३०८.

फिलहाल तो गुरुदेव जैसा कोई नहीं दिखता। कालान्तर में

कोई होंगे तो इससे हमें क्या ? अभी हमें गुरुदेव का विरह है। गुरुदेव तो गुरुदेव ही थे ! ३०९.

भगवान के समवसरण में सभी प्रकार के देव दिव्यध्वनि सुनने आते हैं। वहाँ सभी देव इकट्ठे होते हैं इसलिए गुरुदेव वहाँ मिल जाये। ३१०.

गुरुदेव का जीवन निश्चय-व्यवहार की संधियुक्त था। गुरुदेव प्रतापी पुरुष, उनका जीवन पुण्यवंत व प्रतापशाली था। उनका आत्मा चैतन्य के प्रताप से सुशोभित था। ३११.

गुरुदेव को श्रद्धांजली विभिन्न अखबारों में / पत्रिकाओं में आती हैं। सब ने गुरुदेव की महिमा गायी है। पूज्य गुरुदेव ने दिगंबर धर्म का प्रकाश किया है। कुंदकुंद भगवान को लोग (सिर्फ) नाम से जानते थे। अभी गुरुदेव के प्रताप से कुंदकुंदभगवान की महिमा और समयसार आदि का स्वाध्याय चालू हो गया है। ३१२.

पूज्य गुरुदेव की वाणी अमर वाणी है। यह अमर वाणी जब तुझे मिली है तो तू पुरुषार्थ करके तेरा कार्य कर ले। पूज्य गुरुदेव का वियोग सबको लगता है, मुझे भी लगता है, परंतु यदि सचमुच वियोग लगा हो, उनके बिना सुहाता न हो और उनके संग हो जाने की भावना हो, तो वह पुरुषार्थ से ही शक्य है। अतः पुरुषार्थ करके तेरा भव सफल कर ले। ३१३.

कुंदकुंद भगवान के शास्त्र हिन्दी से गुजराती में हुए, फिर

गाथा के हरिगीत पूज्य गुरुदेव के काल में हुए। जिनेन्द्र भगवान की प्रतिष्ठा शुरू हुई, फिर गाँव-गाँव में जिन मंदिर बने... तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री ने तीर्थों की यात्रा शुरू की। उस वक्त सब नया-नया था, इसलिए बहुत आश्चर्य लगता था। पूज्य गुरुदेवश्री ने जब सम्मेदशिखर की यात्रा के लिए हाँ भरी तब तो आश्चर्य लगा। एक विशिष्ट प्रसंग लगा। 'सोनेरी समाचार मिले' ऐसे भावसे भक्ति की थी। पूज्य गुरुदेवश्री अब विहार में बाहर निकलते हैं इसलिए नई प्रभावना होगी। ३१४.

इस पंचमकाल में गुरुदेव मिले, (सच्ची) दृष्टि दिखाई। 'दृष्टि बदल ! तेरा निधान पूरा अंतर में है। ज्ञानमें से ज्ञान आता है। आनंदमें से आनंद आता है। जिसमें हो उसमें से आये।' गुरुदेव कहते थे कि गहरे संस्कार डाल, बीज बोया होगा वह पनपेगा। ३१५.

गुरुदेव के प्रताप से सब (समझना) सरल हो गया। 'चैतन्य को शरीर नहीं है, चैतन्य को रोग भासित नहीं होता, चैतन्यदेव जगत से निराला, अलौकिक द्रव्य है। मेरा चेतन... यहा रहा ज्ञायकदेव...' ३१६.

गुरु ने कहा वैसा करे तब तो उसने ग्रहण किया। गुरु-गुरु कहे किन्तु महिमा न आये, सिर्फ बोलने मात्र से महिमा नहीं आती। ३१७.

चतुर्थ काल में श्रावक, त्यागी और व्रतियों को भोजन कराते

हैं। आहारदान की भावना भाते हैं। यहाँ तो (गुरु का) नियमित लाभ मिलता है। ऐसा लाभ भी महा दुर्लभ है। ३१८.

✻

गुरुदेव की वाणी ज़ोरदार व चैतन्य को जागृत करनेवाली थी। गुरुदेव की वाणी सबके हृदय को टटोल देती... समझ में आये चाहे न आये परंतु मेढ़ा की माफिक टकटकी लगाकर देखते ही रहते। 'आत्मा ऐसा है'... 'ऐसा नहीं' इसमें तो सबके अंदर खलबली हो जाती। ३१८.

✻

यह तो गुरुदेव की साधनाभूमि है। इसलिए यहाँ तो सब अलग ही लगे ! गुरुदेव ने सहज तत्त्व का मार्ग बतलाया है। आत्मा सहज, उसकी दशा सहज, सब सहज... ३२०.

✻

पूज्य गुरुदेव ने पूरे भारत को हिला दिया है, सबके कलेजे को हिला दिया है। 'अंतरमें से बाहर निकलने जैसा नहीं है। अंतर में एक दृष्टि है। इससे द्रव्य को देख... द्रव्य को तो अनुकूल सारी पर्यायें उसमें से प्रगट होगी। स्वभाव और विभाव की दशा अलग है।' ३२१.

✻

गुरुदेव ने निर्विकल्पदशा और निर्विकल्पदृष्टि करने का कहा है। आत्मा का स्वभाव विकल्प रहित है। कहीं भी फँसना नहीं है। भीतर में मार्ग ढूँढ़ लेना है। स्वभाव को पहचान लेना। ३२२.

✻

बालक जैसे बिना माँ-बाप अनाथ हो जाता है वैसे ही अभी गुरुदेव के बिना सब अनाथ हो चुके हैं। उनके बिना जीवन कैसा !

यह अभी पता चलता है। भवभ्रमण मिटानेवाले चले गये। ३२३.

✻

पूज्य गुरुदेव का प्रचार अब देश-देशांतर में बढ़ता जा रहा है। लाखों पुस्तकें, मंदिरों (का निर्माण), तत्त्व अभ्यास हेतु शिक्षण शिबिरें होती हैं। प्रायः बुद्धिशाली लोग व मध्यस्थवर्ग इस सत् का स्वीकार करते हैं। ३२४.

✻

द्रव्य है फिर परिणति हो उसमें आश्चर्य कैसा ! मार्ग की स्पष्टता गुरुदेव ने कर दी, वह सारा गुरुदेव का ही प्रताप है। मुझे भीतर में तीव्र भावना थी, चलता है स्वयं परंतु उपकार गुरुदेव का है।

हमें तो देव-गुरु-शास्त्र का दासत्व चाहिए। और कुछ नहीं चाहिए। ३२५.

✻

पूज्य गुरुदेव के प्रताप से यहाँ यह एक ही वातावरण है। बाहर तो सब दूसरा वातावरण लगे। यहाँ का प्रत्येक रजकण आत्मा की पुकार करता है, वे बरसों से यहाँ बिराजते थे। यह उनकी साधनाभूमि है। ३२६.

✻

पूज्य गुरुदेव का जो उपदेश है उस उपदेश से मोह तो बात ही बात में चला जाये। गुरु के वचन ऐसे रामबाण जैसे हैं। (३२७)

✻

'आत्मा' शब्द बोलना सीखे हैं तो वह भी गुरुदेव का प्रताप है। ३२८.

✻

सोनगढ़ का वातावरण पूज्य गुरुदेव के कारण ही मंगल-मंगल

था। सारे प्रोग्राम गुरुदेव के कारण ही चलते थे... ३२९.

✻

``निधि पामीने जन...'' (ऐसा आता है)। गुरुदेव का सान्निध्य बरसों से मिला। स्वानुभूति कैसे हो। सभी शास्त्रों के अर्थ का उकेल कर दिया है कि जिससे खुद एकांत में स्वाध्याय कर सके। सान्निध्य बरसों तक मिला अब तू इसे अंदर चैतन्य परिणति में उतार ! ३३०.

✻

पूज्य गुरुदेव उनके भवों की बात यहाँ करते थे, इतने में सचमुच देव में चले गये ! वहाँ (महाविदेह में) तो सबको कैसा लगता होगा ! जैसे भरतक्षेत्र में प्रभावना करके, धर्म का उद्योत करके कितने (अल्प) काल में यह राजकुमार लौट आये ! ३३१.

✻

`सहजात्मस्वरूप सर्वज्ञदेव परमगुरु' यह पूज्य गुरुदेव का दिया हुआ मंत्र है। वह मंत्र जरूर है लेकिन अंत समय (अंतिम) दिया हुआ मंत्र होने से वह सब याद आने लगता है (मन में उदासीनता छा जाती है)।

पूज्य गुरुदेव का अंतिम मंत्र तो यह है `ॐ सहज चिदानंद', चिद् आनंद, आत्मा का स्वरूप आनंदमय है। सीधा आत्मा के प्रति ले जाता है। आनंद कि जो आत्मा का स्वभाव, उस तरफ लक्ष्य ले जाता है। ३३२.

✻

गुरुदेव थे तो सबकुछ था। गुरुदेव नहीं हैं, यही सब से बड़ी कमी है। एक गुरुदेव नहीं हैं तो कुछ नहीं है। गुरुदेव एक ही सबको जागृत करनेवाले थे। उनकी वाणी का असर, अंतर परिणति

का असर सबको होता था। गुरुदेव की वाणी हृदय के ज़ोर से आती, उनका हृदय वाणी में व्यक्त होता था। अतः सबको वाणी का असर बहुत होता था। परंतु गुरुदेव गये तो सब ज़गह कमी है। ३३३.

✻

श्रुतगंगा बहानेवाले एक गुरुदेव (ही) थे। श्रुत की महिमा लानेवाले थे। गुरुदेव श्रुत का एक शब्द कहें, एक वाक्य कहें तो भी सब के लिए काफी हो जाये। एक अक्षर सबके लिए काफी हो जये, फिर एक घंटे की तो क्या बात कहना ! गुरुदेव मंगल, उनकी वाणी मंगल, गुरुदेव सर्वस्व मंगल थे। एक गाथा लय से गाते हो तब सुननेवाले डोलने लगें और खुशी से झूमने लगें। ३३४.

✻

गुरुदेव शाश्वत रहें ऐसी ही सब की भावना हो लेकिन कुदरत के आगे किसी की नहीं चलती। गुरुदेव जैसे आत्मा भरतक्षेत्र में कोई अपूर्व थे। गुरुदेव के ४५ साल के स्मरण यहाँ चारों तरफ छाये हुए हैं। अब तो पूज्य गुरुदेव को हृदय में रखकर उन्हों ने जो कहा है उस मार्ग पर चलना, यही करना है। ३३५.

✻

पूज्य गुरुदेव की तबियत बिगड़ती गई यह समाचार सुनते ही बंबई जाने की प्रबल भावना हुई। अनेक प्रकार के विचार भी आते थे। प्लेन में जाऊँ, ट्रेन में जाऊँ, ऊड़कर जा सकूँ तो (भी) जाना है। देखो न ! कुदरत ने मुझे बाँध रखा है... ऐसा शरीर... वरना पूज्य गुरुदेव जहाँ बिराजते हों उनके चरण में ही रहना सुहावना लगे। भावना तो गुरुदेव के चरण में रहने की; लेकिन क्या करें ! ३३६.

✻

आत्मा का निर्विकल्प स्वरूप गुरुदेव ने दिखाया है। निर्विकल्पता प्रगट हो, आत्मा का आनंद प्रगट हो, यह पूरा का पूरा मार्ग गुरुदेव ने बतलाया है। शरीर से, वचन से, अरे ! सभी विकल्प से अतीत ऐसा आत्मा भीतर में बिराजमान है। गुरुदेव ने इस पंचमकाल में जन्म लेकर महान उपकार किया है। ३२७.

✣

पूज्य गुरुदेव के सभी भव कितने अच्छे हैं ! अभी भरतक्षेत्र में हुंडावसर्पिणी काल है परंतु गुरुदेव यहाँ पधारे इसलिए यह काल अच्छा है। ३३८.

✣

पूज्य गुरुदेव का जीवन श्रुतमय हो चुका है। कोई शास्त्र उनकी समझ से बाहर नहीं। यहाँ यह परमागममंदिर, यहाँ की बात ही कुछ और है। यह सब देखकर लोग विस्मित हो जाते। वाणी तो बाद में सुनते, वाणी सुनते वक्त किसी दूसरे देश में हो ऐसा लगे ! ३३९.

✣

देवलोक में पूज्य गुरुदेव कुंदकुंदाचार्यदेव को पहचान लेंगे, देव एक-दूसरे के देवलोक में जाते हैं। सभी आचार्यों को पहचान लेंगे। पूज्य गुरुदेव को आचार्यों के प्रति, समयसारादि शास्त्रों के प्रति अनहद प्रीति थी इसलिए वहाँ सब को मिलेंगे। ३४०.

✣

उनके चरणों में आये और उनकी अपूर्व वाणी का श्रवण मिला। चैतन्य तत्त्व प्रगट होने में जो निमित्त था उनके चरणों में सब अर्पण कर दिया। सब पूज्य गुरुदेव का है। सारा प्रताप उनका है। ३४१.

✣

सम्यग्दर्शन शब्द गुरुदेव से सुना। गुरुदेव ने ही आँखें खोल दीं हैं। उन्होंने ही चक्षु दिये हैं, दृष्टि दी है, मार्ग भी गुरुदेव ने ही दिखाया है। फिर भले ही जीव उस मार्ग पर चलकर तत्त्व को प्राप्त कर ले; परंतु दिखाया तो गुरुदेव ने ही... ३४२.

पूज्य गुरुदेव को ``शिवरमणी रमनार तुँ, तुँ हि देवनो देव'' यह अंतरमें से आया था। आत्मा देवाधिदेव है परंतु तुम तो भविष्य का देवाधिदेव - तीर्थंकर हो। तू देवों का देव है.... पूर्व के संस्कार इसलिए ऐसा लगा। आत्मा देवाधिदेव और खुद तीर्थंकर देव; ऐसे निश्चय-व्यवहार की संधि का मेल हो गया। ३४३.

पूज्य गुरुदेव प्रवचनसार में कहते हैं `आचार्यदेव पाँचवीं गाथा में मांगलिक करते हैं। मैं आत्मा की साधना करता हूँ। सर्व भगवंत पधारना। ऐसा लगे जैसे अभी ही पधारे हो।' यह गाथा में पूज्य गुरुदेव को धुन चढ़ जाती है।

पूज्य गुरुदेव तत्त्व की बात में अनुरक्त, और कभी-कभार संस्कार की बात आती, `जो संस्कार डाले हैं वह फट जायेंगे - जवाब देंगे।' ३४४.

अभी-अभी गुरुदेव की बीज गई इसलिए अंतर में बीज की ही गूँज चल रही है। गुरुदेव का जन्मदिन है। बीज के बाद पूनम आती है, पूर्ण होती ही है। पूज्य गुरुदेव ने अंतरमें से आत्मा को जागृत किया। सम्यग्दर्शन रूपी बीज का उदय जिसे हुआ उसे अवश्य पूर्णता होगी ही। ३४५.

व्याख्यान के वक्त गुरुदेव अलग ही लगते.... जैसे मानो

आत्मजागृति के लिए सिंहगर्जना जैसी वाणी ! व्याख्यान के पश्चात् बाहर निकलते तब भी अलग ही लगते, ऐसा अतिशय था। महापुरुष का प्रभाव इतना रहता कि लोग (अनुचित करने से) डरते, ऐसा नहीं कर सकते - ऐसा उनके मन में रहा करता। पूज्य गुरुदेव का निमित्त इतना तो प्रबल था कि बाहर में सर्व कार्य सहज ही हो जाते। ३४६.

✻

भगवान की वाणी से कितने ही जीव मोक्ष को पाते हैं ! इस भरतक्षेत्र में गुरुदेव की वाणी से कितने ही जीवों को मुक्ति का मार्ग मिल रहा है। देव-गुरु के वचनों द्वारा चैतन्य को प्राप्त करते हैं। ३४७.

✻

गुरुदेव ने निरंतर चैतन्य को ग्रहण करने का कहा है। उसके गहरे विचारपूर्वक चैतन्यमय परिणति प्रगट करनी है। वह एक साधन है। ३४८.

✻

जगत के उद्धारक आध्यत्म के सूर्य के अस्त होने से अभी एकदम कैसा लगता है ! पूरे समाज में वज्रघात हो चुका है। लोग वियोग में पुकार रहे हैं। अभी ऐसा लगता है तो जब भगवान महावीर निर्वाण को प्राप्त हुए, तब कैसा लगता होगा ! इसका अंदाजा आ रहा है। तीर्थंकर जैसे पुरुष इस काल में थे। आज तो जैसे धर्म-स्तंभ का ही अस्त हो गया। ३४९.

✻

पूज्य गुरुदेव संघ सहित जहाँ भी ठहरते वहाँ बड़ा पड़ाव डाला हो ऐसा लगे ! संघ तो जैसे बड़े आचार्य का हो ! जैसे भक्तों

की कोई सीमा नहीं। गाँव-गाँव में भक्तों ने विध-विध प्रकार से गुरुदेव का स्वागत किया है। ऐसे स्वागत की तो क्या बात करे... गुरुदेव के कदम-कदम पर आरती उतारते और तीर्थों के स्थान में आठ-आठ दिन रहते। ३५०.

गुरुदेव की उपस्थिति यह तो बहुत बड़ी बात थी। गुरुदेव बिराजते हों उसकी बलिहारी है। सारी दुनिया को उनका आधार था। अब जीवों को उपादान तैयार करना है। निमित्त के आश्रय से नहीं परंतु स्वाधीनता से अपने पैरों पर खड़ा रहना होगा। शुद्धात्मा का साथ लेने से गुरुदेव का साथ मिल जाता है। मनुष्य भव का काल आत्म-आराधना का है। ३५१.

गुरुदेव जीवन के अंत तक उपस्थित हो उनकी तो बलिहारी है। जब ऐसा बना ही है तो अब तू उपादान को तैयार कर। पंचमकाल में जो तत्त्व दुर्लभ था वह गुरुदेव की वज़ह से सुलभ हुआ है। ३५२.

दृष्टि को दीर्ध करनी होगी। वर्तमान को सिमितरूप से देखता है इसके बजाय दृष्टि को विशाल बनायें। द्रव्य तो वही का वही है। यहाँ गुरुदेव थे और देव में पधारे, वह भी द्रव्य तो एक ही है। पर्याय बदलती है। द्रव्य पर दृष्टि करने से शांति मिलेगी। ३५३.

अहो ! गुरु की वाणी तद्गत जिसका परिणमन हुआ, उसे कहीं और ज़गह रस नहीं आता। चित्त नहीं चोंटता। ऐसे गुरु

की वाणी जिसके हृदय में बस गई, वह स्थिर पद को प्राप्त कर लेगा, ऐसी अद्भुत वाणी है। ३५४.

गुरुदेव रंग में आकर कहते हैं कि, तू पहाड़ पर गया परंतु देखनेवाले को नहीं देखा। पहाड़ को देखनेवाले आत्मा को तूने नहीं देखा। चैतन्य पहाड़ है। उस पहाड़ में अनंत गंभीरता भरी है। प्रदेश - प्रदेश पवित्र है - इसे देख ! अनंत-अनंत गंभीरता भरी है ऐसे तीर्थ को देख ! ३५५.

पूज्य गुरुदेव जीवंत तीर्थ है। वे अंतरंग तीर्थ दिखा रहे हैं, जो अपना जीवंत तीर्थ है। गुरुदेव की वाणी बरस रही है, यही सुकाल है। ३५६.

ऐसे काल में पूज्य गुरुदेवश्री ने आत्मा प्राप्त किया इसलिए परम पूज्य गुरुदेव एक `अंचभा' हैं। ३५७.

पूज्य गुरुदेव जब तीर्थंकर होंगे तब कितने ही जीव समवसरण में पहुँच जायेंगे ! बीच वाले काल से दृष्टि हटा दो। महाविदेह के आयुष्य की बराबरी में यहाँ भरत का आयुष्य बहुत अल्प है। महाविदेह में राजकुमार की प्रसिद्धि बहुत थी। भरतक्षेत्र के लाखों - करोड़ों जीवों को तैयार करके मुक्ति के मार्ग पर ले आये। ३५८.

पूज्य गुरुदेव सुबह दर्शन करने पधारते, प्रवचन में पधारते, आहारदान हेतु पधारते। जहाँ भी देखो दर्शन होते थे। अब इस पंचमकाल की दुर्लभता दिखाई देती है। उनकी याद तो आयेगी

ही न ! याद आये तो मन को शांत करना और उनकी आज्ञा को ग्रहण करना। ३५९.

गुरुदेव अभी देव (पर्याय) में हैं। वहाँ समीप रहना तो बन जाये ! किन्तु यहाँ स्वयं गुरुपद पर थे, त्यागी जीवन, दिव्यवाणी का योग, आहारदान आदि का लाभ मिलता था। अब वैसा तो संभव नहीं। ऐसा तो तब ही संभव होगा जब मनुष्यभव आयेगा। देवभव में समीप में रहना होगा। ३६०.

पूज्य गुरुदेव की तबियत के समाचार की मैं राह देखती थी। फोन से समाचार मिलते तब शांति होती थी। चिंता के समाचार सुनने पर ऐसा मन हो जाता कि, मैं यहाँ से जाऊँ, ऐसे जाऊँ - उड़कर चली जाऊँ... परंतु मैं पहुँच न सकी। इतने कम समय में इतना कुछ हो जाएगा ऐसी कल्पना भी कहाँ थी ? ३६१.

पूज्य गुरुदेव तो भारत के परम प्रतापी पुरुष थे। गुरुदेव ने मार्ग बताया उस मार्ग पर चलना है। आनंद - शांति का मार्ग भीतर में है। गुरुदेवश्री का आत्मा इस क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में गया। आत्मा तो शाश्वत है। पूज्य गुरुदेव के स्मरणों को कैसे भूलें ! ३६२.

गुरुदेव की छाया में सब मंगल-मंगल लगता था। अभी सब सुनसान लगता है। सबके चेहरे पर रोनक थी, उनकी शीतल छाया थी। विहार हो तब पूज्य गुरुदेव पधारते वह अलग दिखता। यहाँ उनके बहुत सालों के स्मरण मौजूद हैं। देव-गुरु की छाया मंगल-मंगल थी। उनकी छाया में नाईरोबी में जिनबिंब की प्रतिष्ठा हुई।

परदेश में जय जयकार हुआ। अध्यात्मपुरुष का यह कैसा वियोग... अभी गाँव-गाँव में सन्नाटा छा गया है। ३६३.

पूज्य गुरुदेव जो मार्ग दिखाते थे उस मार्ग पर चलना। उन्हें याद करके हृदय में बिराजमान करना। उनकी वाणी सुनते वक्त अपूर्वता व आश्चर्य होता था। वाणी में शुद्धात्मा की पुकार व टंकार थी। यहाँ भक्तों को विरह हो गया। उनकी वाणी में जड़-चेतन भिन्न-भिन्न भासित होते थे। ३६४.

जिन्होंने ऐसा लाभ निरंतर दिया, शिष्यों को जो लाभ दिया वह कैसे भूलाया जाये ! ३६५.

संसार में और सब कुछ भूल सकते हैं; परंतु इन्हें कैसे भूलें ? इसका समाधान ऐसा है कि पूज्य गुरुदेवश्री ने जो कहा, वैसा करना। गुरु के गुणों को भूलना असंभव है। बरसों तक उनके सान्निध्य में जो लाभ मिला है, उसे कैसे भूलें ! ३६६.

पूज्य गुरुदेव का हमें यहाँ वियोग हो गया। उन्हें इस क्षेत्र की अपेक्षा कहाँ से हो ? वे तो विदेह में भगवान के पास पहुँच गये। वहाँ भगवान की दिव्यध्वनि सुनते होंगे। इस क्षेत्र की दरकार उन्हें कहाँ से ? उन्हें तो यहाँ से ऊँचे (संयोग) मिल गये। उनकी कमी तो हम महसूस कर रहे हैं। ३६७.

ज्ञान असाधारण गुण है। स्वपरप्रकाशक है सो स्वभाव है। स्वभाव का निषेध नहीं हो सकता। गुरुदेव ने सबको यह बात सिखाई

है। गुरुदेव इतने अधिक निर्भय, नीडर और निस्पृही थे। उन्हें जो सत्य लगा, उस मार्ग को दिखाते थे। ३६८.

✻

(गुरुदेव) व्याख्यान देते तब लोग झूम उठते। व्याख्यान के दौरान कुछ गाते, तब भी लोग झूम उठते। बाद में पीछले दिनों में तो व्याख्यान में बहुत सूक्ष्मता आती थी। ३६९.

✻

तीर्थंकर जैसे पुरुष बिराजते थें। इनकी शोभा न्यारी ! चैतन्य की चमत्कृति ऐसी ! वाणी में चमत्कृति ऐसी ! उनकी मुद्रा न्यारी ! मुद्रा को देखते ही लोग दंग रह जाते, मौन मुद्रा न्यारी ! बैठे हुए अलग ही दिखें ! व्याख्यान चले तब भी अलग ही दिखते, लाखों लोगों के बीच भी अलग ही दिखते।

गुरुदेव बिराजते थे तब इस भरतक्षेत्र की बात ही कुछ न्यारी थी। अभी तो सर्वत्र सन्नाटा छा गया है। ३७०.

✻

गुरुदेव की वाणी दिव्यध्वनि जैसी थी। जिसको जो चाहिए वह मिल जाता था। भगवान की वाणी में अनंत रहस्य भरे हैं वैसे गुरुदेव की वाणी में भी अनंत रहस्य भरा रहता था। परंतु उसका टोटल (सार) करना आना चाहिए। उसका आशय समझना चाहिए।

गुरुदेव भेदज्ञान करने का कहते थे। स्वानुभव जिस उपाय से हो, वह कर लेना। उसमें पूरी स्पष्टता हो जाएगी कि स्वरूपभेद कैसे है और प्रदेशभेद किस प्रकार है। द्रव्यदृष्टि तो किसी को विषय नहीं करती किन्तु ज्ञान में तो सब आ जाता है और (मालूम हो जाता है)। ३७१.

✻

गुरुदेव की तत्त्व की शैली, उसमें सब आ जाता है। व्यवहार में रत जीवों को तो जैसे कोड़े ही फटकारते। निश्चय में जो ज्यादा खींच जाये उसे चाबुक मारते। निश्चयाभासी होनेवाले को सख्त प्रहार करके मार्ग पर ले आते थे।

क्रियाकांडियों को कहते थे, अनंतकाल से यह सब करता आया है, फिर भी आत्मा की प्राप्ति नहीं हुई। अब तो आत्मा कैसे प्राप्त हो, यह करना है। (एकांत) निश्चय के पक्षवालों को भी कोड़े फटकारते थे। अच्छी तरह कोड़े फटकारते थे। ३७२.

✻

गुरु पड़कार करते हैं, तुम आत्मा हो, भगवान हो ऐसा बारबार कहते हैं। गुरुदेव सबको पड़कार करके जगाते थे। बापू ! तू भगवान आत्मा हो ! तू जागृत हो ! भाई गुरुदेव तू भगवान है। जाग रे जाग !

(भोपाल के एक गाँव में) डाकुओं को गुरुदेवश्री के दर्शन करने थे। वहाँ गुरुदेव ने उनलोगों को कहा : भाई ! तू भगवान है। चोरों को लगा कि ये हमें भगवान कहनेवाले कौन हैं ! ३७३.

✻

गुरुदेव की ओर कोई देखता, उनकी मुद्रा व चेष्टा देखते ही लोग दंग रह जाते। फिर चैतन्य चमत्कार की तो क्या बात करें ! ३७४.

✻

गुरुदेव की प्रभावना ऐसी थी, यात्रा, पूजा, प्रतिष्ठा सब जी भर-भर के किया है। ३७५.

✻

गुरुदेव ने ज्ञायक का मंत्र सीखाया है। ३७६.

✻

गुरुदेव के जीवन से श्रुत एकमेक था, इसलिए नया-नया निकलता ही रहता। ३७७.

✻

गुरुदेव ने समयसार और आत्मा की ओर जाने की प्रेरणा दी। ३७८.

✻

पूज्य गुरुदेव जैसे तीर्थंकरपुरुष की वाणी निष्फल नहीं जाती। अभी भले ही ऐसा लगे कि, कोई नहीं करता है, परिणति प्रगट नहीं करता है, लेकिन हज़ारों जीव भीतर में तैयारी कर रही रहे हैं। ३७९

✻

१९ साल की उम्र में पूज्य गुरुदेव का परिचय हुआ है, बरसों के स्मरण हैं, यात्रा, प्रतिष्ठा, चर्चाएँ इत्यादि कितने ही प्रसंगों के स्मरण हैं, उसे कथन में कितना कह सके, गुरु के गुणों का स्मरण तो बरसों का है, उनके चरणों में कितने सालों तक रहे हैं, गुरु के गुणों की कथन से महिमा क्या करूँ ! ३८०.

✻

गुरुदेव की मुद्रा से ही लोग पहचान जाते, चलते वक्त अलग ही दिखते। हज़ारों लोगों की भीड़ में - स्वागत के वक्त गुरुदेव अलग ही दिखते। किसी को पूछना भी न पड़े कि `कानजीस्वामी' कहाँ हैं ? दैवी पुरुष थे। गुरुदेव की महिमा करने बैठे तो उसका अंत ही नहीं आ सकता। मैं तो सिर्फ उनकी भक्ति - महिमा करती हूँ। ३८१.

✻

गुरुदेव की दी हुई निधि को आप लोग सँभालकर रखना। ३८२.

श्री वीतराग सत्साहित्य प्रसारक ट्रस्ट
उपलब्ध प्रकाशन (हिन्दी)

	ग्रंथ का नाम एवं विवरण	मूल्य
०१	अनुभव प्रकाश (ले. दीपचंदजी कासलीवाल)	-
०२	आत्मयोग (श्रीमद् राजचंद पत्रांक-४६९, ४९१, ६०९ पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	२०-००
०३	अनुभव संजीवनी (पूज्य भाईश्री शशीभाई द्वारा लिखे गये वचनामृत्तोंका संकलन)	१५०-००
०४	आत्मसिद्धि शास्त्र पर प्रवचन (पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा)	५०-००
०५	आत्मअवलोकन	-
०६	बृहद द्रव्यसंग्रह	अनुपलब्ध
०७	द्रव्यदृष्टिप्रकाश (तीनों भाग-पूज्य श्री निहालचंदजी सोगानीजीके पत्र एवं तत्वचर्चा)	३०-००
०८	दूसरा कुछ न खोज (प्रत्यक्ष सत्पुरुष विषयक वचनामृतोंका संकलन)	०६-००
०९	दंसणमूलो धम्मा (सम्यक्त्व महिमा विषयक आगमोंके आधार)	०६-००
१०	धन्य आराधना (श्रीमद राजचंद्रजीकी अंतरंग अध्यात्म दशा पर ॉ पूज्य भाईश्री शशीभाई द्वारा विवेचन)	-
११	दिशा बोध (श्रीमद राजचंद्र पत्रांक-१६६, ४४९, ५७२ पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	२५-००
१२	धन्य पुरुषार्थी	-
१३	धन्य अवतार	-
१४	गुरु गुण संभारणा (पूज्य बहिनश्री चंपाबहिन द्वारा गुरु भक्ति)	१५-००
१५	गुरु गिरा गौरव	-
१६	जिणसासणं सव्वं (ज्ञानीपुरुष विषयक वचनामृतोंका संकलन)	०८-००
१७	कुटुम्ब प्रतिबंध (श्रीमद् राजचंद्र पत्रांक-१०३,३३२,५१०, ५२८,५३७ एवं ३७४ पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	२५-००
१८	कहान रत्न सरिता (परमागमसारके विभिन्न वचनामृतों पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	३०-००
१९	मूलमें भूल (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके विविध प्रवचन)	०८-००
२०	मुमुक्षुता आरोहण क्रम (श्रीमद राजचंद्र पत्रांक-२५४ पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	-

२१	मुक्तिका मार्ग (सत्ता स्वरूप ग्रन्थ पर पूज्य गुरुदेवश्रीके प्रवचन)	१०-००
२२	निर्भ्रांत दर्शनकी पगडंडी (ले. पूज्य भाईश्री शशीभाई)	१०-००
२३	परमागमसार (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके १००८ वचनामृत्त)	-
२४	प्रयोजन सिद्धि (ले. पूज्य भाईश्री शशीभाई)	०४-००
२५	परिभ्रमणके प्रत्याख्यान (श्रीमद राजचंद्र पत्रांक-१९५, १२८, २६४ पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	२०-००
२६	प्रवचन नवनीत (भाग-१) (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके खास प्रवचन)	२०-००
२७	प्रवचन नवनीत (भाग-२) (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके खास प्रवचन)	२०-००
२८	प्रवचन नवनीत (भाग-३) (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके ४७ नय के खास प्रवचन)	२०-००
२९	प्रवचन नवनीत (भाग-४) (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके ४७ शक्ति के खास प्रवचन)	२०-००
३०	प्रवचन सुधा (भाग-१) (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके प्रवचनसार परमागम पर धारावाही प्रवचन)	२०-००
३१	प्रवचन सुधा (भाग-२) (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके प्रवचनसार परमागम पर धारावाही प्रवचन)	२०-००
३२	प्रवचनसार	अनुपलब्ध
३३	प्रंचास्तिकाय संग्रह	अनुपलब्ध
३४	सम्यक्ज्ञानदीपिका (ले. श्री धर्मदासजी क्षुल्लक)	१५-००
३५	ज्ञानामृत्त (श्रीमद् राजचंद्र ग्रंथमें से चयन किये गये वचनामृत्त)	-
३६	सम्यग्दर्शनके सर्वोत्तकृष्ट निवासभूत छ पदोंका अमृत पत्र (श्रीमद रादचंद्र पत्रांक-४९३ पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	१८-००
३७	सिद्धिपका सर्वश्रेष्ठ उपाय (श्रीमद् राजचंद्र ग्रंथमें से पत्रांक-१४७,१९४, २००,५११,५६० एवं ८१९ पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	२५-००
३८	सुविधि दर्शन (सुविधि लेख पर पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचन)	४०-००
३९	समयसार नाटक	अनुपलब्ध
४०	समयसार कलस टीका	अनुपलब्ध
४१	समयसार	अनुपलब्ध
४२	तत्त्वानुशीलन (भाग-१,२,३) (ले. पूज्य भाईश्री शशीभाई)	२०-००
४३	तत्थ्य	अनुपलब्ध
४४	विधि विज्ञान (विधि विषयक वचनामृत्तोंका संकलन)	१०-००
४५	वचनामृत्त रहस्य (पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके नाईरौबीमें हुए प्रवचन	२०-००

-

વીતરાગ સત્સાહિત્ય પ્રસારક ટ્રસ્ટ

ઉપલબ્ધ પ્રકાશન (ગુજરાતી)

	ગ્રંથનું નામ તેમજ વિવરણ	મૂલ્ય
૦૧	અધ્યાત્મિકપત્ર (પૂજ્ય શ્રી નિહાલચંદ્રજી સોગાનીજીના પત્રો)	૦૨-૦૦
૦૨	અધ્યાત્મ સંદેશ (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના વિવિધ પ્રવચનો)	અનુપલબ્ધ
૦૩	આત્મયોગ (શ્રીમદ રાજચંદ્ર પત્રાંક-૫૬૯, ૪૯૧, ૬૦૯ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૦૪	અનુભવ સંજીવની (પૂજ્ય ભાઈશ્રી દ્વારા લિખિત વચનામૃત્તોનું સંકલન)	૧૫૦-૦૦
૦૫	અધ્યાત્મ સુધા (ભાગ-૧) બહેનશ્રીના વચનામૃત ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૦૬	અધ્યાત્મ સુધા (ભાગ-૨) બહેનશ્રીના વચનામૃત ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૦૭	અધ્યાત્મ સુધા (ભાગ-૩) બહેનશ્રીના વચનામૃત ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૦૮	અધ્યાત્મ પરાગ	-
૦૯	બીજું કાંઈ શોધમા (પ્રત્યક્ષ સત્પુરુષ વિષયક વચનામૃત્તોનું સંકલન)	-
૧૦	બૃહદ દ્રવ્યસંગ્રહ પ્રવચન (ભાગ-૧) (દ્રવ્યસંગ્રહ ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના સળંગ પ્રવચનો)	-
૧૧	બૃહદ દ્રવ્યસંગ્રહ પ્રવચન (ભાગ-૨) (દ્રવ્યસંગ્રહ ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના સળંગ પ્રવચનો)	-
૧૨	ભગવાન આત્મા (દ્રષ્ટિ વિષયક વચનામૃત્તોનું સંકલન)	-
૧૩	દ્વાદશ અનુપ્રેક્ષા (શ્રીમદ્ ભગવત્ કુંદકુંદાચાર્યદેવ વિરચિત	૦૨-૦૦
૧૪	દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ (ભાગ-૩) (પૂજ્ય શ્રી નિહાલચંદજી સોગાની તત્ત્વચર્ચા)	૦૪-૦૦
૧૫	દસ લક્ષણ ધર્મ (ઉત્તમ ક્ષમાદિ દસ ધર્મો પર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીનાં પ્રવચનો)	૦૬-૦૦
૧૬	ધન્ય આરાધના (શ્રીમદ રાજચંદ્રજીની અંતરંગ અધ્યાત્મ દશા ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈ દ્વારા વિવેચન)	૧૦-૦૦
૧૭	દિશા બોધ (શ્રીમદ્ રાજચંદ્રજી પત્રાંક-૧૬૬,૪૪૯,અને ૫૭૨ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈ દ્વારા પ્રવચનો)	૧૦-૦૦
૧૮	ગુરુ ગુણ સંભારણા (પૂજ્ય બહેનશ્રીના શ્રીમુખેથી સ્ફુરિત ગુરુભક્તિ)	૦૫-૦૦
૧૯	ગુરુ ગિરા ગૌરવ (પૂજ્ય સૌગાનીજીની અંગત દશા ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૨૦	ગુરુ ગિરા ગૌરવ (ભાગ-૧) (દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પત્રો પર સળંગ પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૨૧	ગુરુ ગિરા ગૌરવ (ભાગ-૨) (દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પત્રો પર સળંગ પ્રવચનો)	૨૦-૦૦

૨૨	જિણસાસણં સવ્વં (જ્ઞાનીપુરુષ વિષયક વચનામૃત્તોનું સંકલન)	૦૮-૦૦
૨૩	કુટુંબ પ્રતિબંધ (શ્રીમદ રાજચંદ્ર પત્રાંક-૧૦૩, ૩૩૨, ૫૧૦, ૫૨૮, ૫૩૭ તથા ૩૭૪ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૨૫-૦૦
૨૩	કહાન રત્ન સરિતા (ભાગ-૧) (પરમાગમસારમાંથી ચૂંટેલા કેટલાક વચનામૃત્તો ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનાં પ્રવચનો)	૨૫-૦૦
૨૪	કહાન રત્ન સરિતા (ભાગ-૨) (પરમાગમસારમાંથી ક્રમબદ્ધ પર્યાય વિષયક ચૂંટેલા કેટલાક વચનામૃત્તો ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનાં પ્રવચનો)	૩૦-૦૦
૨૫	કાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષા પ્રવચન (ભાગ-૧) કાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષા ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૨૬	કાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષા પ્રવચન (ભાગ-૨) કાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષા ગ્રંથ ઉપર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૨૭	ક્રમબદ્ધપર્યાય	-
૨૮	મુમુક્ષતા આરોહણ ક્રમ (શ્રીમદ રાજચંદ્ર પત્રાંક-૨૫૪ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૧૫-૦૦
૨૯	નિર્ભ્રાંત દર્શનની કેડીએ (લે. પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈ)	૧૦-૦૦
૩૦	પરમાત્માપ્રકાશ (શ્રીમદ્ યોગીન્દ્રદેવ વિરચિત)	૧૫-૦૦
૩૧	પરમાગમસાર (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના ૧૦૦૮ વચનામૃત્ત)	૧૧-૨૫
૩૨	પ્રવચન નવનીત (ભાગ-૧) (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના ખાસ પ્રવચનો)	અનુપલબ્ધ
૩૩	પ્રવચન નવનીત (ભાગ-૨) (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના ખાસ પ્રવચનો)	૨૫-૦૦
૩૪	પ્રવચન નવનીત (ભાગ-૩) (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના ૪૭ નય ઉપર ખાસ પ્રવચનો)	૩૫-૦૦
૩૫	પ્રવચન નવનીત (ભાગ-૪) (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના ૪૭ નય શક્તિઓ ઉપર ખાસ પ્રવચનો)	૭૫-૦૦
૩૬	પ્રવચન પ્રસાદ (ભાગ-૧) (પંચાસ્તિકાયસંગ્રહ પર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના પ્રવચનો)	૬૫-૦૦
૩૭	પ્રવચન પ્રસાદ (ભાગ-૨) (પંચાસ્તિકાયસંગ્રહ પર પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીના પ્રવચનો)	-
૩૮	પ્રયોજન સિદ્ધિ (લે. પૂજ્યભાઈશ્રી શશીભાઈ)	૦૩-૦૦
૩૯	પથ પ્રકાશ (માર્ગદર્શન વિષયક વચનામૃત્તોનું સંકલન)	૦૬-૦૦
૪૦	પરિભ્રમણના પ્રત્યાખ્યાન (શ્રીમદ રાજચંદ્ર પત્રાંક-૧૯૫, ૧૨૮ તથા ૨૬૪ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૪૧	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૧) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૪૦-૦૦
૪૨	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૨) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૮૫-૦૦
૪૩	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૩) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૪૪	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૪) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૪૦-૦૦
૪૫	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૫) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૪૬	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૬) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૩૦-૦૦
૪૭	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૭) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૨૦-૦૦
૪૮	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૮) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૨૦-૦૦

૪૯	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૯) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૨૦-૦૦
૫૦	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૧૦) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૨૦-૦૦
૫૧	પ્રવચન સુધા (ભાગ-૧૧) પ્રવચનસાર શાસ્ત્રના સળંગ પ્રવચનો	૨૦-૦૦
૫૨	પ્રવચનસાર	અનુપલબ્ધ
૫૩	પ્રચારિસ્તિકાય સંગ્રહ	અનુપલબ્ધ
૫૪	પદ્મનંદીપંચવિશતી	-
૫૫	પુરુષાર્થ સિદ્ધિ ઉપાય	અનુપલબ્ધ
૫૬	રાજ હ્રદય (ભાગ-૧) (શ્રીમદ રાજચંદ્ર ગ્રંથ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના સળંગ પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૫૭	રાજ હ્રદય (ભાગ-૨) (શ્રીમદ રાજચંદ્ર ગ્રંથ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના સળંગ પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૫૮	રાજ હ્રદય (ભાગ-૩) (શ્રીમદ રાજચંદ્ર ગ્રંથ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના સળંગ પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૫૯	સમ્યક્જ્ઞાનદીપિકા (લે. શ્રી ધર્મદાસજી ક્ષુલ્લક)	૧૫-૦૦
૬૦	જ્ઞાનામૃત (શ્રીમદ રાજચંદ્ર ગ્રંથમાંથી ચૂંટેલા વચનામૃતો)	૦૬-૦૦
૬૧	સમ્યગ્દર્શનના નિવાસના સર્વોત્કૃષ્ટ નિવાસભૂત છ પદનો પત્ર (શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર પત્રાંક-૪૯૩ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૨૦-૦૦
૬૨	સિદ્ધપદનો સર્વશ્રેષ્ઠ ઉપાય (શ્રીમદ રાજચંદ્ર પત્રાંક-૧૪૭, ૧૯૪, ૨૦૦, ૫૧૧, ૫૬૦ તથા ૮૧૯ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૨૫-૦૦
૬૩	સમયસાર દોહન (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજી સ્વામીના નાઈરોબીમાં સમયસાર પરમાગમ ઉપર થયેલાં પ્રવચનો)	૩૫-૦૦
૬૪	સુવિધિદર્શન (પૂજ્ય ભાઈશ્રી દ્વારા લિખિત સુવિધિ લેખ ઉપર તેમનાં પ્રવચન)	૨૫-૦૦
૬૫	સ્વરૂપભાવના (શ્રીમદ રાજચંદ્ર પત્રાંક-૯૧૩, ૭૧૦ અને ૮૩૩ પર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૨૫-૦૦
૬૬	સમક્તિનું બીજ (શ્રીમદ રાજચંદ્ર ગ્રંથમાંથી સત્પુરુષની ઓળખાણ વિષયક પત્રાંક-ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈના પ્રવચનો)	૩૦-૦૦
૬૭	તત્ત્વાનુશીલન (પૂજ્ય ભાઈશ્રી દ્વારા લિખિત વિવિધ લેખ)	-
૬૮	વિધિ વિજ્ઞાન (વિધિ વિષયક વચનામૃતોનું સંકલન)	૦૭-૦૦
૬૯	વચનામૃત રહસ્ય (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના નાઈરોબીમાં બહેનશ્રીના વચનામૃત પર થયેલાં પ્રવચનો)	૨૫-૦૦
૭૦	વચનામૃત પ્રવચન (ભાગ-૧)	-
૭૧	વચનામૃત પ્રવચન (ભાગ-૨)	-
૭૨	વચનામૃત પ્રવચન (ભાગ-૩)	-
૭૩	વચનામૃત પ્રવચન (ભાગ-૪)	-
૭૪	યોગસાર	અનુપલબ્ધ
૭૫	ધન્ય આરાધક	-

वीतराग सत् साहित्य प्रसारक ट्रस्टमें से प्रकाशित हुई पुस्तकोंकी प्रत संख्या

०१	प्रवचनसार (गुजराती)	१५००
०२	प्रवचनसार (हिन्दी)	४२००
०३	पंचास्तिकायसंग्रह (गुजराती)	१०००
०४	पंचास्तिकाय संग्रह (हिन्दी)	२५००
०५	समयसार नाटक (हिन्दी)	३०००
०६	अष्टपाहुड (हिन्दी)	२०००
०७	अनुभव प्रकाश	२१००
०८	परमात्मप्रकाश	४१००
०९	समयसार कलश टीका (हिन्दी)	२०००
१०	आत्मअवलोकन	२०००
११	समाधितंत्र (गुजराती)	२०००
१२	बृहद द्रव्यसंग्रह (हिन्दी)	३०००
१३	ज्ञानामृत (गुजराती)	१०,०००
१४	योगसार	२०००
१५	अध्यात्मसंदेश	२०००
१६	पद्मनंदीपंचविंशती	३०००
१७	समयसार	३१००
१८	समयसार (हिन्दी)	२५००
१९	अध्यात्मिक पत्रो (पूज्य निहालचंद्रजी सोगानी द्वारा लिखित)	३०००
२०	द्रव्यदृष्टि प्रकाश (गुजराती)	१०,०००
२१	द्रव्यदृष्टि प्रकाश (हिन्दी)	६६००
२२	पुरुषार्थसिद्दिउपाय (गुजराती)	६१००
२३	क्रमबद्धपर्याय (गुजराती)	८०००
२४	अध्यात्मपराग (गुजराती)	३०००
२५	धन्य अवतार (गुजराती)	३७००
२६	धन्य अवतार (हिन्दी)	८०००
२७	परमामगसार (गुजराती)	५०००
२८	परमागमसरा (हिन्दी)	४०००

२९	वचनामृत प्रवचन भाग-१-२	५०००
३०	निर्भ्रांत दर्शननी केडीए (गुजराती)	५०००
३१	निर्भ्रांत दर्शनकी पगडंडी (हिन्दी)	७०००
३२	अनुभव प्रकाश (हिन्दी)	२०००
३३	गुरुगुण संभारणा (गुजराती)	३०००
३४	जिण सासणं सव्वं (गुजराती)	२०००
३५	जिण सासणं सव्वं (हिन्दी)	२०००
३६	द्वादश अनुप्रेक्षा (गुजराती)	२०००
३७	दस लक्षण धर्म (गुजराती)	२०००
३८	धन्य आराधना (गुजराती)	१०००
३९	धन्य आराधना (हिन्दी)	१५००
४०	प्रवचन नवनीत भाग-१-४	५८५०
४१	प्रवचन प्रसाद भाग-१-२	२३००
४२	पथ प्रकाश (गुजराती)	२०००
४३	प्रयोजन सिद्धि (गुजराती)	३५००
४४	प्रयोजन सिद्धि (हिन्दी)	२५००
४५	विधि विज्ञान (गुजराती)	२०००
४६	विधि विज्ञान (हिन्दी)	२०००
४७	भगवान आत्मा (गुजरात+हिन्दी)	३५००
४८	सम्यक्ज्ञानदीपिका (गुजराती)	१०००
४९	सम्यक्ज्ञानदीपिका (हिन्दी)	१५००
५०	तत्त्वानुशीलन (गुजराती)	४०००
५१	तत्त्वानुशीलन (हिन्दी)	२०००
५२	बीजुं कांई शोध मा (गुजराती)	४०००
५३	दूसरा कुछ न खोज (हिन्दी)	२०००
५४	मुमुक्षुता आरोहण क्रम (गुजराती)	२५००
५५	मुमुक्षुता आरोहण क्रम (हिन्दी)	३५००
५६	अमृत पत्र (गुजराती)	२०००
५७	अमृत पत्र (हिन्दी)	२५००
५८	परिभ्रमणना प्रत्याख्यान (गुजराती)	१५००
५९	परिभ्रमणके प्रत्याख्यान (हिन्दी)	२५००
६०	आत्मयोग (गुजराती)	१५००
६१	आत्मयोग (हिन्दी)	३०००

६२	अनुभव संजीवनी (गुजराती)	१०००
६३	अनुभव संजीवनी (हिन्दी)	१०००
६४	ज्ञानामृत (हिन्दी)	२५००
६५	वचनामृत रहस्य	१०००
६६	दिशा बोध (हिन्दी-गुजराती)	३५००
६७	कहान रत्न सरिता (हिन्दी-गुजराती)	२५००
६८	प्रवचन सुधा (भाग-१)	१४००
६९	कुटुम्ब प्रतिबंध (हिन्दी-गुजराती)	३५००
७०	सिद्धपद का सर्वश्रेष्ठ उपाय (हिन्दी-गुजराती)	३०००
७१	गुरु गिरा गौरव (हिन्दी-गुजराती)	३५००
७२	आत्मसिद्धि शास्त्र पर प्रवचन	७५०
७३	प्रवचन सुधा (भाग-२)	७५०
७४	समयसार दोहन	७५०
७५	गुरु गुण संभारणा	७५०
७६	सुविधिदर्शन	१०००
७७	समकितनुं बीज	१०००
७८	स्वरूपभावना	१०००
७९	प्रवचन सुधा (भाग-३)	१०००
८०	प्रवचन सुधा (भाग-४)	१०००
८१	कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन भाग-१	१०००
८२	कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन भाग-२	१०००
८३	सुविधि दर्शन (हिन्दी)	१०००
८४	प्रवचन सुधा (भाग-५)	१०००
८५	द्रव्यसंग्रह प्रवचन (भाग-१)	१०००
८६	द्रव्यसंग्रह प्रवचन (भाग-२)	१०००
८७	वचनामृत रहस्य (हिन्दी)	१०००
८८	प्रवचन सुधा (भाग-६)	१०००
८९	राज हृदय (भाग-१)	१५००
९०	राज हृदय (भाग-२)	१५००
९१	अध्यात्मसुधा (भाग-१)	१०००
९२	अध्यात्मसुधा (भाग-२)	१०००
९३	गुरु गिरा गौरव (भाग-१)	१०००

९४	अध्यात्म सुधा (भाग-३)	१०००
९५	प्रवचन सुधा (भाग-७)	७५०
९६	प्रवचन सुधा (भाग-८)	७५०
९७	राज हृदय (भाग-३)	७५०
९८	मुक्तिनो मार्ग (गुजराती(	१०००
९९	प्रवचन नवनीत (भाग-३)	१०००
१००	प्रवचन नवनीत (भाग-४)	१०००
१०१	प्रवचन सुधा (भाग-९)	७५०
१०२	गुरु गिरा गौरव (भाग-२)	७५०
१०३	प्रवचन सुधा (भाग-२) हिन्दी	१०००
१०४	प्रवचन सुधा (भाग-१०) (गुजराती)	७५०
१०५	प्रवचन सुधा (भाग-११) (गुजराती)	७५०
१०६	धन्य आराधक (गुजराती)	७५०

पाठकों के लिये